दिव्य प्रकाश दुबे
के राइटर्स रूम से

गुड्डू चौपाटी

साधना जैन

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

दिव्य प्रकाश दुबे
के राइटर्स रूम से

गुड्डू चौपाटी

साधना जैन

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

जुहू चौपाटी
(उपन्यास)

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

जुहू चौपाटी

साधना जैन

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

ISBN : 978-81-948443-6-5
प्रकाशकः
हिंद युग्म
सी-31, सेक्टर-20, नोएडा (उ.प्र.)-201301
फ़ोन- +91-120-4374046
मुद्रक ः थॉमसन प्रेस, दिल्ली
आवरण फोटो : अब्दर रहमानी हाज़िर
कला-निर्देशन ः विजेन्द्र एस विज
पहला संस्करण ः 2021
मूल्य ः ₹150
© साधना जैन
Juhu Chowpatty
A novel by Sadhna Jain
Published By
Hind Yugm
C-31, Sector-20, Noida (UP)-201301
Phone : +91-120-4374046
Email : sampadak@hindyugm.com
Website : www.hindyugm.com
First Edition : 2021
Price : ₹150

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मम्मी-पापा के लिए,
जिनका होना मेरे लिए ज़रूरी है।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

दो से ज़्यादा शब्द

हम सभी पर किसी न किसी ने 'पहली' बार भरोसा किया था। जब मैंने अपना राइटर्स रूम को बनाने का फ़ैसला किया तो जो सबसे पहला ख़याल मेरे मन में आया कि मुझ पर ऐसे बहुत लोगों का उधार है जिन्होंने मुझ पर पहली बार भरोसा किया था। उस उधार को चुकाने का बस एक ही तरीक़ा था कि मैं कुछ ऐसे लोगों पर भरोसा करूँ जो मुझसे बेहतर हों और जिनके अंदर कहानी सुनाने की भूख मुझसे ज़्यादा हो।

मेरे राइटर्स रूम प्रोजेक्ट में पहला प्रोजेक्ट 'दिल लोकल' था जो Audible पर आ चुका है। मेरे इस राइटर्स रूम में विकसित हुए कुछ ऑडियो प्रोजेक्ट, वेब सीरीज़ आने वाले समय में आपके सामने होंगे।

मेरी कोशिश यही रही है कि हर बार नयी तरह से कहानी को पेश किया जाए। कहानी एक दम नए कलेवर में हो। ऐसी कहानियाँ हों जिनको लिखने में, लिखवाने में, मेंटर करने में मुझे घबराहट हो। ठीक वैसे ही जैसे पहली किताब के आने से पहले घबराहट होती है।

मैं जब छोटा था तो मुझे अपने मोहल्ले में आने वाले किसी भी मदारी के छोटे-मोटे जादू वाले करतब देखने में बहुत मज़ा आता था। मेरे बालमन को यह विश्वास था कि ये ट्रिक नहीं है, सचमुच का जादू है। मुझे अब भी जादू पर यक़ीन है। मुझे मालूम है कहानियों का असर जादू की तरह होता है।

मैंने ऐसा कई बार देखा है कि किसी लेखक से जब ये पूछो कि क्या लिखना चाहिए तो लोग जवाब देते हैं कि जो तुम्हें पता हो उसके बारे में लिखो। ये अच्छी सलाह है लेकिन मेरा मानना है कि अगर हम केवल वो लिखेंगे जिसके बारे में हमें पता है तो बहुत कम चीज़ों को लिख पाएँगे। मुझे लगता है कि हमें उन चीज़ों के बारे में भी लिखना चाहिए जो बार-बार हमारा ध्यान अपनी और खींचती हैं, हमें उकसाती हैं, बिल्कुल जादू के जैसे। ये जादू मैं अकले नहीं कर सकता था। मुझे ऐसे बहुत लोग चाहिए थे जो मेरे साथ उस जादू के होने में यक़ीन करें। क्योंकि अगर मुझे कहानी पर यक़ीन होगा तो पाठक को भी उस कहानी पर यक़ीन आकर रहेगा। कहानियाँ एक तरीक़े का भरोसा ही तो हैं कि एक दिन सब ठीक हो जाएगा। कोरोना ने पिछले एक साल में इस पूरी दुनिया को बदल दिया है। हमें पहले से ज़्यादा एक-दूसरे पर भरोसा करने की ज़रूरत है।

साधना जैन की यह पहली किताब है। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले समय में साधना और भी बेहतर लिखती रहेंगी। आपको किताब अच्छी-बुरी जैसी भी लगे, ज़रूर बताएँ।

आपमें से बहुत लोगों के मन में यह सवाल होगा कि इस राइटर्स रूम का हिस्सा कैसे बनें। उस विषय में जानकारी मैं समय आने पर दूँगा। फ़िलहाल तो बस इतना ही कह सकता हूँ कि मेरे राइटर्स रूम में उन लोगों के लिए हमेशा जगह खुली है जिनको कहानियों में यक़ीन है, जिनको इस बात का भरोसा है कि कहानियाँ दुनिया बदल सकती हैं।

With love, Luck & Light.

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

दिव्य प्रकाश दुबे
दिसंबर 2020, मुंबई
www.divyaprakash.in
shrewithdp@gmail.com

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

पाठक के नाम चिट्ठी

प्रिय पाठक,

यह हमारे बीच होने वाला किसी भी तरीक़े का पहला संवाद है। और यही आशा है कि ऐसे बहुत से संवाद हमारे बीच भविष्य में बने रहें। आप से दो बातें करनी थीं, तो सोचा क्यों न आपको एक चिट्ठी लिखी जाए।

कुछ लोगों का सपना ही लेखक बनना होता है। उनकी हर किताब एक सोचा-समझा विचार होती है। लेकिन मेरा ऐसा कोई सपना नहीं था। बस ऐसे ही एक दिन मेरे एक ख़याल में एक लड़की की तस्वीर उभरी जो समंदर के किनारे खड़ी डूबता हुआ सूरज देख रही थी। फिर इस ख़याल ने धीरे-धीरे एक कहानी का आकार ले लिया। इस किताब को लिखते हुए मुझे बेचैनी तो कई बार महसूस हुई पर किसी भी अनचाही घबराहट से मेरा वास्ता कभी नहीं पड़ा। मगर जैसे-जैसे इस किताब की आप तक पहुँचने के बीच की दूरी कम होती गई, मेरी घबराहट का ग्राफ़ भी धीरे-धीरे ऊँचाई छूने लगा। इस बार यह सब जाना-पहचाना था।

सालों से एक लंबी बीमारी से लड़ते-लड़ते मेरा घर से बाहर की दुनिया से नाता एक तरह से टूट ही गया है। अब मुझे कहीं भी भीड़ में जाते हुए या अजनबी चेहरों से आमना-सामना करते हुए एक अजीब-सा डर लगता है। घबराहट होती है। अपनी कमी को दूसरों की आँखों में तरस या निराशा के रूप में देखने के ख़ौफ़ ने मुझे काफ़ी हद तक ख़ुद में ही सीमित कर दिया है। इसलिए जब इस किताब के पब्लिश होने का समय नज़दीक आया तो यही ख़ौफ़ मुझे हर पल खाने लगा। मुझे यही लगता जैसे यह किताब नहीं, मैं ख़ुद को दुनिया के सामने ला रही हूँ। शायद पहली किताब के वक़्त उसे लिखने वाले की घबराहट उसकी किसी कमज़ोरी का ही आईना होती है।

एक किताब लिख लेने भर से कोई लेखक नहीं बन जाता। दुनिया भले ही आपको लेखक बुलाने लगे, मगर ख़ुद को लेखक कहने तक का सफ़र बहुत लंबा होता है। मैं नहीं जानती इस दूरी को मैं कभी तय कर पाऊँगी या नहीं, पर इतना ज़रूर जानती हूँ कि जब मैंने शुरुआत कर ही ली है तो अब पीछे मुड़कर देखना कोई विकल्प नहीं रह जाता।

अब किताब आपके हाथों में है। अच्छी या बुरी जैसी भी लगे आप लिखकर ज़रूर बताएँ। मेरी बीमारी की जानकारी को अपनी निष्पक्षता पर धुंध की तरह न जमने दें। यक़ीन मानिए मैं मानसिक रूप से बहुत मज़बूत हूँ। नये लोगों से न मिल पाने का डर मात्र मेरी एक कमज़ोरी है। शायद लिखते रहना मेरी इस कमज़ोरी की दवा बन जाए।

जाते-जाते बस इतना ही कि आप इसे पढ़ें तो एक काल्पनिक कहानी मानकर ही पढ़ें। इस किताब का असल दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है। आजकल दुनिया में इतना कुछ हो रहा है और उसके बारे में लोग सोशल मीडिया पर इतना कुछ लिख रहे हैं कि लगता है कि इस दुनिया को काल्पनिक कहानियों की बहुत ज़रूरत है ताकि कुछ देर के लिए ही सही अपनी असल ज़िंदगी से भागकर उनके संसार में सुकून खोजा जा सके।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

साधना जैन
jainsadhna22@gmail.com
21 Nov, 2020

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

बांद्रा

दुनिया से तो भागा जा सकता है, ख़ुद से नहीं। शाम के 4:30 बजे के आसपास की बात है। एक लड़की बांद्रा स्थित अपने अपार्टमेंट से सफ़ेद रंग की नाइटी पहने हुए निकली और बिना रुके बस बेतहाशा-सी भागी जा रही है। जिस दिशा में वह जा रही है वह रास्ता जुहू चौपाटी की तरफ़ जाता है। लड़की की हालत देखकर ऐसा लग रहा है जैसे कि कोई बहुत ही भयानक-सी चीज़ उसने देख ली हो, जिससे वह बहुत दूर चली जाना चाहती हो।

दूर कहीं टीवी पर...

अभी-अभी ख़बर आ रही है कि मशहूर अभिनेत्री मीरा अपने ही घर में मृत पाई गई हैं। उनकी मौत की वजह क्या है, यह अभी ठीक से कुछ कहा नहीं जा सकता। यह ख़बर सचमुच चौंका देने वाली है। ग़ौरतलब है कि उनकी उम्र अभी सिर्फ़ चालीस साल थी...

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

डूबती शाम

कई बार हम ऐसा कुछ कर जाते हैं जिसे करने के बाद हमें ख़ुद हैरानी होती है। कुछ ऐसा जो हम कब का करना छोड़ चुके होते हैं या वह हमने अपनी ज़िंदगी में कभी किया ही नहीं होता। फिर अचानक ऐसा कुछ घट जाता है जिसके बाद हम वह काम इस तरह से कर जाते हैं, मानो ये प्यास लगने पर पानी पीने जैसी आम बात हो। मैं भी यहाँ आना सालों पहले छोड़ चुकी थी। लेकिन मैं आज यहाँ ऐसे आ गई जैसे आदमी हर शाम थका-हारा लौटकर घर जाता है। मैंने कभी यहाँ दोबारा आने का सोचा नहीं था। मुंबई का ये जुहू चौपाटी और इससे लगता ये गहरा विशाल समुद्र। आज सिर्फ़ यही एक हादसा मेरे साथ नहीं हुआ। आज डूबता हुआ सूरज भी मुझे बहुत अपना-सा लग रहा है। और ये भी मेरे लिए किसी हादसे से कम नहीं। पहले मैं जब भी इसे देखती थी एक अजीब-सा ख़ालीपन मेरे मन में उतर जाता था। अजीब इसलिए कि यह ऐसा ख़ालीपन नहीं था जो किसी के न होने पर महसूस होता है। या जो हमारी किसी बहुत प्यारी चीज़ के टूट जाने पर या जो अपने घर से बहुत दिनों तक दूर रहने पर हमारे अंदर घर कर लेता है। ये ऐसा ख़ालीपन था जो तब महसूस होता है जब हमें लगता है कि हमारी ज़िंदगी में सब सही है। हम ख़ुश हैं। लेकिन आज इसे देखकर कोई ख़ालीपन नहीं, कोई उदासी नहीं और न ही कोई सवाल है मन में। आज जैसे हम दोनों ही समझ रहे हैं कि हमारा मिलना पहले से ही तय था। अक्सर सबसे ज़्यादा सुकून हमें वहीं मिलता है जहाँ से हम बहुत दूर भाग जाना चाहते हैं।

इससे दूर रहने की एक और वजह थी। मुझे कोई भी जाती हुई चीज़ अच्छी नहीं लगती थी। किसी को भी जाते हुए देखकर मेरा मन बहुत उदास हो जाता है। साथ ही एक अजीब-सी बेचैनी भी होने लगती है, क्योंकि जब भी मैं किसी को जाते हुए देखती हूँ तो मेरे मन में यही ख़याल आता कि कहीं ये हमारी आख़िरी मुलाक़ात तो नहीं? अगली मुलाक़ात से पहले मुझे कुछ हो गया तो? या फिर उसे कुछ हो गया तो? या फिर कहीं कुछ ऐसा घट गया जिसकी वजह से हम एक-दूसरे से मिलना ही न चाहें तो? या फिर हमारी अगली मुलाक़ात तक इतना वक़्त बीत चुका हो कि हम इतना बदल जाएँ कि दोबारा से शुरू करना मुमकिन ही न हो तो? हम हर पल में नये होते रहते हैं। हमारी सोच, हमारे विचार, हमारी भावनाएँ, हमारी पसंद सब वक़्त के साथ बदल जाते हैं। और ये बदलाव पलक झपकते ही नहीं हो जाता। ये प्रक्रिया हर सेकंड चालू रहती है जिसका हमें पता भी नहीं चलता। और एक दिन हम पाते हैं हम वह रहे ही नहीं जो कल थे। इस बात का पता हमें तब चलता है जब हम अपने बीते हुए कल से टकराते हैं और वह कल हमें अजनबी-सा लगने लगता है। जैसे हम उससे आज पहली बार मिल रहे हों। हमारा वर्तमान हमारे अतीत का अपग्रेड वर्ज़न ही तो है। हम चाहें भी तो अपने ओल्डसेल्फ़ में वापस नहीं जा सकते। जिस तरह मुँह से निकले हुए हमारे शब्द पराए हो जाते हैं, उसी तरह हमारा जिया हुआ कल हमारे आज से अजनबी होता जाता है। ये सब मैंने कहीं पढ़ा था। अब याद नहीं कहाँ पढ़ा था। इस बात को मैं सिर्फ़ इसलिए नहीं मानती क्योंकि इसे मैंने कहीं पढ़ा था। इस

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

बात का अनुभव मैंने अपनी अब तक कुल-मिलाकर गुज़ारी चालीस साल की ज़िंदगी में कई बार किया है। मेरी ज़िंदगी को छोड़कर अब तक बहुत से लोग जा चुके हैं। इसलिए मैंने लोगों को अपनी आदत ही बनाना छोड़ दिया था ताकि वो जाएँ भी तो मैं उनकी यादों में क़ैद होकर ख़ुद को न खो दूँ।

मैं किताबें बहुत पढ़ती हूँ। लेकिन मेरी कोई पसंदीदा किताब नहीं है। वैसे पसंदीदा तो मेरा कुछ भी नहीं है। मेरा ये मानना है कि जैसे ही हमें कोई या कुछ बहुत पसंद आने लगता है उसके साथ हम अनजाने ही एक अनाम-सा रिश्ता बना लेते हैं। रिश्ते चाहे जैसे भी हों, वह हमें बाँधते ही हैं। रिश्ता बनते ही हमें उस कोई या कुछ के खोने का डर सताने लगता है। ये डर हमें चैन से जीने भी नहीं देता। हमारे जीने की आज़ादी उस डर में क़ैद होकर रह जाती है। फिर धीरे-धीरे हमें उस आज़ादी की इच्छा से भी डर लगने लगता है, क्योंकि हमें अपनी पसंद से जुड़े रहने की इतनी आदत हो जाती है कि उससे अलग हम अपनी ज़िंदगी को सोच भी नहीं पाते हैं। दुनिया ऐसे ही लोगों से भरी पड़ी है। शायद रिश्ते बचे भी ऐसे ही लोगों की वजह से है। इन्हीं लोगों की वजह से शायद अब तक दुनिया में प्यार, दोस्ती, और परिवार जैसे शब्द अपना वजूद बनाए हुए हैं। वह अलग बात है उनके मायने उन्होंने अपने हिसाब से एडजस्ट कर लिए है। मेरे लिए किसी भी भावना को नाम देने का मतलब है उन्हें ख़ुद को नियंत्रण करने की पावर थाली में सजाकर दे देना। मुझे तो अपनी आज़ादी बहुत पसंद है।

मैं भी क्या सोचते-सोचते क्या ही सोचने लगी? कैसे हम कुछ सोचते-सोचते कुछ और ही सोचने लगते हैं? इसीलिए शायद अँग्रेज़ी में इस तरह के सोचने को Train of Thoughts कहा जाता है। मुझे सोचना पसंद है, ठीक वैसे ही जैसे मुझे सफ़र में रहना पसंद है। सोचना भी तो एक सफ़र जैसा ही होता है। इस सफ़र में जाने कितनी नयी सोच हमारी हमसफ़र बनती हैं, फिर उस सफ़र में ही बिछड़ भी जाती हैं और हम फिर से अपने सफ़र पर चल पड़ते हैं।

आज समुद्र कितना शांत है! बिलकुल मेरे मन के विपरीत। एक लहर भी नहीं जो किनारे के साथ छेड़खानी कर रही हो। किनारा भी कैसे बुझा-बुझा नज़र आ रहा है। हालाँकि यहाँ बहुत से लोग हैं, लेकिन किनारे को तो जैसे सिर्फ़ लहरों का ही इंतज़ार है। किनारे को भी तो लहर की आदत-सी हो गई होगी। इसीलिए मैं ख़ुद को किसी भी आदत की आदी नहीं होने देती। एक भी दिन आदत के अनुसार न गुज़रे तो मन भी बुझ जाता है। और बुझी हुई चीज़ें सिर्फ़ अँधेरा करती हैं।

मेरे यहाँ न आने की वजह मेरी इस जगह से या समुद्र से कोई नाराज़गी नहीं थी। बल्कि पूरे शहर में यही एक जगह थी जो मुझे मेरे परिवार-सा सुख देती थी। ऐसा इसलिए नहीं होता था क्योंकि यहाँ समुद्र है। मेरे लिए ये किसी भी दूसरी जगह की तरह ही है। इसके बारे में जाने कितने लेखकों ने अपनी कहानियों में, शायरों ने अपनी शायरी में और फ़िल्मकारों ने अपनी फ़िल्मों में कितना कुछ कहा है। उन्होंने इंसान की भावनाओं को इसके साथ इस तरह जोड़ा है कि वह अपनी भावनाओं को इससे अलग देख ही नहीं पाता। मैं ये नहीं कहती उन्होंने जो कुछ लिखा या दिखाया सब झूठ है। होता होगा हल्का

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मन यहाँ आकर रोने से। लगती होंगी छोटी परेशानियाँ इसे देखकर। लगता होगा रूमानी यहाँ हाथ में हाथ डालकर टहलने से या लहरों के साथ खेलते हुए एक-दूसरे को छूने में। लेकिन क्या ये हम सही में महसूस करते हैं? या सिर्फ़ हमें ऐसा लगता है कि हमें ऐसा महसूस हो रहा है, क्योंकि हमने किसी फ़लानी किताब में पढ़ा था या किसी फ़लानी फ़िल्म में देखा था। या जैसे आजकल हर चीज़ रेडीमेड मिलती है वैसे ही ये सोच भी हम रेडीमेड ले आए हैं जिसे ख़ासकर हमारे लिए ही तैयार किया जाता है, ताकि हम ख़ुद कुछ सोच ही न पाएँ। और ये सिर्फ़ समुद्र के बारे में ही नहीं है। दुनिया की दुनियादारी आजकल चल ही ऐसी रही है। वह हर चीज़ हमारे आगे रेडीमेड तैयार कर देते हैं ताकि हम ख़ुद सोचना बंद कर दें और धीरे-धीरे उनकी सोच के ग़ुलाम होते जाएँ और वह हम पर राज कर सकें।

न ही मुझे समुद्र से कोई बैर है न ही मुझे लोगों के यहाँ आकर बैठने, सुस्ताने या टहलने से कोई दिक़्क़त। बस लोग कहीं भी जाए पर अपनी ही कोई वजह ढूँढ़कर जाए ताकि उन्हें उस जगह से वह मिल सके जिस वजह से वह उस जगह जाना चाहते थे।

मैं यहाँ इसलिए आती थी क्योंकि ये जगह मुझे मेरे बचपन के घर जैसा महसूस करवाती थी। वैसे तो मैं शिमला की गोद में पली-बढ़ी हूँ। पर एक बार मैं अपने माँ-बाबा और दादी के साथ मुंबई घूमने आई थी। हमने एक पूरा दिन इस जुहू चौपाटी पर हँसते-खेलते साथ गुज़ारा था। वह आख़िरी बार था जब हम चारों एक साथ ख़ुश थे। मैं जब भी इस शहर में ख़ुद को अकेला पाती थी यहाँ आ जाती। यहाँ आकर मैं कुछ देर के लिए सब कुछ भूल जाती। मुझे याद रहती तो बस वह याद जब इस जगह पर हम चारों साथ थे। हमारी वह याद भी तो इस जगह की याद्दाश्त का एक हिस्सा होगी? शायद ऐसा हिस्सा जिसे इसने यहीं अपनी इस रेत में, यहाँ चलने वाली हवा में, समुद्र के पानी में इस तरह घोला कि वह भी रेत, हवा, पानी हो गया। जितना चैन मुझे यहाँ आकर मिलता उतनी ही मेरी बेचैनी भी बढ़ने लगती थी। क्योंकि इस जगह के हाथों मैं अपने चैन और सुकून को महसूस करने की आज़ादी हार चुकी थी। यह जगह मेरे ख़ुश रहने के अधिकार को नियंत्रित करने लगी थी, जिसे सोचकर मेरा दिल टूटता था। मेरे साथ कुछ भी अच्छा या बुरा होता, मेरा मन यहाँ आने को करता। इसीलिए मैंने यहाँ आना ही बंद कर दिया था।

लेकिन हमेशा वैसा होता ही कहाँ है जैसा हम सोचते हैं! अक्सर जो हम चाहते हैं और जो होना चाहिए और जो होता है वह कभी एक-सा नहीं होता। जितना दूर हम किसी चीज़ से जाते हैं उतने ही नज़दीक हम उस चीज़ के होते हैं।

मैं इस जगह के बारे में कभी सोचना भी नहीं चाहती थी फिर भी मैं आज यहाँ पर हूँ। मेरी ज़िंदगी में आज ऐसा कुछ हुआ जिसके बाद मुझे मेरे अपनों की याद सताने लगी। मेरा मन बस यहाँ आकर रोने को कर रहा था। वैसे मेरी कोशिश यही रहती थी कि मैं किसी भी बात पर न रोऊँ। वह इसलिए क्योंकि रोना मुझे अच्छा लगता था। रोना इस दुनिया की सबसे ज़रूरी क्रिया है। रोए बिना ख़ुद को झेला नहीं जा सकता। रोना मन के अँधेरे को दीये दिखाने जैसा है। मैं नहीं चाहती थी कि मेरी एक परेशानी का हल मुझे दूसरी परेशानी बनकर मिले। रोने से मुझे अच्छा महसूस तो होता पर रोना मेरी आदत बन जाता। परंतु

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

आज बात अलग थी। आज मेरे अपने लिए बनाए गए सब नियम-क़ानून ने छुट्टी ले ली थी। आज मैंने ख़ुद को रोने से नहीं रोका। ये तीसरा हादसा था जो आज मेरे साथ हुआ।

क्या कोई जाती हुई चीज़ भी इतनी ख़ूबसूरत लग सकती है, आसमान की तरफ़ देखते हुए मेरे मन में यही ख़याल आ रहा है। क्या मेरा भी इस तरह दुनिया से चले जाना दुनिया को ख़ूबसूरत लगा होगा? कहते हैं डूबता सूरज तभी अच्छा लगता है जब आप उदास होते हैं। क्योंकि वह आपकी मनोदशा को प्रतिबिंबित करता है, जैसे एक प्रिज़्म सूरज की रौशनी को करता है। अगर देखा जाए डूबना और मरना एक-दूसरे के पर्यायवाची ही तो हैं। सूरज डूब जाता है। इंसान मर जाता है। आज हम दोनों की क़िस्मत एक हो गई है। दोनों को ही इस दुनिया को छोड़कर जाना है। जब दो लोगों के दुख की परछाईं दो जुड़वा बच्चों-सी दिखने लगती है तो उनके बीच किसी भी तरह के मौखिक संवाद की कोई ज़रूरत रह ही नहीं जाती है। इसलिए इसे देखते हुए मुझे ऐसा लग रहा है जैसे ये मुझसे कह रहा हो कि तुम अकेली नहीं हो। मैं तुम जैसा ही तो हूँ। और इससे मिलने वाली यही तसल्ली मुझे हिम्मत दे रही है। हिम्मत इस बात को स्वीकार करने की कि मैं अब ज़िंदा नहीं। मैं मर चुकी हूँ। ये कोई प्राकृतिक मौत नहीं थी। न ही मैं आत्महत्या कर सकती हूँ। क्या मेरा मर्डर हुआ है? अगर हाँ तो किसने किया और कैसे किया? मुझे कुछ याद नहीं आ रहा। शायद इसी सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए मैं अब तक इस दुनिया और उस दुनिया के बीच एक पेंडुलम की तरह झूल रही हूँ। जब तक मैं वह जवाब ढूँढ़ नहीं लेती, मैं इस दुनिया से पूरी तरह विदा नहीं लूँगी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मेरी मौत

पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि मैं मर चुकी हूँ। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अभी नींद से जागी हूँ। क्योंकि जब मैं जागी तो मैं अपने बेडरूम में ही थी। बेडरूम में सब कुछ वैसा ही था जैसे रोज़ होता है। कोई भी चीज़ इधर से उधर नहीं हुई थी। कमरे के ठीक बीच में मेरा डबल बेड लगा हुआ था। बेड के दोनों तरफ़ कॉर्नर टेबल के ऊपर रखे लैंप आज नहीं जल रहे थे। हाँ बस यही एक चीज़ थी जो रोज़ की तरह नहीं थी। मैं कभी अँधेरा करके नहीं सोती थी, क्योंकि अँधेरा करते ही मुझे झटपट नींद आ जाती है। और मैं हर उस चीज़ से दूर भागती थी जो मेरी ज़िंदगी को आसान कर देती थी। चूँकि मैं हमेशा बेड के बाईं तरफ़ सोती थी इसीलिए मेरी सारी ज़रूरत की चीज़ें बाईं वाली कॉर्नर टेबल पर रखी होती थी जैसे पानी, मोबाइल, लिप बाम और कभी कोई किताब जो मैं उस वक़्त पढ़ रही होती थी। जैसे आज वहाँ पर Virginia Woolf की 'A Room Of One's Own' रखी हुई थी। बेड के पीछे वाली दीवार पर मेरा ख़ुद का बड़ा-सा पोस्टर लगा हुआ था। वह दीवार आइवरी कलर की थी। बेड के ठीक सामने वाली दीवार पर मैंने जंगल मुराल वाला वॉलपेपर इंस्टॉल करवाया था। जंगल ही ऐसी एक जगह थी जहाँ मैं आजतक नहीं गई थी। इसलिए मुझे नहीं पता था मुझे वहाँ जाकर अच्छा लगता या बुरा। इसके साथ मेरी किसी भी तरह की कोई भावनाएँ जुड़ी हुई नहीं थीं। इसीलिए मैंने जंगल वाला ही वॉलपेपर चुना। ताकि जब मैं सुबह जागूँ और मेरी नज़र इस पर पड़े तो मुझे कुछ नया जानने की उत्सुकता हो। दिन की शुरुआत कुछ नया महसूस करने की इच्छा से हो, न कि वही कुछ पुराना जिया हुआ याद करके। उसी दीवार के बीच एक घड़ी लगी हुई थी। बेड की दाईं तरफ़ वाली दीवार के पास दो बड़ी कंफ़र्टेबल सोफ़ा चेयर रखी हुई थी और बेड की बाईं तरफ़ मेरा वॉशरूम था, जिसके साथ ही मेरा ड्रेसिंग रूम भी जुड़ा हुआ था। मेरे कमरे में बालकनी नहीं थी। बालकनी वाले कमरे को मैंने अपनी स्टडी-कम-लाइब्रेरी बना दिया था। जब भी मैं घर में होती थी तो मेरा अधिकतर समय वहीं गुज़रता था। मेरा बेडरूम मेरे फ़ाइव बेडरूम लक्ज़री अपार्टमेंट का एक हिस्सा भर था। इतने बड़े अपार्टमेंट में मैं अकेले ही रहती थी, अगर हाउसकीपिंग स्टाफ़ को छोड़ दिया जाए तो। उन्हें मिलाकर हम चार लोग इस बड़े से घर में रहते थे। एक मेरा कुक था राजीव, जिसकी उम्र बीस-बाईस साल से ज़्यादा नहीं थी और वह खाना भी एक प्रोफ़ेशनल कुक की तरह नहीं बनाता था। पर ठीक वैसा ही बनाता था जैसा स्वाद मुझे चाहिए था। दूसरी थी रानी, जिसके पास घर की सफ़ाई के साथ-साथ मेरे कपड़ों की देखरेख का भी काम था। कौन-सा कपड़ा ड्राइक्लीनिंग के लिए जाना है और कौन-सा घर में ही धोना है यह सब वही देखती थी। वह भी पच्चीस से ज़्यादा नहीं होगी। तीसरी थी राज़ी, मेरी हम उम्र और मेरे सबसे क़रीब भी। हालाँकि यह बात मैंने अपने जीते जी कभी नहीं मानी थी, क्योंकि अगर मान लेती तो मुझे उसे ख़ुद से दूर करना पड़ता जो मैं करना नहीं चाहती थी। इसलिए मैं लगातार ख़ुद से झूठ बोलती रहती कि वह भी औरों की ही तरह मेरे लिए सिर्फ़ काम करती है। अब थोड़ी-सी बेईमानी की अनुमति तो

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मुझे भी मिल सकती थी। आख़िर थी तो मैं इंसान ही। राज़ी ही थी जो मुझे सबसे ज़्यादा समझती थी। मुझे कब क्या चाहिए, मेरे बोलने से पहले मेरे सामने होता था। पूरे घर की देखरेख उसके हाथों में ही था।

अपने बारे में यूँ पास्ट टेंस में बात करना भी एक नया-सा ही अनुभव है। थोड़ा अजीब है लेकिन ये सोचकर ही मुझे रोमांच महसूस हो रहा है कि ये जो मैं अभी महसूस कर रही हूँ वह दुनिया का कोई भी ज़िंदा इंसान महसूस नहीं कर सकता। इसके लिए उसे मरना होगा और मरने के बाद मेरी तरह सोचना जो शायद उसके लिए मुश्किल भी हो। क्योंकि जो काम उसने जीते जी नहीं किया और जो करना उसे आता ही नहीं, वह मरने के बाद उस काम को कैसे करेगा? कितना मज़ा आ रहा है मुझे ये सब सोच के। मैं सही में बहुत दुष्ट हूँ।

जब मैं नींद से जागी तो शाम के चार बज रहे थे। रात को पार्टी से आते-आते लगभग सुबह ही हो गई थी। वैसे तो मैं ड्रिंक नहीं करती थी। शायद कल किसी ने मेरी ड्रिंक के साथ कोई छेड़छाड़ कर दी थी, जिस वजह से मैं अब तक सो रही थी। उठते ही आदतन मैं वॉशरूम की ओर जाने लगी तो पीछे से मुझे राज़ी के चीख़ने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने मुड़कर देखा तो राज़ी बेड की तरफ़ देख रही थी। मैंने बेड की तरफ़ नज़र घुमाई तो ख़ुद को बेड पर सोता हुआ पाया। या यूँ कहूँ कि मरा हुआ पाया। मेरा पूरा बदन नीला पड़ा हुआ था। शायद मुझे ज़हर दिया गया था। राज़ी की चीख़ सुनकर राजीव और रानी भी मेरे बेडरूम में आ गए और मुझे उस हालत में देखकर उनकी भी चीख़ निकल गई। मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था, सिवाय इसके कि मुझे यहाँ से किसी ऐसी जगह पर जाना है जहाँ मुझे घर जैसा सुकून मिले। और मैं वहाँ से भागकर यहाँ आ गई। अब तक तो पुलिस भी वहाँ पहुँच गई होगी। मेरी बॉडी को पोस्टमार्टम के लिए भी भेज दिया होगा। पुलिस के शक के घेरे में सबसे पहले राजीव, रानी और राज़ी ही होंगे। ऐसे एलीट मर्डर के मामलों में घर के नौकर ही सबसे पहले शक के घेरे में लिए जाते हैं।

कुछ ही देर में शाम के अख़बारों में मेरे मरने की ख़बर सनसनी मचाने ही वाली होगी। टीवी पर तो सब न्यूज़ चैनल अब तक ब्रेकिंग न्यूज़ के साथ ये न्यूज़ ब्रेक भी कर चुके होंगे। सोशल मीडिया पर शोक भरे संदेशों की बाढ़ आ गई होगी। राजनीति और फ़िल्म जगत की तमाम हस्तियों ने भी इस ख़बर के साथ अपना स्टेटस अपडेट करके अपनी ज़िम्मेदारी निभा ली होगी। आख़िर मर्डर हुआ भी तो एक मशहूर पूर्व फ़िल्म अभिनेत्री का था, जिसने बॉलीवुड को अपने पंद्रह साल के करियर में कई शानदार फ़िल्में दी थीं। और जो अब फ़िल्मों में अपनी क़िस्मत आज़माने के बाद पॉलिटिक्स की दुनिया में क़दम रखने जा रही थी। जीते जी तो मैंने कभी मीडिया को मुँह नहीं लगाया था, पर अब इन्हें कौन रोकने वाला था! अब ये क्वेश्चन मार्क के साथ मेरे बारे में कुछ भी बकवास कहेंगे, कुछ भी अनाप-शनाप लिखेंगे, क्योंकि इन्हें पता है अब इनके ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही करने वाला नहीं है। असली पोस्टमार्टम तो आदमी का ये मीडिया ही करती है। और जो थोड़ा-सा मशहूर हो उसे तो ये पोस्टमार्टम करने के बाद भी नहीं छोड़ती।

अब कुछ दिन तक हर किसी की ज़ुबान पर सिर्फ़ मीरा का ही नाम रहने वाला है। जिसकी ज़िंदगी का सफ़र 7 जून 1979 को शिमला में शुरू हुआ था और 28 जुलाई 2019

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

को मुंबई में ख़त्म हो गया।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

नामकरण

जब भी कहीं मैं अपना पूरा नाम मीरा सहगल लिखा देखती थी तो मुझे ऐसे लगता था यह किसी एक बंदे का नाम नहीं है बल्कि दो लोगों का नाम है। वो भी दो ऐसे लोग जिनको ज़बरदस्ती एक साथ इसलिए रखा गया ताकि उन दोनों के बीच उनका रिश्ता साबित हो सके। एक लड़की के लिए उसका पहला नाम ही उसकी पहचान होती है। क्योंकि उसके लिए उसके बाप का दिया सरनेम तब तक ही रहता है जब तक उसकी शादी नहीं हो जाती। शादी के बाद पति का सरनेम उसके नाम के साथ जुड़ जाता है। जैसे लड़की न हुई कोई संपत्ति हो गई। बाप ने पैदा किया अपना नाम दे दिया। पति ने पत्नी बनाया तो उसने अपना नाम दे दिया। जब मैंने होश संभाला और चीज़ों को समझना शुरू किया, तब मेरे मन में यह सवाल बार-बार उठता था कि सिर्फ़ एक लड़की ही अपना सरनेम क्यों बदले। या फिर कोई भी क्यों बदले। ज़रूरत क्या है इसकी। और ये सिर्फ़ हमारे देश में ही नहीं पूरी दुनिया में होता आया है। कुछ लड़कियाँ जो अपने सोच-विचार रखने के लिए आज़ाद हो जाती हैं और जिन्हें फ़ेमिनिज़्म का थोड़ा-सा मतलब समझ आने लगता है वह लड़कों को इसका जवाब अपने पति के साथ-साथ अपने बाप का सरनेम भी अपने नाम के साथ लगाकर देती हैं। पर ऐसा करते हुए वह भूल जाती हैं कि अब उनका नाम देखकर ऐसा लग रहा होता है जैसे अब वह एक नहीं दो लोगों की संपत्ति है। और जो लड़कियाँ थोड़ा और ज़्यादा मतलब समझने लगती है वह बाप और पति की पहचान छोड़कर अपनी माँ का पहला नाम अपने नाम के साथ लगाने लगती हैं। मेरा पूछना है कि किसी का भी नाम अपने नाम के साथ जोड़ना ही क्यों? क्या उसके बिना तुम अपने बाप की बेटी नहीं रहोगी या अपनी पति की पत्नी? या अपनी माँ की बेटी? या तो किसी सरनेम का प्रयोग ही मत करो या फिर कोई भी कर लो क्या फ़र्क़ पड़ता है!

मैं ख़ुद को कभी फ़ेमिनिस्ट नहीं कहती थी। मुझे ख़ुद का किसी भी तरह से वर्गीकरण करना पसंद नहीं था। किसी लड़ाई के एक बड़े समूह का मुद्दा बनते ही उसे लड़ने वालों के बीच गुटबाज़ी होना शुरू हो जाती है। फिर बस यही रह जाता है कि तेरी लड़ाई मेरी लड़ाई से सफ़ेद कैसे? हर औरत की स्थिति एक जैसी नहीं होती। हर स्तर की औरत के लिए नारीवाद की परिभाषा भी अलग हो जाती है। किसी एक मुद्दे की जितनी परिभाषाएँ होती हैं उतना ही रायता फैलता है। और फिर ख़ुद औरतों के बीच में ही एक तरीक़े का गृहयुद्ध शुरू हो जाता है। जब तक औरतें आपस का भेदभाव नहीं मिटाएँगी तब तक वे ये लड़ाई नहीं जीत सकतीं। अपनी इच्छा से जीने की आज़ादी और आत्मनिर्भरता उनका हक़ है और लड़ाई भी इसी हक़ के लिए होनी चाहिए। मगर होता ये है कि या तो वह आपस में लड़ती रहती हैं या फिर मर्दों से बराबरी में लग जाती हैं। फिर लड़ते-लड़ते मर्दों की बराबरी करने के चक्कर में उनके जैसी ही बन जाती हैं। उन्हें यह याद रखना चाहिए कि उनकी यह लड़ाई मर्दों से आगे निकलने की नहीं बल्कि ख़ुद को आगे बढ़ाने के लिए है। उन्हें अपना प्राकृतिक स्वभाव भूले बिना अपना हक़ लेना चाहिए। ज़रूरी नहीं जो-जो मर्द करते हों

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

वही पसंद उनकी भी हो। नारीवाद में पुरुषवाद का घुल जाना एक समय के बाद उनके के लिए ज़हर ही साबित होगा।

मैं हमेशा से अपने नाम को लेकर बड़ी ही भावुक थी। बचपन में जब भी कोई मेरा नाम पूछता था तो मैं बड़ी शान से सिर्फ़ अपना पहला नाम बताती थी। जबकि तब तक तो मुझे इस पहले और आख़िरी नाम के बीच का अंतर भी नहीं पता था। और जब भी मुझे कोई पूरा नाम बताने को कहता था तो मैं कहती बाबा से पूछ लो या माँ से पूछ लो। मैं उन्हें सिर्फ़ अपना नाम 'मीठी' ही बताती थी। मेरा नाम हमेशा से मीरा नहीं था। लेकिन मैंने अपनी पहली फ़िल्म साइन करने से पहले अपना नाम बदल दिया था। मैंने कभी फ़िल्मों में आने का नहीं सोचा था। ये मेरा सपना नहीं था। कुछ ऐसा हुआ कि अनचाहे ही मेरी राहें बॉलीवुड की ओर मुड़ गईं। और फिर मैंने अपना नाम बदलने का सोचा। क्योंकि मुझे अपने जन्म के नाम से बहुत प्यार था और मैं उस नाम से कभी उस काम के लिए नहीं जानी जाना चाहती थी, जो काम मैं कभी करना ही नहीं चाहती थी। और इस तरह मीरा नाम फ़िल्मों में मेरी पहचान बना बिना किसी सरनेम के। लोग मधुबाला की तरह ही मुझे भी सिर्फ़ मीरा कहके बुलाते थे। मैं ये तो नहीं कहती कि मैं उनकी तरह ही एक बहुत अच्छी अभिनेत्री थी। पर मुझे एक कलाकार के रूप में लोगों का प्यार उनसे कम भी नहीं मिला था।

वैसे मीरा नाम चुनने के पीछे भी एक बड़ा ही दिलचस्प क़िस्सा है। हुआ यूँ कि एक दिन मैं ड्राइव करके कहीं जा रही थी और मेरे दिमाग़ में यही चल रहा था अपना कौन-सा नाम रखा जाए। तभी रेड लाइट हो गई और एक छोटी-सी बच्ची जो आठ नौ साल की रही होगी, उसने मेरी कार की खिड़की पर दस्तक दी। उसके हाथ में कुछ फ़िल्मी पत्रिकाएँ थी। मैंने जैसे ही उससे बात करने के लिए कार की खिड़की का शीशा नीचे किया, तभी उसकी माँ ने उसे मीरा कहकर पीछे से आवाज़ लगाई। बस उसी पल मैंने सोच लिया था कि मेरा नाम अब सिर्फ़ मीरा होगा और कुछ नहीं। क्योंकि मीरा का पहला अक्षर मेरे असली नाम मीठी वाला ही था। और इस तरह मीरा में आधी मीठी हमेशा ज़िंदा रहेगी। दूसरा, मुझे यह मात्र संयोग महसूस नहीं हुआ था कि जब मैं अपने नाम के बारे में सोच रही थी तभी एक लड़की आती है, मुझे कुछ और नहीं सिर्फ़ फ़िल्मी पत्रिकाएँ बेचने की कोशिश करती है और फिर उसकी माँ उसे पीछे से उसके नाम से बुलाती है। यह मुझे एक इशारा लगा था। फिर मैंने उस दिन उस बच्ची से उसकी अनुमति के बिना उसका नाम शेयर करने के बदले उसकी सारी पत्रिकाएँ दुगने दामों पर ख़रीद ली और साथ ही अपनी हाथ की घड़ी भी उतारकर उसे दे दी। दुनिया में कुछ भी मुफ़्त नहीं मिलता। इसलिए हम जब किसी से कुछ लें तो बदले में उन्हें भी कुछ ज़रूर दे देना चाहिए। नहीं तो आगे जाकर पता नहीं कितनी बड़ी क़ीमत चुकानी पड़ जाए। वह बच्ची मीरा घड़ी लेकर बहुत ख़ुश हो गई थी और उसने मुझे लाखों दुआएँ भी दी थीं। पगली ये भी नहीं जानती थी कि जो उसने मुझे दिया है उसके बदले ये तो कुछ भी नहीं था। बाद में ड्राइव करते हुए मैं यही सोच रही थी कि अब जब कभी वह बच्ची मुझे बड़े पर्दे पर देखेगी या फिर किसी फ़िल्मी पत्रिका में और तब उसे पता चलेगा कि इसका नाम भी मीरा है, तो चाहे कुछ पल के लिए ही सही वह ख़ुश तो होगी कि मेरे नाम की इतनी बड़ी हीरोइन है। पता नहीं उसे तब तक मेरा चेहरा याद भी रहेगा या

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

नहीं? कभी-कभी मुझे ये सोचकर गिल्ट भी होता कि मैंने उसे क्यों नहीं बताया कि मैं उसका नाम शेयर करने वाली हूँ? शायद इस बात से उसे फ़र्क़ भी नहीं पड़ता। अगर पड़ता तो बस इतना कि वह जब भी मुझे देखती तो यही सोचती कि मैंने इसे अपना नाम दिया था। और मुझे यही सोचकर एक बोझ-सा महसूस होता रहता कि उसे पता है मैंने उसका नाम लिया है। फिर हम दोनों ही एक-दूसरे की सोच में लेनदार-देनदार वाला रिश्ता सारी ज़िंदगी निभाते रहते। कभी-कभी जो होता है वह अच्छा ही होता है।

बाद में मैं जब भी उस रास्ते से गुज़रती, मेरी नज़र उसे ढूँढ़ने लगती। लेकिन वह मुझे फिर कभी दिखाई नहीं दी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

अविनाश लूथरा

चौपाटी पर अचानक शोर बढ़ गया। सूरज भी पूरी तरह डूब चुका है। बस इतनी ही रौशनी बाक़ी है जितनी पूरी तरह अँधेरा होने से पहले होती है। लोग जान गए हैं मैं मर चुकी हूँ। कुछ लोग अख़बार में ख़बर पढ़ रहे हैं, तो कुछ सोशल मीडिया पर। कोई फ़ोन पर अपने किसी जानने वाले से मीरा की अचानक हुई मौत पर हैरानी जता रहा है। एक पानी-पूरी वाले ने तो मीरा की फ़िल्मों के गाने ही अपने मोबाइल पर लगा दिए। एक जवान जोड़ा तो इसी बात पर बहस रहा है कि मीरा की सबसे अच्छी फ़िल्म कौन-सी थी। दो-चार लोग तो अपने घर की तरफ़ लौट भी चुके हैं ताकि घर जाकर टीवी पर आराम से डिटेल में पता कर सकें कि आख़िर सच क्या है। जो बचे हैं वह आपस में बस इसी विचार-विमर्श में लगे हैं कि मीरा को किसने मारा। कुछ लोगों का मानना है कि शायद विपक्षी पार्टी ने मरवा दिया होगा। उन्हें डर होगा कि मीरा इतनी मशहूर है कि वह मेजौरिटी में वोट ले जा सकती थी। तो कुछ लोग कह रहे हैं कि घर के नौकरों ने ही मरवा दिया होगा। और कुछ लोग इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि मीरा आत्महत्या भी तो कर सकती है। ये सब देखकर मेरा मन फिर से रोने को कर रहा है।

अपने पंद्रह साल के फ़िल्मी करियर में मैंने बहुत से दुश्मन बनाए, लेकिन उस दुश्मनी की हद मर्डर नहीं हो सकती। वहाँ बदले की संभावना ज़रूर हो सकती थी, पर मर्डर की कहानी नहीं। वो दुश्मनी एक प्रोफ़ेशनल ईर्ष्या से ज़्यादा कुछ भी नहीं थी। बस मुझे एक ही बात की चिंता है कि अगर पुलिस को भी यही लगा कि मैंने आत्महत्या की तो क्या होगा? उनके ऐसा सोचने के पीछे एक ठोस वजह भी होगी। पिछली रात मैं जब पार्टी से लौटी तो मैं अकेली थी। मेरा ड्राइवर मुझे पार्किंग में छोड़कर घर चला गया था। जबसे मैंने फ़िल्मों से रिटायरमेंट ली थी तबसे मैंने बॉडीगार्ड रखना छोड़ दिया था। मेरे पार्किंग से अपने अपार्टमेंट पहुँचने तक की सीसीटीवी फ़ुटेज पुलिस को मिल जाएगी और इस बात का सबूत भी कि मैं अपने घर के अंदर दाख़िल होने तक सही सलामत थी। घर के अंदर भी उन्हें ऐसे कोई सबूत नहीं मिलेंगे जिससे उन्हें लगे कि किसी भी तरह की कोई ज़बरदस्ती वहाँ हुई हो। जब मैंने ख़ुद को आख़िरी बार देखा था तब मुझे मेरा शरीर नीला पड़ा हुआ तो नज़र आ रहा था लेकिन उस पर किसी भी तरह के कोई चोट के निशान नहीं थे। राज़ी, रानी और राजीव से पूछताछ करने के बाद पुलिस को उन्हें छोड़ना ही पड़ेगा क्योंकि उनके पास मुझे मारने की कोई बोलती वजह ही नहीं थी। वह तीनों मेरे साथ काफ़ी समय से थे। वो सब आज़ाद थे अपना काम अपने हिसाब से करने के लिए। मेरी किसी भी तरह की कोई दख़लअंदाज़ी नहीं थी। न ही मैं कभी उन पर किसी बात को लेकर चिल्लाती या ग़ुस्सा होती थी। वो मेरे लिए काम करके ख़ुश थे। और ऐसा भी नहीं था कि मुझे मारने के बाद उन्हें कोई फ़ायदा होता। हाँ एक शख़्स है जिस पर पुलिस का शक जा सकता है।

ये बात 2005 की है। मुझे फ़िल्मों में आए लगभग चार साल हो चुके थे। मेरी तब तक दस फ़िल्में आ चुकी थीं। जिसमें से पाँच बड़ी हिट थी और पाँच ने ठीकठाक बिज़नेस कर लिया

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

था। एक दिन मुझे अविनाश लूथरा का फ़ोन आया। वह मुझसे एक मीटिंग करना चाहता था। उसका ख़ुद का एक प्रोडक्शन हाउस था। उसकी कंपनी ने पिछले कुछ सालों में कई अच्छी फ़िल्में बॉलीवुड को दी थीं। इससे पहले हमारी मुलाक़ात एक दो बार अवॉर्ड फ़ंक्शंस में ही हुई थी। उस वक़्त उसकी उम्र चालीस के आस-पास की रही होगी। देखने में वह ताल फ़िल्म वाले अक्षय खन्ना जैसा लगता था। ऐसे तो बॉलीवुड में उसकी बहुत इज़्ज़त थी लेकिन पता नहीं ये अफ़वाह थी या सच मगर ये अक्सर सुनने में आता कि ख़ूबसूरत लड़कियाँ उसकी कमज़ोरी थीं। ख़ैर, तय समय पर मैं अपने मैनेजर के साथ उससे मिलने पहुँची। एक बड़ी-सी बिल्डिंग में एक पूरे फ़्लोर पर उसका ऑफ़िस था। उसने अपनी सेक्रेटरी से मेरे मैनेजर को बाहर बैठने को कहकर सिर्फ़ मुझे अंदर आने को कहा। अक्टूबर का महीना था। दो दिन बाद दीवाली थी। उसी दिन दिल्ली में तीन आतंकवादी हमले हुए थे। इस ख़बर की वजह से मेरा मन पहले से ही दुखी और हमलावरों के लिए ग़ुस्से से भरा हुआ था। उसके केबिन के बाहर एक पंद्रह-सोलह साल का लड़का बैठा था। मुझे देखते ही वह खिल उठा और बोला वह मेरा बहुत बड़ा वाला फ़ैन है। मैंने उसकी तरफ़ मुस्कुराकर देखा और अंदर चली गई। मुझे देखते ही अविनाश अपनी कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया। उसका ऑफ़िस उस वक़्त के हिसाब से काफ़ी मॉडर्न और वेल-ऑर्गनाइज़्ड था। उसके ऑफ़िस के इंटीरियर के हिसाब से जो एक चीज़ वहाँ फ़िट नहीं हो रही थी वह थी सारे हिंदू देवी-देवताओं की तस्वीरें, जो एक कोने में एक टेबल पर सजी हुई थीं। वैसे मुझे किसी के आस्तिक होने से कोई दिक़्क़त नहीं थी, लेकिन वह अपने बड़े से ऑफ़िस में उनको एक अलग से जगह दे सकता था। ख़ैर, मिलने की सब औपचारिकताएँ निभाने के बाद मेरी नज़र टीवी पर पड़ी। वह शायद मेरे आने से पहले दिल्ली में हुए सीरियल ब्लास्ट की ख़बरें ही देख रहा था। मेरा ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए वह बोला, "मेरा बस चले तो मैं इन आतंकवादियों को एक लाइन में खड़ा करके गोली मार दूँ।"

"अच्छा है, इंसान का सब बातों पर ज़ोर नहीं चलता। आतंकवादी मरते न मरते मगर अब तक हमें ज़रूर कोई मार चुका होता।"

"तुम्हारे सेंस ऑफ़ ह्यूमर के चर्चे तो सुने थे, आज देख भी लिया।" हँसते हुए उसने मेरे आगे पानी का गिलास बढ़ाया।

दो मिनट चुप रहने के बाद वह काम की बातों पर आ गया जिसके लिए उसने मुझे बुलाया था।

"मुझे तुम्हारा काम अच्छा लगता है। मेरी कंपनी चाहती है कि हम तुम्हें दो साल के लिए कॉन्ट्रैक्ट पर साइन कर लें। तुम क्या सोचती हो इस बारे में?"

ये कहकर वह अपनी जगह से उठकर मेरे पास आया और टेबल से सटकर खड़ा हो गया। मैंने उसे इस बारे में अपने मैनेजर से बात करने को कहा। इस पर उसने मेरे हाथ पर अपना हाथ रखकर कहा कि पहले बात हमारे बीच तो हो जाए। मैंने उसके कमरे में लगे सीसीटीवी कैमरे की तरफ़ देखा। जिसे देखकर उसने मुझसे कहा कि आज इस कमरे के सारे कैमरे उसने बंद करवा दिए हैं। उसके और मेरे बीच आज यहाँ क्या बात होगी इसका

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

किसी को पता नहीं चलेगा। तभी वह लड़का अंदर दो कप कॉफ़ी लेकर आया। जिसे देखकर अविनाश ने अपना हाथ हटा लिया और उसे घूरकर देखा। उस लड़के ने मुझे देखा और बाहर चला गया। उसके जाने के बाद अविनाश ने फिर अपनी बात शुरू की।

"तुम मुझे अच्छी लगती हो। अगर हम दोनों एक-दूसरे की ज़रूरतों को समझें तो तुम्हें कभी काम की कमी नहीं होगी।"

मैंने उससे उसकी ज़रूरत पूछी। उसने बिना किसी शर्म के मुझे उसके साथ एक महीने के लिए किसी आईलैंड पर छुट्टियाँ मनाने के लिए कहा। साथ ही ये भी साफ़ कर दिया कि ये सिर्फ़ एक बार होगा पर मुझसे उसकी कंपनी दो साल का कॉन्ट्रैक्ट साइन करेगी, जिसके अनुसार मेरी फ़िल्म चले-ना-चले वह मुझे दो साल तक उसके बैनर तले बनने वाली हर फ़िल्म में मुख्य किरदार देगी। मैंने ये सुनकर कोई जवाब नहीं दिया। मेरी नज़र टीवी पर मरे और घायल हुए लोगों की तस्वीरों पर टिक गई। तभी उसकी सेक्रेटरी ने इंटरकॉम पर संदीप मित्तल के आने की सूचना दी। संदीप मित्तल एक जाना-माना फ़िल्म पत्रकार और आलोचक है। उसने अपनी सेक्रेटरी को उसे मीटिंग रूम में बैठाने के लिए कहा। उसने मेरा ध्यान फिर से टीवी में देखकर टीवी बंद कर दिया।

"तुम चाहो तो ना कर सकती हो। पर इस ना को मैं कैसे लूँगा, ये मैं भी नहीं जानता।"

उसकी बातों में एक चेतावनी थी। इसके बाद मेरा वहाँ दम घुटने लगा। उसने जैसे ही मेरे हाथ पर दोबारा अपना हाथ रखा मैंने उसका हाथ दूर झटक दिया। फिर उसकी टेबल पर रखा सामान तितर-बितर कर दिया। उसे समझ ही नहीं आ रहा था कि मुझे क्या हो गया है। फिर उसी के दिए पानी के गिलास का पानी उसके मुँह पर फेंकने के बाद ज़ोर से गिलास को ज़मीन पर पटक दिया। अपने बाल बिखराकर लिपस्टिक फैला दी। फिर मदद के लिए चिल्लाने लगी। अविनाश ने मुझे पकड़कर रोकने की कोशिश की जो मैंने उसे करने दी। तभी कमरे का दरवाज़ा खुला और वह लड़का, मेरा मैनेजर और संदीप मित्तल तीनों अंदर आ गए। शायद उन्होंने गिलास टूटने के आवाज़ और मेरी चीख़ सुन ली थी, ठीक जैसा मैंने सोचा था। सबको अंदर आते देखकर मैंने उसे ज़ोर से धक्का देकर ख़ुद से दूर किया। वह सबको देखकर डर गया और अपनी सफ़ाई देने लगा। मैं रोते हुए वहाँ से बाहर भाग गई। उसके बाद मेरे वकील ने उसके ख़िलाफ़ पुलिस स्टेशन में FIR दर्ज करवा दी। जब मैंने शिकायत दर्ज कराई थी तब मुझे नहीं पता था यह केस इतना बड़ा रूप ले लेगा। मैं बस उसे सबक़ सिखाना चाहती थी। मैं चाहती थी वह यह बात समझ जाए कि वह जिसे चाहे उसे नहीं पा सकता। संदीप मित्तल ने भी अपने कॉलम में इस घटना के बारे में लिखा था-

अविनाश लूथरा जैसे लोग इस फ़िल्म इंडस्ट्री के साथ-साथ इस दुनिया के लिए भी पैरासाइट जैसे ही हैं। इन्हीं लोगों की वजह से आज भी आम आदमी अपनी लड़कियों को फ़िल्मों में आने से रोकता है। आज मीरा ने इस पैरासाइट के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाकर उन सभी को प्रेरणा दी है जो ज़ुल्म को चुपचाप सहते रहते हैं। आज इस दुनिया को मीरा जैसे लोगों की ही ज़रूरत है। आप आवाज़ नहीं उठाएँगे तो कोई आपकी मदद को आगे कैसे आएगा? मुझे मीरा पर गर्व है। उम्मीद है वह जैसी हैं वैसी ही रहें। अभी तो सिर्फ़ आगाज़

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

हुआ है। अंजाम तक पहुँचने तक बहुत ही सब्र और साहस की ज़रूरत होगी। आशा है वह इसे लड़ाई को बीच में नहीं छोड़ेंगी।

अविनाश लूथरा के पकड़े जाने की ख़बर से पूरे बॉलीवुड में खलबली मच गई थी। कुछ लोगों को लगता था मैंने अविनाश पर झूठा आरोप लगाया है। जो लड़कियाँ अब तक अविनाश के डर से चुप बैठी थीं वे भी सामने आ गईं। उस लड़के ने भी, जो उसके यहाँ काम करता था, अविनाश के ख़िलाफ़ पुलिस को अपना बयान दिया। इसके बाद अविनाश पर लड़कियों को फ़िल्म में काम देने का झाँसा देकर उनसे शारीरिक संबंध बनाने और कई बार उनकी मर्ज़ी के बिना उनके साथ ज़बरदस्ती और बलात्कार करने जैसे संगीन आरोप लगे। उस पर अदालत में कार्यवाही शुरू हो गई। बाद में सामने आया कि उसकी और भी कई ग़ैर क़ानूनी गतिविधियों में साझेदारी थी। जैसे वह विदेशों से महँगे ड्रग्स मँगवाता और यहाँ भारत में बेचता था। वह एक डिस्को बार भी चलाता था जहाँ वह अपने क्लाइंट्स को एस्कॉर्ट की सर्विस भी दिया करता था। एक लड़की को जान से मरवाने का शक भी उस पर था। लगभग तीन साल अदालत में केस चलने के बाद उस पर ये सभी आरोप IPC की धारा 375, 376, 307 और एक्ट NDPS के अंतर्गत साबित हो गए। और उसे भारी जुर्माने के साथ ग्यारह साल की सज़ा हुई थी। संदीप मित्तल भी अपने कॉलम के द्वारा लोगों को इस केस की हर एक अपडेट देता रहा। उसके लिखने से ये केस और मज़बूत बन गया था। लोग उसकी बातों पर विश्वास करते थे। इस बीच मुझे और संदीप को जान से मार डालने की धमकियाँ भी मिलती रहीं। जिस दिन भी इस केस की सुनवाई होती लोग झुंड में कोर्ट के बाहर इकट्ठा होकर बस 'वी वांट जस्टिस' के नारे लगाते। इन्हीं लोगों की वजह से सिस्टम पर एक प्रेशर बन गया था, जिससे इतनी जल्दी फ़ैसला आने में काफ़ी मदद मिली थी।

केस ख़त्म हो जाने के बाद मैंने संदीप मित्तल को एक फूलों का गुलदस्ता शुक्रिया के तौर पर भिजवा दिया था।

अविनाश पर चाहे वह सब आरोप सही साबित हो गए हों परंतु मैंने जो तरीक़ा उस दिन अपनाया था वह ठीक नहीं था। उसे किसी भी तरह जस्टिफ़ाई नहीं किया जा सकता है। न ही मैं ये चाहूँगी की कोई मुझसे प्रेरणा लेकर कभी ऐसा काम करे। ज़रूरी नहीं जिस काम में मैं सफल रही उस काम में आप भी सफल रहें। हर इंसान की एक सीमा होती है। सीमा ख़तरा उठाने की। सीमा शीघ्र निर्णय लेने की। सीमा परिस्थितियों के अनुसार तुरंत प्रतिक्रिया करने की। मैं अपनी सीमा जानती थी इसीलिए मैंने वह क़दम उठाया। ग़लत के ख़िलाफ़ आवाज़ ऊँची कीजिए लेकिन अपनी ताक़त की सीमा पहचानने के बाद। सोचिए, समझिए फिर बोलिए।

जिस दिन लोगों को मेरे इस झूठ का पता चलेगा, लोग कभी मेरे इस तरीक़े को स्वीकार नहीं करेंगे। लेकिन वह सब करने का अफ़सोस मुझे आज तक नहीं है। मैंने उसे उसी जुर्म की सज़ा दिलाई थी, जो वह मेरे साथ करना चाहता था और जिसे पहले भी वह कई लड़कियों के साथ कर चुका था। कभी-कभी बुराई से उसी भाषा में बात करनी पड़ती है

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

जिसे वह समझती है। और जो कर सकते हैं वह भी अगर चुप रहें तो यही बुराई हमारे सिर पर तांडव करने लगती है।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

हत्या या आत्महत्या?

अविनाश जेल जाने से पहले मुझे खुलेआम धमकाकर गया था कि वह बाहर आने के बाद मुझे मार देगा। वह अभी कुछ दिन पहले ही जेल से रिहा हुआ था। अगर उसने ही मुझे मारा है तो वह घर में घुसा कैसे होगा? या ऐसा भी हो सकता है कि मुझे ज़हर घर वापस आने से पहले दिया गया हो। और वह ज़हर अपना असर देने के कुछ घंटों बाद दिखाता हो। लेकिन पुलिस को अगर तफ़्तीश करने के बाद भी ठोस सबूत नहीं मिले तो वह ये मामला यही कहकर बंद कर देगी कि ये एक आत्महत्या का मामला था। दिव्या भारती तो याद होगी ना आपको? कैसे उसकी मौत अपने अपार्टमेंट की खिड़की से गिर जाने से हुई थी। अब वह आत्महत्या थी या मर्डर, ये आज तक मिस्ट्री ही बनी हुई है। वैसे आधिकारिक तौर पर इसे आत्महत्या का मामला मानकर बंद कर दिया गया था। उस समय मैं तेरह साल की थी। यह मुझे सही से इसलिए याद है क्योंकि उस दिन मुझे पहली बार पीरियड्स आए थे और रेशमा उस दिन फूट-फूटकर रोई थी। रेशमा मेरे पड़ोस में रहा करती थी। कुछ दिनों तक तो उसने ठीक से खाना भी नहीं खाया था। दिव्या भारती उसकी पसंदीदा हीरोइन थी। उसका वह गाना 'सात समंदर पार', उस पर रेशमा ने जाने कितनी बार मोहल्ले या उसके अपने घर में होने वाले पार्टी फ़ंक्शन में डांस किया था। आज भी जब मैं उस गाने को सुनती हूँ तो मुझे दिव्या भारती नहीं रेशमा का चेहरा याद आता है। उस दिन मैं सारा दिन टीवी के सामने बैठी थी। तब हमारे घर में केबल नहीं था। और इंटरनेट तो उसके बहुत सालों बाद चलन में आया था। तब टीवी पर दूरदर्शन के सिर्फ़ दो ही चैनल आते थे। आज के हिसाब से तब इतनी सहूलियत नहीं थी कि कभी भी कोई गाना या फ़िल्म देख सुन लो। इसलिए मैं उस दिन पूरा समय ख़बरें देखती रही क्योंकि वो लोग दिव्या भारती की मौत की ख़बर के साथ उसकी फ़िल्म का वह गाना 'ऐसी दीवानगी' भी चला रहे थे। उस वक़्त मुझे उस गाने के डांस स्टेप्स देखना और उनको कॉपी करना अच्छा लगता था। तब मेरे मन में दिव्या भारती के लिए कोई भी भावनाएँ नहीं थे। मुझे लगता था मरना कोई निस्तब्ध या जड़ कर देने वाली घटना नहीं है। पिछले साल मेरे बाबा चले गए थे। अभी कुछ दिन पहले छोटे बाज़ार में पान की दुकान चलाने वाला शंभू पनवाड़ी चल बसा था। अख़बारों में भी रोज़ किसी-न-किसी के मरने की ख़बर होती है। कभी बॉर्डर पर जवान मर जाते हैं। कभी कोई बस खाई में गिर जाती है। तो कभी कोई प्लेन क्रैश हो जाता है। कोई लंबी बीमारी से मर जाता है तो किसी को अकस्मात ही दिल का दौरा पड़ जाता है। अगर हम किसी के साथ कोई याद साझा नहीं करते हैं तो उनके मरने का ग़म भी हमें नहीं हो सकता। लेकिन आज मुझे दिव्या भारती के साथ हमदर्दी हो रही है। आज मुझे समझ आ रहा है मरना भले ही एक आम घटना हो, पर जो मरता है उसके लिए ये कोई आम बात नहीं होती। इस तरह मुझे कभी दिव्या भारती याद आएगी मैंने कभी नहीं सोचा था। क्या कोई मुझे आज से तक़रीबन बीस-पच्चीस साल बाद इस तरह याद रखेगा? क्या कोई रेशमा कभी मेरे लिए रोएगी?

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

शाम गहरी होती-होती रात में बदल गई है। चाँद की चाँदनी ने शाम के लाल रंग को अपने सफ़ेद रंग में रंग लिया है। तारे चाँद के सामने ज़ीरो वॉट के बल्ब की तरह टिमटिमाकर उसकी ज़िम्मेदारी को बाँटने की निरर्थक कोशिश कर रहे हैं। समुद्र भी चाँद की चाँदनी में सफ़ेद कपड़ों में सजी कोई दिलरुबा नज़र आ रहा है। लहरों का शोर भी शुरू हो गया है। वह शायद इसलिए कि अब थोड़ी हवा चलने लगी है। चौपाटी लगभग ख़ाली हो गई है। आख़िरी बार जब मैं यहाँ आई थी तो ऐसे ही पूरी रात मैंने यहाँ पर गुज़ारी थी। हीरोइन बनने के बाद मैं यहाँ अक्सर रात को ही आती थी। ये कोई आज से दस साल पहले की बात थी। उस दिन मेरी एक फ़िल्म रिलीज़ हुई थी। वह एक रोमांटिक थ्रिलर था। उसी दिन आमिर ख़ान की '3 इडियट्स' भी रिलीज़ हुई थी। मुझे मेरी इस फ़िल्म से बहुत उम्मीदें थीं। इस फ़िल्म का आधे से ज़्यादा हिस्सा यूरोप में फ़िल्माया गया था। इस फ़िल्म में मेरे साथ वही हीरो था जिसके साथ मेरी जोड़ी लोग बहुत पसंद करते थे। जिसके साथ मेरी तब तक की सारी फ़िल्में सुपरहिट रही थीं। उसका नाम था आदित्य महाजन। जो दिखने में बिलकुल जॉन अब्राहम जैसा था। ऑन स्क्रीन हमारी जोड़ी जितनी हिट थी ऑफ़ स्क्रीन उतनी ही फ़्लॉप। हम दोनों में कभी बनती ही नहीं थी। हम दोनों जब भी बात करते बहस करना शुरू कर देते थे। हमारे विचार किसी भी एक बात पर नहीं मिलते थे। लोग हमें एक साथ देखना पसंद करते थे। इसलिए भी हमारा एक साथ काम करना ज़रूरी था, फिर एक दिन हम दोनों ने अपनी ही बहस से तंग आकर ये निर्णय लिया कि हमारे बीच सिर्फ़ प्रोफ़ेशनल रिश्ता होगा। जिसे हम दोनों ने ही बड़ी ईमानदारी से निभाया। इसी वजह से हम दोनों के दिल में एक-दूसरे के लिए आदर भी बढ़ गया था।

उस दिन मैं उदास थी। हमारी फ़िल्म दर्शकों ने पहले ही दिन नकार दी थी। जिस वजह से मैं अंदर तक टूट-सी गई थी। मैं लगभग आधी रात के समय यहाँ आई थी। तब मेरा बॉडीगार्ड हर वक़्त मेरे साथ रहता था। यहाँ आते ही मेरी आँख लग गई और मैं सब कुछ भूल गई। सुबह के लगभग चार बजे जब मेरे बॉडीगार्ड ने मुझे उठाया तो मुझे ख़ुद पर बहुत ग़ुस्सा आया। मैं ख़ुद को कोसती रही कि मैं कैसे इस जगह को ख़ुद पर हावी होने दे सकती हूँ? क्यों जब भी मैं दुखी होती हूँ तो मुझे भावनात्मक सहारे के लिए यहाँ आने की ज़रूरत पड़ती है? मैं ख़ुद अपना सहारा क्यों नहीं बन सकती? बस उसके बाद मैंने यहाँ आना छोड़ दिया था।

उस दिन जो यहाँ पर रात का सन्नाटा था वह आज के इस सन्नाटे से बिलकुल जुदा था। तबके सन्नाटे में शांति थी, सुकून था। आज के सन्नाटे में बेचैनी है, शोर है। तब उस सुकून ने मुझे इस जगह दोबारा न आने के लिए मजबूर कर दिया था। आज इस बेचैनी ने मुझे यहाँ से न हिलने के लिए। बार-बार बस मुझे ये ख़याल परेशान कर रहा है कि अगर पुलिस ने इसे आत्महत्या का मामला मान लिया तो मीडिया मेरे नाम के साथ-साथ मेरे बाबा का नाम भी उछालने लगेगी। क्योंकि उन्होंने भी आत्महत्या की थी। तब उनकी उम्र भी चालीस के पास ही थी। वह ज़बरदस्ती दोनों मौतों में संबंध ढूँढ़ने की कोशिश करेगी। एक जेनेटिक डिप्रेशन तक की थ्योरी सामने आ जाएगी। लोग मेरे सोशल मीडिया पर पिछले कुछ दिनों में मेरी अपडेट की गई पोस्ट्स से मेरी मनोदशा पढ़ने की कोशिश करेंगे। न्यूज़ चैनल वाले

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

तो एक्सपर्ट ओपिनियन के नाम पर मनोवैज्ञानिकों की एक पूरी टीम बुलाकर एक प्रोग्राम बना देंगे। मेरे बारे में वो कुछ भी कहें इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, लेकिन मेरे बाबा का नाम घसीटने पर मुझे दिक़्क़त होगी। तब मेरे बाबा की बॉडी का पोस्टमार्टम हुआ भी था या नहीं मैं नहीं जानती लेकिन अब उनकी निजी ज़िंदगी का पोस्टमार्टम ज़रूर होगा। क्योंकि उनका गुनाह बस इतना था कि उनकी बेटी एक सेलेब्रिटी थी।

पुलिस और CBI (अगर CBI तक केस पहुँचा तो) मिलकर भी अगर हत्यारे को नहीं ढूँढ़ पाती है तो वह इस केस को बिना आत्महत्या का लेबल लगाए भी तो बंद कर सकती है। और ये कोई पहली बार तो होगा नहीं। ऐसे न जाने कितने मामले बिना सुलझे बंद हो चुके हैं। आरुषि मर्डर केस उनमें से ही एक है। श्रीदेवी जी की मौत भी तो एक अनसुलझी पहेली बनकर रह गई थी। मेरी मौत भी अगर ऐसी ही एक अनसुलझी पहेली बनकर रह जाती है तो उससे मुझे कोई शिकायत नहीं होगी। लेकिन आत्महत्या! नहीं ये मुझे कभी गवारा नहीं होगा। आत्महत्या कायर लोग करते हैं। मैं पूरी ज़िंदगी कुछ भी रही हूँ पर कायर कभी नहीं थी। मुझे मुश्किलों से डर नहीं लगता था। लेकिन लोगों को सच से मतलब ही नहीं है। उन्हें बस एक इंस्टैंट क्लोज़र चाहिए होता है। आज की दुनिया पर मीडिया का इतना प्रभाव है कि अगर मीडिया बोल देगी कि ये मर्डर है, तो मर्डर है। आत्महत्या कह देगी, तो आत्महत्या है। वह ये सोचने की तकलीफ़ भी नहीं करेंगे कि मीरा का व्यक्तित्व जिस तरह का था वह ख़ुद की जान ले ले ये मुमकिन ही नहीं है। लेकिन शायद सोचना इस दुनिया की सबसे बड़ी लग्ज़री है। कुछ लोगों को इस बात पर शक होगा भी तो वे भी कर ही क्या लेंगे! उनकी आवाज़ को भीड़ की आवाज़ से दबा दिया जाएगा। भीड़ की न आँख होती है न ही कान। असल में उसका कोई चेहरा होता ही नहीं। सिर्फ़ एक मानसिकता होती है जो किसी भी तरह से अपनी बात मनवा लेना जानती है।

कल शायद पुलिस मेरे अंतिम संस्कार की अनुमति दे दे। लेकिन वह अनुमति किसे देगी? परिवार के नाम पर मेरी माँ है जिससे मैं शिमला छोड़ने के बाद से नहीं मिली। अब तक तो उसे भी ख़बर लग गई होगी। क्या वह मेरे अंतिम संस्कार के लिए मुंबई आएगी? हत्या के मामलों में पुलिस सभी निकट संबंधी और रिश्तेदारों को पूछताछ के लिए बुला लेती है। फिर वह तो मेरी माँ है। क्या पता उन्होंने उसे अब तक मुंबई बुला भी लिया हो! अगर आने के बाद भी उन्होंने मेरे अंतिम संस्कार की ज़िम्मेदारी नहीं ली तो? फिर कौन करेगा मेरा अंतिम संस्कार? राज़ी, रानी, राजीव? मेरी एडवोकेट टीम? स्टेट गवर्नमेंट? मेरा मैनेजर?

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

रिक्कू जी

उनका नाम यूँ तो राकेश नाथ शर्मा था। पर सब उन्हें रिक्कू जी कहकर बुलाते थे। वह मेरी पहली फ़िल्म के बाद से ही मेरे साथ थे। फ़िल्म इंडस्ट्री में लगभग सब उन्हें जानते थे। मुझसे पहले वह एक जाने-माने अभिनेता के साथ काम किया करते थे, जिससे किसी बात पर उनकी अनबन हो गई थी और उन्होंने निश्चय कर लिया था वह अब काम करेंगे तो सिर्फ़ किसी नये कलाकार के साथ। मेरी पहली फ़िल्म कोई कमर्शियल फ़िल्म नहीं थी। लेकिन उस फ़िल्म में मेरे काम को बहुत सराहा गया था। साथ ही फ़िल्म ने देश-विदेश में होने वाले कई फ़िल्म फ़ेस्टिवल में अवॉर्ड भी जीते थे। एक दिन रिक्कू जी का फ़ोन मेरे पास आया और उन्होंने कहा कि आज से मैं तुम्हारा मैनेजर हूँ। मेरे पास तुम्हारे लिए एक बहुत ही अच्छी स्क्रिप्ट है जिसे तुम कर रही हो। उन्होंने न तो मुझसे कुछ और पूछा और न ही मुझे कुछ कहने का मौक़ा दिया। वैसे भी उनके जैसा मैनेजर रखना कौन नहीं चाहेगा! मैंने बिना स्क्रिप्ट पढ़े ही उस फ़िल्म को साइन कर लिया था, जो फ़िल्म रिलीज के बाद ब्लॉकबस्टर साबित भी हुई थी। वह मुझसे उम्र में लगभग बीस साल बड़े थे। मुझे हमेशा उन्हें देखकर राजश्री फ़िल्म के बाबूजी आलोक नाथ जी की याद आती थी। उन्होंने काम के अलावा मुझसे कभी कोई बात नहीं की। न वह मुझसे कोई निजी सवाल पूछते थे न मैं उनसे। शायद इसी वजह से हम इतने साल साथ काम कर पाए। बस मुझे इतना पता था कि उनकी बीवी और दो बच्चे यहीं मुंबई में उनके साथ रहते थे।

मेरी रिटायरमेंट के बाद उन्होंने भी फ़िल्म इंडस्ट्री से संन्यास ले लिया था। और तबसे हमारी कोई मुलाक़ात नहीं हुई थी। अभी एक हफ़्ते पहले मुझे एक होटल की नयी बिल्डिंग के उद्घाटन के लिए बुलाया गया था। वहाँ मैंने रिक्कू जी को किसी बीस बाईस साल की लड़की के साथ एक-दूसरे की कमर में हाथ डाले लिफ़्ट की ओर जाते देखा था। लिफ़्ट का दरवाज़ा बंद होने से पहले उनकी नज़र मुझ पर पड़ गई और वह समझ गए थे कि मैंने उन्हें देख लिया है। उसके दो दिन बाद वह मुझसे मिलने आए। उस दिन इसरो को चंद्रयान 2 का लॉन्च करना था। मैं उसी के बारे में मोबाइल पर पढ़ रही थी। वह दबी आवाज़ में मुझसे बोले, “देखो, जैसा तुम सोच रही हो वैसा कुछ भी नहीं है।”

उनकी बात सुनने के बाद मैंने उनकी आँखों में झाँका। उन्होंने कोशिश की कि वह मुझसे आँख-से-आँख मिलाकर बात कर सकें। मगर आँखों में जब तिनका हो तो कोई किसी से आँख मिला भी कैसे सकता है!

“सच क्या है मैं और आप अच्छी तरह से जानते हैं।” कहकर मैं फिर से अपने मोबाइल पर कुछ पढ़ने लगी। मेरे लापरवाही भरे जवाब पर उन्हें ग़ुस्सा आ गया।

“तुम अगर अपना मुँह बंद ही रखोगी तो तुम्हारे लिए अच्छा होगा।”

उनकी आवाज़ में धमकी की गूँज थी। मुझे उनका धमकाना अच्छा नहीं लगा। मैंने पलटकर उनसे कहा,

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

“आपने जो अभी हरकत की है वह आप अगर ना करते तो मैं किसी से कुछ नहीं कहती। मगर अब मेरा मन बदल गया है। अब आप डर-डर के रहिए। मैं कभी भी आपके घर चाय पे आ सकती हूँ।”

क्या ये वजह किसी का मर्डर करने के लिए काफ़ी है? क्या सचमुच रिक्कू जी मुझे ज़हर दे सकते हैं? अगर उन्होंने ऐसा किया भी है तो उसका पुलिस को पता भी कैसे चलेगा? पुलिस पिछले एक हफ़्ते में मुझसे हर मिलने और फ़ोन पर बात करने वालों से पूछताछ तो करेगी। परंतु रिक्कू जी से मेरे संबंध कभी भी ख़राब नहीं रहे। इसीलिए उन पर शक करने की कोई वजह पुलिस को मिलेगी नहीं।

मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी कि रिक्कू जी मुझे इस तरह से धमका भी सकते हैं। कभी सुना था एक इंसान के कई चेहरे होते हैं। इस बात का अनुभव उन्होंने मुझे करवा दिया था। सालों से रिश्तों पर जान-पहचान की धूल जमने के बाद भी रिश्ते किसी बाहरी तूफ़ान का सामना होते ही अपना अजनबीपन दिखा सकते हैं। विश्वास जताने के लिए लगाई गई मोहर या उनको दिए जाने वाले नामों पर भरोसा तो बस अपने मन को दी जाने वाली तसल्ली है, ठीक वैसी ही जैसे हम ख़ुद को देते हैं कि एक दिन सब ठीक हो जाएगा। सच तो यही है कि हम लोगों को उतना ही जान पाते हैं जितना वो चाहते हैं कि हम उन्हें जाने।

वैसे इंसान भी कहाँ ख़ुद को पहचान पाता है! वह भी अपनी पूरी ज़िंदगी बिना ख़ुद को ढूँढ़े जी ही लेता है। अगर यही होता है तो यही होता क्यों है?

सोचते-सोचते आधी रात कब निकल गई पता ही नहीं चला। चौपाटी पर मेरे अलावा सिर्फ़ एक कुत्ता नज़र आ रहा है। कितना अजीब है ना, बचपन से मुझे कुत्ते-बिल्लियों से बहुत डर लगता था। और आज एक कुत्ता ही यहाँ मेरी तन्हाई बाँट रहा है! क्या ये मुझे देख सकता होगा? कहते हैं ना जानवर आत्माओं को देख सकते हैं। पता नहीं लेकिन आज मुझे इसके यहाँ होने से डर नहीं लग रहा। ये एक और हादसे के जैसा ही था मेरे लिए। वैसे इंसान का जन्म भी प्रकृति के लिए एक हादसा ही तो है जिसके दुष्परिणाम उसे अपनी सारी ज़िंदगी भुगतने पड़ेंगे।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

विज्ञापन कंट्रोवर्सी

पिछले साल मैंने नेटफ़्लिक्स पर एक सीरीज़ देखी थी जिसका नाम था 'Thirteen Reasons Why?' नहीं-नहीं, मैं न ही नेटफ़्लिक्स की और न ही इस सीरीज़ की कोई प्रोमोशन कर रही हूँ। वैसे भी हम सेलिब्रिटीज़ इस बात को लेकर बदनाम हैं। हम भूल से भी किसी प्रोडक्ट का नाम ले लें तो लोग सोचने लगते हैं कि हमें ऐसा करने के लिए पैसे मिले होंगे। इसी बात पर मुझे एक हसीन क़िस्सा याद आ रहा है। एक बार एक जींस बनाने वाली कंपनी ने मुझे उनके प्रोडक्ट का विज्ञापन करने का प्रस्ताव रखा। वह एक बहुत बड़ा विदेशी ब्रांड था जो पहली बार भारत में लांच होना था। उस विज्ञापन को करना किसी भी कलाकार के लिए बहुत बड़ी बात होती। लेकिन मैंने उसे करने से मना कर दिया था। मैं जींस नहीं पहनती थी। मैं बचपन से ही कोई भी लड़कों वाले कपड़े नहीं पहनती थी। बात ये नहीं थी कि मुझे ऐसा करना ग़लत लगता था। लेकिन मैं उनके जैसा नहीं दिखना चाहती थी। ऐसा भी नहीं कि मैं उनको नापसंद करती थी। बल्कि लड़कियों की तुलना में मैं उनके साथ जल्दी फ़्रेंडली हो जाती थी। लेकिन जब भी मैं लड़कों वाले कपड़े पहनती तो मुझे ऐसा लगने लग जाता था जैसे मैं मैं नहीं कोई और हूँ। जैसे मुझे किसी और के शरीर में क़ैद कर दिया गया हो। जैसे मुझसे मेरा एक लड़की होने का सुख छीन लिया गया हो। लेकिन मैंने कभी अपने विचार किसी पर नहीं थोपे। क्या पहनना चाहिए क्या नहीं ये एक बहुत ही निजी मामला होता है। कुछ भी हम जो अपनी मर्ज़ी से पहने वह हमें ख़ुशी देता है। मुझे लड़कों के कपड़े ख़ुशी नहीं देते थे। मेरे इस विज्ञापन को मना करने की ख़बर आग की तरह फैल गई। सबका मानना था कि मैंने ये ग़लत किया। रिक्कू जी भी मेरे इस फ़ैसले से ख़ुश नहीं थे। कोई मुझे रिग्रेसिव बोल रहा था, तो कोई ओल्ड स्कूल, तो कोई कह रहा था सफलता कुछ ज़्यादा ही सिर पर चढ़ गई है। इन लोगों में कुछ बॉलीवुड के भी लोग थे। लेकिन मैंने किसी को कोई सफ़ाई नहीं दी। मेरे फैंस अपनी चिट्ठियों में मुझे उन लोगों को मुझ पर किए गए कटाक्ष का जवाब देने को कहते रहे। फिर एक दिन एक नयी-नयी आई एक्ट्रेस, जिसकी पहली फ़िल्म हाल ही में हिट हुई थी, ने अपने एक इंटरव्यू में कहा,

"एक कलाकार पब्लिक के लिए काम करता है। उसे अपने काम से अपने निजी विचारों और पसंद को अलग रखना चाहिए। एक कलाकार अपने देश के बाहर अपने देश का प्रतिनिधित्व करता है। उसको कोई हक़ नहीं वह अपनी दकियानूसी सोच की वजह से अपने देश की छवि विदेशों में ख़राब करे।"

मुझसे जब इस बारे में कुछ कहने को कहा गया तो मैंने बस यही जवाब दिया-

"मुझे बिकनी वियर का विज्ञापन करने से कोई परहेज़ नहीं। अब मैं दकियानूसी ख़यालों की हूँ तो हूँ। एक और बात। किसी ने क्या पहनना है इससे इस बात का अंदाज़ा लगाना मूर्खता है कि उसकी सोच किस तरह की है। बाक़ी आपकी मर्ज़ी। आप कुछ भी कहने और सोचने के लिए स्वतंत्र हैं।"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मेरी इस बात को फ़िल्म इंडस्ट्री के कुछ लोगों ने सराहा तो कुछ लोगों ने चुप्पी साध ली। उस नयी एक्ट्रेस ने 'नो कमेंट्स' कहकर पत्रकारों से ख़ुद को बचाया। लेकिन नारी संगठन वालों ने मेरे ख़िलाफ़ मोर्चा खोल दिया। उनका कहना था कि मैंने बिकनी वियर के विज्ञापन की बात रखकर नारी की देवी समान छवि का तिरस्कार किया है। संदीप मित्तल ने भी इस कंट्रोवर्सी पर अपने कॉलम में लिखा-

"मीरा मुझे कभी निराश नहीं करती। उसकी अपनी एक सोच है जो इस ज़माने की सोच से तो बहुत अलग है और जिस पर चलते हुए वह घबराती नहीं। क्या हम इतने भी सक्षम नहीं कि जो जैसा है उसे वैसा ही अपना सकें? क्या हम उन लोगों से डरते हैं जो लोग अपनी पसंद के मुताबिक़ जीना चाहते हैं? मैं पूछता हूँ तब नारी संगठन वाले लोग कहाँ थे जब मीरा ने जींस का विज्ञापन करने से इनकार किया था? तब ये लोग कहाँ थे जब मीरा ने अविनाश लूथरा को पकड़वाने में अपनी छवि और करियर तक को दाँव पर लगा दिया था? तब तो इन लोगों के मुँह से दो शब्द भी नहीं निकले थे मीरा की प्रशंसा करने के लिए। क्या इन लोगों को पता भी है कि इस बात पर मीरा के ख़िलाफ़ मोर्चा निकालकर ये नारी की उसी छवि की माँग कर रहे हैं जिसके ख़िलाफ़ इनकी लड़ाई है!"

इसके बाद मैंने एशिया की एक टॉप फ़ैशन मैगज़ीन के लिए बिकनी वियर का विज्ञापन भी किया और उसके लिए विदेश भी गई। ये सब उस वक़्त की बात है जब इंडिया ने श्रीलंका को हराकर 2011 में वर्ल्ड कप जीता था। जिसका फ़ाइनल मैच भी मुंबई में हुआ था। ये मुझे इसलिए याद है क्योंकि जिस दिन इंडिया का फ़ाइनल मैच था, उसी दिन मैंने बिकनी के विज्ञापन का कॉन्ट्रैक्ट साइन किया था। उस दिन मुझे ऐसा लगा था जैसे मेरा देश और मैं दोनों जीत गए थे।

किसी को भी उसकी पसंद या नापसंद की वजह से मॉडर्न या ओल्ड फ़ैशंड कहकर दो अलग-अलग हिस्सों में नहीं बाँट देना चाहिए। कोई कभी भी कुछ भी हो सकता है। वह किस वक़्त क्या बनना चाहता है यह उसका अपना फ़ैसला होना चाहिए। और अगर देखा जाए तो नया और पुराना है क्या? वक़्त के दो अलग-अलग हिस्से। कोई अगर पुराने हिस्से को नये हिस्से में जीना चाहता है तो किसी का क्या जाता है! और अगर जाता भी है तो कोई भी उसके अपने पसंद के मुताबिक़ जीने के अधिकार पर अपना अधिकार स्थापित नहीं कर सकता। याद रखिए हम भी तभी तक दूसरों की दख़लअंदाज़ी से स्वतंत्र है जब तक हम दूसरे को अपनी हर बात से मुक्त रखते हैं। वरना हमारा सारा जीवन अपनी इसी सोच का ग़ुलाम होकर रह जाएगा कि दूसरा अपनी ज़िंदगी में क्या कर रहा है।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

आख़िरी शब्द

नेटफ़्लिक्स की उस सीरीज़ की मुख्य किरदार थी हन्नाह, जो आत्महत्या कर लेती है। मरने से पहले वह तेरह ऑडियो टेप रिकॉर्ड करती है, उन लोगों के लिए जिनकी वजह से वह अपनी जान लेने पर मजबूर हो गई थी। पता नहीं मुझे अचानक से ये सीरीज़ क्यों याद आई? मेरी और उसकी मौत में कोई समानता नहीं। हालाँकि मुझे उसका अपनी जान लेना कभी सही नहीं लगा था। मगर कम-से-कम जाने से पहले वह अपने मन की बात तो कह पाई थी। मुझे तो यह भी मौक़ा नहीं मिला। कभी आपने ख़ुद से पूछा है कि ये मन होता क्या है? क्यों ये सिर्फ़ अतीत की यादों में या फिर भविष्य की चिंता में उलझा रहता है? अतीत के अनुभवों से सबक़ लेकर हम भविष्य के लिए चाहें कितनी ही नीतियाँ बना लें, हम करते वही हैं जो वर्तमान में हमारा मन चाहता है। फिर क्यों हमारा मन सिर्फ़ वर्तमान में जीना नहीं जानता? मैं क्यों इस बात से दुखी हूँ कि मैं मरने से पहले अपने मन की बात नहीं कर पाई? क्यों मैं सिर्फ़ इस बात से संतुष्ट नहीं हूँ कि अब तो मैं आपको अपनी कहानी सुना रही हूँ। कहानी इसीलिए कहा क्योंकि हर बीता हुआ पल पूरी कहानी का एक टुकड़ा ही होता है। ख़ैर!

मुझे इस बात का दुख है कि मैं अपने आख़िरी शब्द भी इस दुनिया में नहीं छोड़ पाई। लोगों के आख़िरी शब्दों को लेकर मेरा रुझान जॉन ग्रीन की किताब 'Looking For Alaska' को पढ़ने के बाद बढ़ा। उसके एक पात्र को सब नामी लोगों के आख़िरी शब्द याद थे। जब मैंने किताब पढ़ी थी तब मैं सोचती थी ऐसा भी क्या पागलपन लोगों के आख़िरी शब्दों के लिए! इसी सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए मैंने लोगों के आख़िरी शब्द ढूँढ़-ढूँढ़कर पढ़ना शुरू किया। अगर मुझे किसी के मरने की ख़बर मिलती तो मेरा मन करता मैं उनके अपनों से पूछूँ कि जाते हुए आख़िरी बार उन्होंने क्या कहा था। मुझे समझ आने लगा था कि हमारे आख़िरी शब्द ही हमारे आख़िरी वक़्त का सच कहते हैं। जाने से पहले के उन आख़िरी पलों में कौन हमारे साथ था, हम क्या सोच रहे थे, हमें उस वक़्त क्या चाहिए था, हम ख़ुश थे या दुखी, हमें जाते-जाते भी किस बात की चिंता थी। वो शब्द किसी भी बारे में हो सकते हैं। जैसे मेरी दादी के आख़िरी शब्द थे, “इस मीठी को कहीं खोने मत देना।”

उन्हें अपने आख़िरी वक़्त में सिर्फ़ मेरी चिंता थी। उन्हें पता था कि उनके जाने के बाद मैं अकेली रह जाऊँगी।

शायद मरने से पहले मैंने भी कुछ कहा हो। जिसका पता मुझे कभी नहीं चलेगा। मैं हमेशा सोचती थी कि जब मैं साठ वर्ष की हो जाऊँगी तब ख़ुद की आत्मकथा प्रकाशित करूँगी, जिसे मैंने ख़ुद लिखा होगा। ऐसा बहुत कुछ था जो मैं दुनिया को बताना चाहती थी, उनसे कहना चाहती थी। मेरे कई सवाल थे जो मैं उनसे पूछना चाहती थी। मुझे तो इस बात का मौक़ा नहीं मिला। लेकिन अब दुनिया मेरे बारे में बात करेगी। जो मन में आएगा वह कहेगी। मेरी ज़िंदगी के ऊपर सवाल उठाएगी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

रीना माथुर

बारिश होने लगी है। वह कुत्ता भी बारिश से बचने के लिए कहीं चला गया। मैं कहाँ जाऊँ। जाने की ज़रूरत भी क्या है! अब मैं बचकर करूँगी भी क्या! मुंबई की बारिश का कोई भरोसा नहीं। मुझे आज भी याद है 26 जुलाई की वह तबाही जो इसी बारिश की वजह से हुई थी। ये महीना भी तो जुलाई का है। लेकिन वह बारिश अलग थी, ये बारिश अलग है। जैसे कल मैं ज़िंदा थी, आज मरी हुई हूँ। कल जो मैं कर सकती थी, आज नहीं कर सकती। कल तक बारिश मुझे भिगो सकती थी, आज मुझे ये छू भी नहीं रही है। मैं सबको देख सकती हूँ, कोई मुझे नहीं देख सकता। मैं सब कुछ सुन सकती हूँ, कोई मुझे नहीं सुन सकता। मरने के भी अपने ही अलग प्रिविलेज है। क्या हर कोई मरने के बाद आत्मा बनकर इस तरह भटकता है? आत्मा हमारी कॉन्शियस ही तो होती है न? जो हमें अच्छे-बुरे होने का फ़र्क़ समझाती है। हमें सवाल करना सिखाती है। जब हम ख़ुद को भूल जाते हैं तो हमें झकझोरती है। तो इसका मतलब जो लोग अपनी ज़िंदगी में इसे ढूँढ़ लेते हैं वहीं लोग मरने के बाद आत्मा बनकर तब तक इस दुनिया में रहते हैं जब तक उन्हें अपने सारे सवालों के जवाब न मिल जाएँ?

अभी इस बारिश में इतनी रात को अकेले इस चौपाटी पर ख़ुद को बैठे हुए, सोचते हुए, मुझे बस यही गाना याद आ रहा है- 'मुसाफ़िर हूँ यारो, ना घर है ना ठिकाना, बस यूँ ही चलते जाना है'।

मुझे अपना मुंबई का घर कभी घर-सा नहीं लगा। वह घर वो जगह थी जहाँ मुझे रहते हुए हमेशा यही लगता कि मैं यहाँ उधारी तौर पर रह रही हूँ। जैसे हम होटल में रहते हैं, जब कहीं घूमने जाते हैं। मेरे लिए घर का मतलब सिर्फ़ शिमला वाला घर था। एक दिन वह घर बिक गया। उसी दिन अटल बिहारी वाजपेयी जी प्रधानमंत्री बने थे। उनसे पहले आई के गुजराल इस पद पर थे। तारीख़ थी 7 मार्च 1998। यह मुझे इसीलिए याद है क्योंकि उसी दिन मेरा घर बेच दिया गया था। उधर देश की कुर्सी का मालिक बदला इधर मेरे घर का। उस दिन मैं बहुत रोई थी। शायद आई के गुजराल भी बहुत रोए हों। मैंने उसी दिन सोच लिया था कि मैं अपना घर एक दिन वापस ज़रूर ख़रीदूँगी। लेकिन जब मैं दोबारा वह घर ख़रीदने वापस लौटी तो मैंने वह घर नहीं ख़रीदा। सब कुछ पक्का हो गया था। लेकिन वह घर बदल गया था। उस घर की आत्मा बदल गई थी। उस घर के बाहर मेरी माँ के हाथों की छाप नहीं थी, जो उन्होंने तब लगाई थी जब वह शादी करके आई थी। वहाँ वह दीवार नहीं थी जिस पर मेरे दादा जी ने हर साल मेरी लंबाई नापने की परंपरा शुरू की थी। जिसे मेरी दादी ने उनके मरने तक निभाया था। मैंने बचपन में जगह-जगह दीवारों पर अपना नाम गोद रखा था। अब वह वहाँ नहीं थे। एक बार एक जगह दीमक लगने से मेरे बाबा ने वहाँ की लकड़ी निकाल दी थी। अब वह जगह मरम्मत कर दी गई थी। वह घर नया हो गया था। अब वह घर अपने नये मालिक की कहानी कह रहा था। कौन कहता है सिर्फ़ जीवित वस्तुएँ ही हमसे नाराज़ हो सकती हैं? मैं उस घर को गले लगाना चाहती थी। मगर उस घर

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

ने मुझे बाहर का रास्ता दिखा दिया। तब मैंने उस घर को छोड़ दिया था। उस दिन उस घर ने मुझे छोड़ दिया था। उसी दिन फ़िल्म कल हो ना हो रिलीज हुई थी। उसके बाद मैंने शिमला को मुड़कर दोबारा नहीं देखा था।

बारिश तेज़ होती जा रही है। वह 26 जुलाई का दिन जब मुंबई शहर पर उस बारिश ने अपना क़हर बरसाया था। साल 2005 का था शायद। मुझे आज भी कल की बात की तरह ही याद है। उस दिन मैं अपनी एक फ़िल्म की डबिंग के लिए स्टूडियो में थी। सड़कों पर पानी इतना बढ़ गया था कि जो जहाँ था वहीं रह गया। हम भी स्टूडियो में ही अटक गए थे। वैसे तो हम वहाँ सुरक्षित थे बस हमारे पास खाने को कुछ नहीं था। मैं हमेशा अपने बैग में ड्राइफ़्रूट्स रखा करती थी। सबको देने के बाद मैंने पैकेट फ़िल्म में मेरे साथ काम कर रही सह कलाकार रीना माथुर, जो कुछ-कुछ दीया मिर्ज़ा के जैसी दिखती थी, के आगे किया। उसके साथ मेरी फ़िल्म के दौरान अच्छी बनने लगी थी। हम एक ही उम्र के थे। मैं शूटिंग के ब्रेक में अक्सर उसे अपनी ही मेकअप वैन में बुला लिया करती थी। और वह भी अपने घर से लाया खाना मेरे साथ शेयर करती। उस दिन वह मुझे कुछ उखड़ी-उखड़ी लगी। उसने ड्राइफ़्रूट्स लेने से भी मना कर दिया था। पहले मैंने सोचा मेरा वहम है। लेकिन जब मैंने उससे कहा, "साथ अच्छा हो तो बुरे से बुरा टाइम भी पास हो जाता है।"

तब जो उसने जवाब दिया था, उससे मैं समझ गई थी कि इसके मन में कुछ तो चल रहा है।

"यानी तुम्हें पूरा विश्वास है कि जो इस वक़्त तुम्हारे साथ है वो तुम्हारे साथ अच्छा ही है?"

"मैं कुछ समझी नहीं।"

"कुछ नहीं बस यूँ ही बोल दिया।" उसने बात टालते हुए कहा।

"नहीं कुछ तो है। बोलो क्या हुआ है?" मैंने उस पर थोड़ा दबाव बनाया।

"बस ऐसे ही आजकल काम मिलना बहुत मुश्किल हो गया है। ख़र्चा भी मुश्किल से ही निकल पाता है।"

"तुम टीवी में कोशिश क्यों नहीं करती। पिछले कुछ सालों में टीवी की मार्केट बढ़ी ही है। तुम चाहो तो मैं एकता कपूर से बात कर सकती हूँ।"

ये बात मैंने सिर्फ़ कहने को नहीं कहीं थी। मैं सचमुच उसकी मदद करना चाहती थी। लेकिन शायद उसे मेरी ये बात चुभ गई थी और इसीलिए उसने मुझे ऐसा जवाब दिया था।

"ऊँची जगह पहुँचकर दूसरों को नीचा दिखाना बहुत आसान होता है। पर लोग भूल जाते हैं वह दूसरों को गिराकर ही वहाँ पहुँचे हैं।"

ये सुनकर मैंने उससे साफ़-साफ़ उसके मन की बात करने को कहा। फिर उसने मुझे बताया कि जो दूसरी फ़िल्म मैंने की थी, जिसे रिक्कू जी मेरे पास लेकर आए थे, उसका वादा उसे किया गया था। उसका मानना था कि अगर मैं बीच में नहीं आती तो आज मैं जहाँ हूँ वह वहाँ होती। मैंने उसकी सालों के मेहनत और उस फ़िल्म को पाने के लिए किए गए समझौतों पर पानी फेर दिया था। वह मुझसे नफ़रत करती थी। ये सब जानने के बाद मैंने उससे पूछा, "ऐसा था तो फिर इतने दिन से ये सब दोस्ती का नाटक क्यों?"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"करना पड़ा और कल से फिर से करूँगी। काम जो करना है। पानी में रहते बड़ी मछली के साथ बैर तो नहीं रख सकते।"

उसकी इस बात में कहीं से भी कोई मजबूरी या अफ़सोस नज़र नहीं आ रहा था।

"अब मुझे ये सब बताने का मतलब?"

"किसी से नफ़रत करो और उसे पता भी ना हो तो क्या फ़ायदा?"

कुछ देर चुप रहने के बाद मैंने उससे पूछा, "क्या तुम्हें सही में ऐसा लगता है, मेरी वजह से तुम्हारे साथ ये सब हुआ?

"हाँ!"

"सोच समझ के कह रही हो?"

"इसमें सोचना क्या?"

"तुम्हें नहीं लगता तुम्हारा ग़ुस्सा उस पर होना चाहिए जिसने तुम्हें फ़िल्म देने का वादा किया था?"

मुझे अभी भी उम्मीद थी कि शायद मेरी बातें सुनकर उसके मन में मेरे लिए थोड़ी-सी नफ़रत कम हो जाए।

"वो सब मैं नहीं जानती। तुम्हारी ग़लती बस इतनी है कि तुम आज सफल हो। और तुमने भी उस फ़िल्म को पाने के लिए पता नहीं क्या-क्या किया हो?"

उसकी ये बात सुनकर मुझे ज़रा भी ग़ुस्सा नहीं आया था। हाँ दो मिनट के लिए मुझे उसकी सोच पर अफ़सोस ज़रूर हुआ था।

"अगर मान भी लिया जाए मैंने इस फ़िल्म को पाने के लिए कुछ समझौते किए भी हों, पर वह तुम्हारे किए गए समझौतों से अलग क्यों है? तुम करो तो वह जस्टिफ़ाई हो सकता है मैं करूँ तो ग़लत? ऐसा क्यों?"

मैंने उसकी बात को समझने की कोशिश करते हुए उससे पलटकर प्रश्न किया।

"तुम कुछ भी कहो मैं बस इतना जानती हूँ कि उस फ़िल्म की पहली दावेदार मैं थी। उसके बाद से मेरा स्ट्रगल कभी ख़त्म ही नहीं हुआ। कभी-कभी जब मेरी फ़्रस्ट्रेशन बढ़ जाती है तो मेरा मन तुम्हारी जान लेने को करता है। तुम्हारे लिए मेरी नफ़रत की कोई सीमा नहीं। इस वक़्त भी मेरे मन में यही ख़याल है कि काश अभी तुम बाहर कहीं बारिश में फँसी होती और वहीं मर जाती। शायद किसी दिन मैं ही तुम्हें मार दूँ।"

ये कहकर वह वहाँ से चली गई, जैसे उसने जो कहा वह कोई ग़ौर करने वाली बात नहीं थी। उसकी बातों से मुझे धक्का-सा लगा था। पता नहीं लोग अंधे बनकर क्यों रहना चाहते हैं? वह सच का सामना करने से डरते क्यों है? मैं यह नहीं कहती कि उसके साथ जो हुआ वह ठीक हुआ, लेकिन इस बात की क्या गारंटी थी कि उसे वह फ़िल्म मिलने के बाद उसका करियर सिर्फ़ उड़ान ही भरता? क्यों लोग अपनी असफलताओं और कमियों का दोष दूसरों पर मढ़ते हैं? या फिर किसी एक को ज़िम्मेदार मान लेने से ख़ुद का दुख कम हो जाता है? क्यों लोग सोचने को वक़्त नहीं देना चाहते? क्यों लोग हमेशा आसान रास्ता ढूँढ़ते है? किसी से नफ़रत करना बहुत आसान होता है परंतु उस नफ़रत की सही वजह ढूँढ़ना बहुत मुश्किल। रीना ने मुझसे नफ़रत तो कर ली थी, लेकिन नफ़रत की सही वजह आज

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

तक उसके पास नहीं थी। एक समकालीन अभिनेत्री के रूप में मेरी सफलता से उसकी जलन मुझे समझ आती है, परंतु फ़िल्म न मिलने का ज़िम्मेदार वह मुझे मानती है, यह मुझे कभी समझ नहीं आया।

अगली बार शूटिंग पर जब हम मिले तो रीना का व्यवहार बिलकुल सामान्य था। लेकिन मेरी तरफ़ से कुछ भी पहले जैसा नहीं हो पाया। शायद मैं उसके जितनी अच्छी एक्ट्रेस नहीं थी। उसके बाद हमने कोई और फ़िल्म साथ में नहीं की थी। मुझे नहीं पता उसका बाद में क्या हुआ था। हाँ कुछ महीने पहले सोशल मीडिया पर एक ख़बर की हेडलाइन में अपना नाम देखकर मेरा ध्यान उस ख़बर पर गया था। हेडलाइन थी-

'मीरा की सह कलाकार रह चुकी रीना चाहती हैं उन्हें एक ख़ून माफ़ हो।'

असल में वह उस साल बिग बॉस की एक कंटेस्टेंट थी। तब एक टास्क में उससे उसकी एक इच्छा पूछी गई, तो उसका जवाब ये था। क्या ये बात उसने मेरे लिए कही थी? क्या आज चौदह साल बाद भी उसकी नफ़रत मेरे लिए कम नहीं हुई? क्या वह मेरी हत्या कर सकती है?

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मरीन ड्राइव

बारिश बंद हो गई। आसमान में बादलों की लुका-छुपी अभी तक चल रही है। चाँद और तारे अपनी बारी आने का कहीं इंतज़ार कर रहे होंगे। वैसे मुझे पसंद है रात के आसमान को देखना। चुपचाप-सा, जाने कितने राज़ छुपाए भोला-सा नज़र आता है। जिस पल रात सुबह में बदल रही होती है उस पल को देखकर ऐसा लगता है जैसे पूरा आसमान हमसे कहना चाहता हो कि कुछ भी हमेशा के लिए नहीं रहता। हर रात की मंज़िल सुबह है। हर दुख का अंत सुख है। और सुख की भी एक निश्चित उम्र है। अभी कुछ देर में सुबह होने वाली है। ऐसे ही एक वक़्त पर मैं संदीप मित्तल के साथ मरीन ड्राइव पर सनराइज़ देखने रुकी थी। हम एक पुरस्कार समारोह के बाद होने वाली पार्टी से वापस आ रहे थे। हम सूरज उगने का इंतज़ार करने लगे। उसने आसमान की तरफ़ देखते हुए कहा, "लाइफ़ में कुछ चीज़ें कितनी प्रिडिक्टेबल होती हैं! हर दिन सुबह के साथ शुरू होता है और शाम पर ख़त्म हो जाता है।"

"हाँ, ये रोज़ होता है और हम रोज़ इनका इंतज़ार करते हैं।"

"इंतज़ार भी तो उन्हीं का होता है जो लौटकर आते हैं।"

हम बात एक-दूसरे से कर रहे थे पर हमारी नज़रें आसमान पर टिकी हुई थीं।

"मुझे तो अंसर्टेनिटी पसंद है जो अपने होने से मुझे हैरान कर दे।"

"Like a story! कब, कहाँ, कैसे शुरू हो जाए कोई नहीं कह सकता।" उसने मेरी आँखों में अपनी नज़र जमाते हुए कहा।

"Beginning of anything is my kind of thing."

हम दोनों की नज़रें एक-दूसरे पर ठहर गईं। हम दोनों ही एक-दूसरे की आँखों में उस संगीत को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे, जो हमारे दिलों में धड़कनों के साथ बह रहा था। और फिर जिस पल रात सुबह में बदल रही थी हमारे होंठ एक-दूसरे के होंठों को चख रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे हम दोनों एक घटना थी, जो उस वक़्त के साथ उस जगह पर घट गई थी। वह हम दोनों का एक-दूसरे के साथ पहला चुंबन था। उस दिन देश में कोई प्रमुख घटना नहीं घटी थी। हमारा एक-दूसरे को चूमना ही उस दिन की ख़ास बात थी।

रात टूटकर सुबह में बिखर चुकी है। बिखरी हुई किरणें हर चीज़ को छूकर उनमें जान फूँक रही हैं। मेरे मरने के बाद ये पहली सुबह है। दूर एक नारियल वाले का स्टॉल नज़र आ रहा है। सुबह उठते ही मैं सबसे पहले नारियल पानी पीती थी। अभी तो पता नहीं मैं ख़ुद को जागा हुआ बोलूँ या कहीं लंबी नींद में खोया हुआ!

मुझे लगता है मुझे ख़ुद शहर में घूमकर देखना चाहिए कि क्या हो रहा है। यहाँ बैठे रहने से मुझे अपने सवालों के जवाब नहीं मिलेंगे। पर मुझे इस जगह को छोड़कर जाते हुए भी डर-सा लग रहा है। अगर इस जगह ने मुझे वापस आने पर नहीं अपनाया तो? मेरे शिमला वाले घर की तरह मुझसे मुँह मोड़ लिया तो? हमें हमेशा चुनना क्यों पड़ता है?

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मुंबई शहर आज भी वैसे ही जागा है जैसे वह रोज़ जागता है। लोग अपने घरों से निकलकर वैसे ही काम पर जा रहे हैं, जैसे रोज़ जाते हैं। सच ही है किसी के होने ना होने से इस दुनिया पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

मीरा की मौत हत्या या आत्महत्या?

मीरा की अपने ही घर में रहस्यमय तरीक़े से मौत!

पूर्व अभिनेत्री मीरा अब नहीं रही...

अख़बार के स्टॉल पर जब मैंने ये हेडलाइंस पढ़ी तो मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ। शायद मैंने अपनी मौत को स्वीकार कर लिया है। हर कोई मेरे बारे में ही बात कर रहा है। दुकानों पर लगे टीवी पर सिर्फ़ मेरी ख़बरें चल रही हैं। एंकर आदित्य महाजन के साथ फ़ोन पर है।

एंकर: आदित्य जी मीरा आपकी सह कलाकार रह चुकी थीं। आप दोनों ने साथ में कई फ़िल्में की हैं। लेकिन आप लोगों के निजी तौर पर ताल्लुक़ात कभी अच्छे नहीं रहे। आज आपको उनकी मौत की ख़बर सुनकर कैसा लगा?

आदित्य: ये आप कैसा सवाल कर रहे हैं? किसी की भी मौत की ख़बर सुनकर कैसा लगेगा? मैं अब तक विश्वास नहीं कर पा रहा हूँ। मीरा ऐसे ही कैसे जा सकती है? मैं अभी तक सदमे में हूँ। मीरा उन लोगों में से एक थी जिसके साथ मुझे काम करके सबसे ज़्यादा मज़ा आया। She was brilliant at her work.

कुछ लोग तुम्हारी उम्मीदों के बिलकुल विपरीत होते हैं। मुझे इतना तो विश्वास था कि वह मेरे बारे में कुछ ग़लत नहीं कहेगा। मगर कुछ ऐसा बोलेगा मैंने सोचा नहीं था।

इसके बाद एंकर ने कई और लोगों से सवाल किए। शाहरुख़, सलमान, आमिर, अमित जी, काजोल, ऐश्वर्या, माधुरी, साथ में और भी कई बड़े सुपरस्टार के उनके द्वारा सोशल मीडिया पर पोस्ट किए शोक भरे संदेश पढ़कर सुनाए।

अब टीवी पर उसी राजनीतिक पार्टी का लीडर लाइव है जिसकी पार्टी से मैं चुनाव लड़ने वाली थी, जिसका नाम विनय कुमार है। देखने में बिलकुल परेश रावल लगता है।

मीरा जी की मौत सचमुच हम सबके लिए एक दुखद घटना है। अभी हम कल ही तो मिले थे उनसे। वह सिर्फ़ हमारी पार्टी की तरफ़ से चुनाव ही नहीं लड़ने वाली थीं बल्कि हमारे परिवार का हिस्सा भी बनने जा रही थीं। कल ही उन्होंने हमारे बेटे से शादी करने का प्रस्ताव स्वीकार किया था। हम नहीं जानते थे शादी की ख़बर की जगह दुनिया को उनकी मौत की ख़बर मिलेगी। अब जब तक हम उनके हत्यारों को पकड़ नहीं लेते तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।

इस ख़बर ने लोगों के बीच सनसनी पैदा कर दी। पहले तो मीरा शादी करने वाली है यही एक बहुत बड़ी ख़बर थी। दूसरा, वह विनय कुमार के बेटे से शादी करने वाली थी इस ख़बर ने उन्हें चौंका दिया था। क्योंकि विनय कुमार के बेटे से बड़ा हरामी कोई नहीं हो सकता था। लोगों के लिए मेरी ज़िंदगी पहेली बनती जा रही है। मेरी मौत का सच क्या है ये पुलिस के लिए भी बता पाना मुश्किल हो रहा है। ख़बरों से पता लगा कि राजीव, रानी, राज़ी और मेरी माँ से पुलिस पूछताछ कर चुकी है। और मेरा अंतिम संस्कार आज शाम चार बजे होना

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

तय हुआ है। कल शाम चार बजे ही मुझे मेरे मरने का पता चला था। आज शाम चार बजे ही ये मेरे शरीर का दाह संस्कार कर देंगे। मेरा आज इस दुनिया से अस्तित्व हमेशा-हमेशा के लिए ख़त्म हो जाएगा। क्या मुझे अपना अंतिम संस्कार देखने जाना चाहिए? मेरे पास तो यहाँ सफ़ेद कपड़े हैं ही नहीं। मैं तो अब तक रात के कपड़ों में ही हूँ। वैसे क्या फ़र्क़ पड़ता है, कोई मुझे नहीं देख सकता! आज कोई मुझे अपने कैमरे में क़ैद नहीं कर सकता। वैसे कितने दुख की बात है, इन लोगों को ऐसे समय पर भी ये पड़ी होती है कि हम लोगों ने क्या पहना है, हम किसके साथ आए हैं, हमारे चेहरे पर क्या भाव हैं! एक बार ऐसी जगह पर एक रिपोर्टर ने मुझसे पूछा था कि आपकी आज की ड्रेस किसने डिज़ाइन की है? और वह ड्रेस कुछ और नहीं सादा सफ़ेद कुर्ता और चूड़ीदार पजामी थी।

न्यूज़ चैनल वाले इस चर्चा में लगे हैं कि संदीप मित्तल ने अब तक मीरा के लिए कुछ क्यों नहीं कहा।

ये क्या अचानक से रिक्कू जी टीवी पर कैसे आ गए?

एंकर: मीरा के मैनेजर रह चुके राकेश नाथ शर्मा उर्फ़ रिक्कू जी का विवादास्पद बयान। इस बयान को सुनकर आप भी चौंक जाएँगे। आज तक हम जो भी मीरा के बारे में सोचते आए, क्या मीरा वैसी ही थीं? सुनिए रिक्कू जी ने क्या कहा।

रिक्कू जी: मीरा के साथ मैंने लगभग पंद्रह साल काम किया था। मैं उसके सभी राज़ से वाक़िफ़ भी था। पर मुझे उसकी निजी ज़िंदगी से कोई मतलब नहीं था। बस एक बात छुपाने के लिए मैं ख़ुद को कभी माफ़ नहीं कर पाया। आज जब मीरा की मौत का सुना तो मुझे लगा यही सही वक़्त है इस बात को बताने का। मैं नहीं जानता मीरा की हत्या हुई या उसने ख़ुद को मार दिया। लेकिन वह ख़ुद को मारने के लिए सक्षम थी। उसका दिमाग़ी संतुलन पूरी तरह ठीक नहीं था। वह कब क्या कर जाए उसे ख़ुद नहीं पता होता था। अविनाश लूथरा ने उसके साथ उस दिन कुछ नहीं किया था। वह चाहे कितना भी बड़ा गुनहगार रहा हो लेकिन उस दिन उसकी कोई ग़लती नहीं थी। उस दिन फ़िल्म की डील को लेकर उसने मीरा की सभी शर्तें नहीं मानी तो मीरा ने उसे फँसाने के लिए ये सब नाटक किया। और भी ऐसी कई बातें हैं मगर अब जो इस दुनिया से चला गया उसे क्यों बदनाम किया जाए! मीरा ने बॉलीवुड को बहुत अच्छा वक़्त दिया है। हमें बस उसे याद करके मीरा की आत्मा की शांति की दुआ करनी चाहिए।

वाह रिक्कू जी! ख़ुद के चरित्र पर आँच न आए उससे पहले आपने मेरे चरित्र को शक के घेरे में डाल दिया। कहीं सचमुच आपने ही तो मुझे ज़हर नहीं दिया?

अब तक तो सोशल मीडिया पर लोगों ने मुझे ट्रोल करना शुरू भी कर दिया होगा। जो मेरे सच्चे प्रंशसक हैं, वो उनको जवाब दे रहे होंगे। सोशल मीडिया भी एक अजीब जगह है। दुनिया के सारे युद्ध लोग यहीं बैठकर लड़ लेते हैं। यहीं से लोगों को एक दिन आसमान पर चढ़ा देते हैं। यहीं से ज़मीन पर गिराने में भी ज़रा वक़्त नहीं लगाते।

एक न्यूज़ चैनल पर डिबेट भी शुरू हो गई। डिबेट इस बात की कि किसी ग़लत व्यक्ति को सज़ा दिलाने के लिए क्या ग़लत तरीक़ा अपनाना सही है? बीच-बीच में वह पब्लिक ओपिनियन की फ़ुटेज भी दिखा रहे हैं। कुछ लोग मेरे पक्ष में बोल रहे हैं तो कुछ लोगों का

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मानना है कि मीरा अपनी इस सोच के साथ समाज के लिए ख़तरनाक भी साबित हो सकती थी। तो कोई कह रहा था कि एक को उसके जुर्म की सज़ा दिलाने के लिए दूसरा भी एक जुर्म कर दे तो वह भी किसी गुनहगार से कम नहीं।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

अंतिम संस्कार

शाम के चार बज रहे हैं। श्मशान घाट पर मेरा मृत शरीर अपनी आख़िरी यात्रा पर जाने को तैयार हैं। रिक्कू जी वाली ख़बर के बाद मुझे लगा था यहाँ कोई नहीं आएगा। या आएँगे भी तो बहुत कम लोग। लेकिन आज यहाँ बॉलीवुड का हर जाना-माना चेहरा नज़र आ रहा है। संदीप मित्तल भी यहाँ है। माँ मेरी कितनी बूढ़ी लगने लगी है! मेरी विदाई एक स्टार की तरह ही हो रही है। लेकिन मुझे अग्नि कौन देगा?

जैसे ही पंडित जी मेरी चिता को अग्नि देने लगे मेरी माँ ने उन्हें रोक लिया और कहा मेरी बेटी अनाथ नहीं थी। फिर ख़ुद मेरी चिता को आग लगाई। जब कोई मर जाता है तभी क्यों लोगों को अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास होता है? उनके साथ ग़लत करने का पछतावा होता है? तब क्या प्रायश्चित करना ज़्यादा आसान हो जाता है? या फिर दुखी दिखने में क्या जाता है?

शाम धीरे-धीरे ढल रही है। कल यही वक़्त था जब मैं यहाँ आई थी। तब मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि मेरे साथ क्या हो गया। आज मैं ख़ुद की चिता जलते देखकर आई हूँ। आज मुझे मरे हुए एक दिन हो गया। कल दो दिन हो जाएँगे। परसों तीन दिन। फिर एक हफ़्ता, एक महीना, एक साल कब हो जाएगा पता भी नहीं चलेगा। धीरे-धीरे मैं लोगों की यादों में फीकी पड़ती जाऊँगी। कल वहाँ मेरी जगह कोई और ले लेगा। उन्हें मैं तभी याद आऊँगी जब वह याद करना चाहेंगे। जैसे गणतंत्र दिवस पर हम याद करते हैं कि इस दिन हमारा संविधान बना था। वैसे भी बंदा क्या-क्या याद रखे! भूल जाना इंसान को मिला सबसे बड़ा वरदान है।

आज अपनी विदाई देखकर मुझे वह दिन याद आ रहा है जब मेरा स्वागत इस दुनिया में किया गया था। मैंने अपनी दादी से अपने बचपन की इतनी बार कहानियाँ सुनी हैं कि मुझे लगता है जैसे मैंने मेरा बचपन ठीक वैसे ही देखा है जैसे संजय ने महाभारत का युद्ध देखा था।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

शिमला, दी बिगनिंग

शिमला, हिमाचल की गोद में बसा एक छोटा-सा पहाड़ी इलाक़ा है जिसे हिमाचल की राजधानी के नाम से भी जाना जाता है। इस जगह ने, यहाँ के मौसम ने, अँग्रेज़ों का भी दिल जीत लिया था। जिस वजह से उन्होंने इसे अपना समर कैपिटल घोषित कर दिया था। शिमला का नाम एक हिंदू देवी श्यामला देवी के नाम पर रखा गया था। जैसे मेरा नाम मीठी इसलिए रखा गया था क्योंकि मेरे दादा जी को मिठाई बहुत पसंद थी। पिछली तीन पीढ़ी से हमारे ख़ानदान में कोई लड़की पैदा नहीं हुई थी। हर पीढ़ी में सिर्फ़ एक लड़का था। जब मेरा जन्म हुआ तो मेरे दादा जी इतने ख़ुश हो गए थे कि उन्होंने अपनी सबसे पसंदीदा चीज़ के ऊपर मेरा नाम रख दिया। वह स्वतंत्रता सेनानी रह चुके थे। मेरी दादी से उनका दूसरा विवाह था। मेरी दादी उनसे लगभग आधी उम्र की थी। मेरे जन्म के लगभग चार साल बाद उनका निधन हो गया था। वह क्रिकेट के बहुत शौक़ीन थे। जिस दिन वह मरे उस दिन इंडिया ने अपना पहला वर्ल्ड कप जीता था। जिसे देखकर उनके मुँह से यही शब्द निकले थे कि अब चला भी जाऊँ तो ग़म नहीं। उसी रात वह चल बसे।

जिस दिन मेरा जन्म होने वाला था उस दिन बहुत तेज़ बारिश हो रही थी। वह जुलाई का महीना था। साल 1979 था। महीना शुरू हुए अभी सिर्फ़ सात दिन हुए थे। तब देश में कांग्रेस की सरकार थी। मेरे दादा जी कांग्रेसी विचारधारा के बहुत बड़े समर्थक थे। इसीलिए मेरे बाबा भी थे। हर चीज़ की तरह किस पार्टी को वोट दिया जाएगा ये भी विरासत में मिला था। शिमला के संकरे और ऊँचे-नीचे रास्तों की वजह से माँ को अस्पताल ले जाना मुमकिन नहीं था, इसीलिए घर में दाई को बुलाया गया। और इस तरह शाम के चार बजे मेरा जन्म हुआ। मेरे जन्म लेते ही दादाजी ने पूरे मोहल्ले में मिठाई बँटवा दी थी। मेरी दादी किसी भी आने-जाने वालों को मेरा चेहरा नहीं दिखा रही थी। उन्हें डर था कहीं मुझे किसी की नज़र न लग जाए। उसी दिन मेरे बाबा को पता चला कि उनकी प्रोमोशन होने के साथ-साथ उनकी तनख़्वाह भी दो सौ रुपये बढ़कर बारह सौ रुपये हो गई है। मेरे बाबा हिमाचल बिजली विभाग में कार्यरत थे। तीन दिन बाद जब उन्हें तनख़्वाह मिली तो वह डायनोरा का टीवी ख़रीद लाए जो एक इनबिल्ट कैबिनेट के साथ आया करता था, जिसके चैनल वाले नॉब को घुमाने में मुझे बहुत मज़ा आता था। इससे पहले हमारे घर में मर्फ़ी का रेडियो था जिसे दादा जी ने अपने क्रिकेट के शौक़ के चलते ख़रीदा था। यूँ तो बाबा टीवी पहले भी ख़रीद सकते थे लेकिन टीवी न ख़रीदकर वह दादाजी से अपनी नाराज़गी दिखाते थे। मेरे बाबा को एक्टिंग का बहुत शौक़ था। कॉलेज के ज़माने में उन्होंने कई बार कॉलेज कल्चरल एक्टिविटी में होने वाले नाटकों में हिस्सा लिया था। वह फ़िल्मों में अपनी क़िस्मत आज़माना चाहते थे। वह रिट्ज़ सिनेमा हाल, जो शिमला का सबसे पुराना सिनेमा हाल है, में लगने वाली हर फ़िल्म देखा करते थे। यही नहीं रिज और माल रोड के मध्य स्थित गेटी थियेटर जो कभी मशहूर इंग्लिश आर्किटेक्ट हेनरी इरविन के द्वारा बनाई गई बिल्डिंग टाउन हॉल का हिस्सा हुआ करता था, उसमें होने वाला हर नाटक भी देखने जाते थे। आज

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

एशिया में ये इकलौता गोथिक स्टाइल थियेटर बचा है। लेकिन जैसा उस ज़माने में हुआ करता था हमारे घर में भी वैसा ही हुआ। दादाजी को बाबा का एक्टिंग से जुड़े किसी भी विषय पर दिलचस्पी लेना पसंद नहीं था। मेरे बाबा में उनके ख़िलाफ़ जाने की हिम्मत नहीं थी। या फिर अपने सपने को पूरा करने के लिए जितनी आग चाहिए होती है उतनी आग बाबा में नहीं थी। इसीलिए वह पढ़-लिखकर अपने बाबा के लायक़ बेटे बन गए। मगर उन्होंने फ़िल्में देखना छोड़ दिया था। उस दिन से उन दोनों के बीच में एक शीत युद्ध की भी शुरुआत हो गई थी।

जब मैं पैदा हुई तो बाबा मेरे पैदा होने की ख़ुशी में टीवी ले आए ताकि फ़िल्में देख सकें। मगर दादा जी से उनकी नाराज़गी यूँ ही बरक़रार रही। तबसे वह मेरे हर जन्मदिन पर ख़ुद को वह चीज़ दिया करते थे जो उन्हें ख़ुद के लिए चाहिए होती थी। जैसे मेरे पहले जन्मदिन पर उन्होंने कोनिका का कैमरा ख़रीदा। जिसमें 36 तस्वीरों का रोल डाला जाता था। इससे उन्होंने मेरी बहुत सारी तस्वीरें ली थीं। लेकिन कैमरा ख़रीदने की वजह मैं नहीं थी। उन्हें प्रकृति से बहुत प्रेम था। वह रोज़ सुबह पाँच बजे उठते थे ताकि सुबह की सैर पे जा सकें। मेरे होने के बाद अचानक उन्हें प्रकृति को कैमरे में क़ैद करने की धुन सवार हो गई और इसी के चलते मेरे जन्मदिन पर उन्होंने ख़ुद को कैमरा तोहफ़े में दे दिया। फिर दूसरे जन्मदिन पर महँगा पैन ख़रीद लाए और तीसरे पर महँगे जूते और चौथे पर वीसीआर। जैसे मेरे जन्म के बाद उन्होंने फिर से अपने लिए जीना शुरू कर दिया था। जब पाँचवाँ जन्मदिन आया तब तक मुझे गिफ़्ट का मतलब समझ आने लगा था और मैंने ज़िद करके अपने लिए साइकिल ली थी। चाहे उन्होंने अपनी ज़िंदगी जीना शुरू कर दिया था परंतु उनकी दादाजी के साथ तब तक ठनी रही जब तक दादाजी अपने आख़िरी पल तक नहीं पहुँच गए।

दादाजी उस दिन इंडिया के वर्ल्ड कप जीतने की ख़ुशी में व्हिस्की का पैग लगा रहे थे। बाबा वीसीआर पर कोई फ़िल्म देख रहे थे। दादा अचानक बाबा से बोले, "पप्पू, आज तू बाबू मोशाय वाला डायलॉग बोल के सुना दे।"

वैसे तो मेरे बाबा का नाम अशोक सहगल था लेकिन मेरे दादाजी उन्हें प्यार से पप्पू बुलाते थे जो उन्होंने उनके शीत युद्ध शुरू होने के बाद से बुलाना बंद कर दिया था। आज दादा के मुँह से अपना नाम सुनकर बाबा दादा के पास जाकर बैठ गए जैसे उन्हें इसी दिन का इंतज़ार था। फिर बाबा ने उन्हें आनंद और शोले फ़िल्म के बहुत सारे डायलॉग सुनाए।

"बाबू मोशाय, ज़िंदगी और मौत ऊपर वाले के हाथ है। उसे ना तो आप बदल सकते हैं और ना मैं। हम सब तो रंगमंच की कठपुतलियाँ है जिसकी डोर ऊपर वाले की उँगलियों में बँधी है।"

"साला ज़िंदगी थी तो मरा नहीं, अब मर गया, तो मैं ही नहीं।"

"कब, कौन, कैसे उठेगा यह कोई नहीं कह सकता।"

ये डायलॉग दादाजी ने बोला। ये सुनकर बाबा सहम गए। और उन्होंने मूड को हल्का करने के लिए शोले फ़िल्म के डायलॉग सुनाने शुरू कर दिए।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"यहाँ से 50-50 कोस दूर जब कोई बच्चा रोता है, तो माँ उसे कहती है बेटा सो जा, नहीं तो गब्बर आ जाएगा।"

"जब तक तेरे पैर चलेंगे उसकी साँस चलेगी, तेरे पैर रुके तो ये बंदूक़ चलेगी।"

"ये हाथ हमको दे दे ठाकुर!"

बाबा डायलॉग सुनाते हुए ऐसे लग रहे थे जैसे वह किसी और ही दुनिया में हैं। दादाजी उन्हें अभिनय करते देखे जा रहे थे। फिर उन्होंने भी एक डायलॉग बोला जिस पर बाबा और दादा ने साथ मिलकर ठहाके लगाए।

"जब तक तेरे ये डायलॉग चलेंगे तब तक मेरा पैग चलेगा।"

उस पल के बाद दोनों के बीच की सारी कड़वाहट उनकी आँखों के पानी में बह गई थीं। सालों के ज़ंग लगे रिश्ते की डोर में जैसे तेल पड़ गया हो। वो साउंड प्रूफ़ दीवार जो उन दोनों के बीच में खड़ी हो गई थी वह दोनों के दिलों से उठने वाले जज़्बात की आँधी से एक रेत से बने टीले की तरह ढह गई। फिर दोनों ने मिलकर एक-एक पैग लगाया। तब बाबा ने उनसे कहा कि उन्हें दादा और दादी अमिताभ बच्चन और जया भादुड़ी जैसे लगते हैं। क्योंकि दादा लंबे और दादी नाटी हैं। ये सुनकर दादा मुस्कुराए और बाबा से बोले, "पप्पू, तू बहुत बढ़िया कलाकार है।"

ये कहकर दादा ने बाबा के सिर पर हाथ फेरा और सोने चले गए।

अगले दिन दादा सोकर नहीं उठे। बाबा ने फिर से हमारे लिए जीना शुरू कर दिया।

हमारा घर शिमला के अप्पर कैथू में स्थित था। एक बहुत पुराना बना हुआ लकड़ी का घर जिसे दादाजी ने अपनी रिटायरमेंट के बाद ख़रीदा था। मेरी माँ इसी घर में शादी करके आई थी। मेरी माँ को मेरे बाबा से प्यार हो गया था तो मेरे बाबा ने कहा चलो शादी करनी ही है तो तुमसे कर लेते हैं। मेरी माँ ने बीएड किया था, ये सोचकर कि टीचर बनेंगी, परंतु बाबा के प्यार में पड़ जाने के बाद उन्होंने अपने टीचर बनने के सपने को भुला दिया था और हाउसवाइफ़ बन गई थी। उन्हें बाबा देवानंद के बड़े भाई विजय आनंद के जैसे लगते थे और ख़ुद को वह नीतू सिंह की कार्बन कॉपी कहतीं। जब उनकी शादी हुई तो मेरे बाबा की उम्र छब्बीस और माँ की चौबीस वर्ष थी। मेरा जन्म उनकी शादी के दो साल बाद हुआ था। कुल मिलाकर हम सब अपने-अपने रोल में एक-दूसरे के साथ ख़ुश थे।

हर रविवार हम चारों माल रोड और रिज पर घूमने जाया करते थे। कभी हम छोटे शिमला से दूर दिखती टॉय ट्रेन देखा करते तो कभी लक्कड़ बाज़ार से बाबा मुझे बहुत सारे खिलौने और मेरी पसंद की चीज़ें दिलवाते।

शिमला का मौसम पूरे साल ठंडा रहता है। गर्मियों में ज़रा-सी गर्मी बढ़ जाए तो बारिश हो जाती है। यहाँ पर देवदार के वृक्ष बहुत पाए जाते हैं। बहुत ज़्यादा आँधी तूफ़ान हो तो यह वृक्ष टूटकर गिर जाते हैं। लेकिन इनकी लकड़ी बहुत मज़बूत होती है। पूरे साल ठंड रहने की वजह से घर को गर्म करने के लिए मैं बाबा के साथ अक्सर लकड़ियाँ काटने जाती थी। वह पल मेरे बाबा के साथ सबसे निजी और ख़ूबसूरत होते थे। उस वक़्त बाबा मुझसे मेरे स्कूल के बारे में, मेरे दोस्तों के बारे में, मेरी ज़रूरतों के बारे में पूछा करते थे। मैं उनको बड़े चाव से सारी बातें बताया करती।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

दादा की मौत के बाद बाबा ने फिर से फ़िल्में देखना छोड़ दिया था। अब वह सिर्फ़ वही करते थे जो हमें पसंद था। यह पता ही नहीं चलता था कि वह नाराज़ हैं या उन्हें कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। दादी बताती थीं जब 1984 में इंदिरा गाँधी की उनके सिख बॉडीगार्ड ने गोली मारकर हत्या कर दी थी तब पूरे देश में कितने ही सिख दंगों में मारे गए थे। हमारे घर से दो घर छोड़कर एक बूढ़ा सिख जोड़ा रहा करता था। वह सुरक्षित रहें इसलिए दादी उन्हें अपने घर ले आई थीं। बाबा दादा की तरह ही पक्के कांग्रेसी थे। दादी को डर था कहीं बाबा उन्हें देखकर ग़ुस्सा न हो जाए। पर बाबा ने कुछ नहीं बोला, जैसे उन्हें कोई फ़र्क़ ही नहीं पड़ता था। कोई कुछ भी करे वह किसी से कुछ नहीं कहते थे। बाबा ज़िंदा होते हुए भी मरे हुए लोगों जैसे जी रहे थे।

जब मैं छह साल की थी मेरी दादी ने मुझे एक कपड़े की गुड़िया बनाकर दी थी। दादी ने ऊन से उसके बहुत लंबे बाल बनाए थे। जो बिलकुल मेरे जैसे थे। उन्होंने वह गुड़िया मुझे देते हुए कहा था कि ये गुड़िया मैं तुम्हें इसलिए नहीं दे रही ताकि इसका ख़याल रखते-रखते तुम दूसरों का ख़याल रखना सीख जाओ। इस गुड़िया के रूप में मैंने तुम्हें बनाया है। अब इसका ख़याल वैसे ही रखो जैसे तुम ख़ुद का रखना चाहती हो। इसको वैसे ही आकार दो जैसे तुम ख़ुद की ज़िंदगी को देना चाहती हो। मैंने तब भी उसकी शादी किसी गुड्डे से कभी नहीं करवाई थी। तब भी मैं यही सोचती थी कि अगर मैंने अपनी गुड़िया को किसी और को सौंप दिया तो वह कभी उसका मेरे जैसा ख़याल नहीं रख पाएगा। वह गुड़िया अब भी मेरे अपार्टमेंट में होगी।

मेरी स्कूल जाने की उम्र हुई तो बाबा ने मेरा दाख़िला शिमला के सबसे अच्छे स्कूल लोरेटो में करा दिया था। वह स्कूल शिमला में अँग्रेज़ों के ज़माने से ही है। मैं पढ़ने में बहुत तेज़ थी। उस स्कूल में एक बहुत बड़ी लाइब्रेरी थी। वहीं से मुझे किताबें पढ़ने का शौक़ चढ़ा था। अक्सर वहाँ लड़कियाँ मेरे नाम का मज़ाक़ उड़ाया करती थीं। बोलतीं मीठी तो चीज़ें होती हैं नाम नहीं। इस बात पर वे सब आपस में मिलकर ज़ोर-ज़ोर से हँसती थीं। माँ-बाबा कहते कि अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारा नाम बदल देते हैं। लेकिन जितना वो मेरा मज़ाक़ उड़ातीं, उतना ही मुझे अपना नाम अच्छा लगता था। मैं सोचती थी कि मुझमें कुछ ऐसी बात है जो उनमें नहीं। और जो चीज़ हमारे पास नहीं होती उसका या तो हम मज़ाक़ उड़ाते हैं या ज़रूरत नहीं है कहकर भूल जाते हैं। भीड़ से अलग दिखाई देने वाली चीज़ें दुनिया के लिए विचित्र और अजीबो-ग़रीब ही होती हैं। मुझे भीड़ से अलग दिखना अच्छा लगता था।

उस दिन मौसम बहुत अच्छा था। हम सब ने झाखू मंदिर जाने का प्लान बनाया। वहाँ हनुमान जी विराजते हैं। उस जगह बहुत बंदर होते हैं। मैं जब भी वहाँ जाती थी हर बार बंदर मुझसे प्रसाद का पैकेट लेकर भाग जाते थे। उस दिन माँ ने मुझे पैंट और टी-शर्ट पहनाया था। उस वक़्त मेरी उम्र आठ साल की थी। उस मंदिर तक जाने के लिए थोड़ी चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। कुछ मेरी ही उम्र के लड़के ऊपर तक जाने के लिए दौड़ लगाने लगे। मैं भी उनको देखकर उनके साथ दौड़ में शामिल हो गई। वो मुझे भागते हुए देखकर कहने लगे कि यह लड़कियों के बस की बात नहीं। मैंने कहा, नहीं लड़कियाँ लड़कों से हर बात में बेस्ट होती हैं। फिर उन्होंने हँसते हुए कहा, अगर ऐसा है तो तुमने हमारे जैसे कपड़े क्यों

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

पहने हैं? हालाँकि ये कोई बड़ी बात नहीं थी पर मुझे बहुत सही लगी। हम लड़कियाँ ही क्यों उनके जैसे कपड़े पहनती हैं? अगर कपड़ों का कोई जेंडर नहीं होता तो वो हम जैसे कपड़े क्यों नहीं पहनते? लड़कों के कपड़े यूनिवर्सल और लड़कियों के एक्सक्लूसिव क्यों? क्या हम जैसा दिखने में उनकी इज़्ज़त कम होती है? मैं ये नहीं कहती जो मैं सोच रही थी वह सही ही था। या किसी को भी उनके जैसे कपड़े नहीं पहनने चाहिए। बस मेरे मन में ये सवाल उठे और उस दिन वह मज़ाक़ में कहीं हुई बात मुझे इस तरह चुभी कि उस दिन के बाद मैंने लड़कों की तरह दिखना और उनसे किसी भी तरह की प्रतियोगिता करना बंद कर दिया था। यहाँ बात सिर्फ़ कपड़ों की नहीं थी। इस घटना ने मुझे ये एहसास दिला दिया था कि अगर हम लड़कों के साथ क़दम-से-क़दम लड़की बनकर ही मिलाएँगे तभी सही मायनों में आगे बढ़ पाएँगे। वरना लड़कों की एक नयी क़िस्म की फ़ौज तैयार हो जाएगी।

लड़का-लड़की की बात पर मुझे एक और क़िस्सा याद आ गया। एक बार एक जाने-माने निर्माता करण भट्ट मेरे पास एक फ़िल्म का प्रस्ताव लेकर आए। मगर जो तारीख़ें वह मुझसे माँग रहे थे उस समय को मैंने बहुत पहले से ही अपने लिए बचाकर रखा हुआ था। कम-से-कम छह महीने के लिए मैं दुनिया की सैर पर जाना चाहती थी। मैंने स्क्रिप्ट पढ़ी तो मुझे उसमें इतना कुछ ख़ास नज़र नहीं आया, जिसके लिए मैं अपना प्लान रद्द करती। ऊपर से जब उन्होंने मुझे बताया कि फ़िल्म के हीरो के कहने पर वह मेरे पास फ़िल्म का ऑफ़र लेकर आए हैं तो मेरा मन उस फ़िल्म से पूरी तरह हट गया था। मुझे काम के लिए किसी की सिफ़ारिश की ज़रूरत नहीं थी। मैंने उन्हें फ़िल्म के लिए यह कहकर ना कर दिया था कि मुझे स्क्रिप्ट पसंद नहीं आई। रिक्कू जी इस बात से मुझसे काफ़ी दिन तक नाराज़ रहे थे। इस बात का ज़िक्र करण भट्ट ने अपने एक इंटरव्यू में किया था-

एक हीरोइन का काम फ़िल्मों में सिर्फ़ ग्लैमर और हीरो का लव इंटरेस्ट दिखाने का होता है। इसके बावजूद मैंने मीरा को हीरो के बराबर पैसे ऑफ़र किए थे। तब भी उसने फ़िल्म करने से साफ़ इनकार कर दिया। मैं नहीं कह रहा मगर सच तो यही है की एक हीरोइन के करियर की उम्र बहुत छोटी होती है। इसलिए इतना भी घमंड करना अच्छा नहीं। आज जिस सफलता के मुक़ाम पर वह है, वहाँ कल कोई और होगा। मुझे नहीं लगता अब मैं मीरा के साथ भविष्य में किसी और फ़िल्म पर काम करने के बारे में सोचूँगा भी।

इस इंटरव्यू के दो दिन बाद मैं एक जज बनकर मिस इंडिया कॉन्टेस्ट के समारोह पर गई। वहाँ एक जर्नलिस्ट ने मुझसे करण भट्ट की कॉन्ट्रोवर्सी के बारे में सवाल किया। मैं मेरा पक्ष सुनाना चाहती थी। मैं भी मौक़ा ढूँढ़ रही थी करण भट्ट को जवाब देने का। मैंने कहा,

"पहले तो यह कोई कॉन्ट्रोवर्सी नहीं थी। मुझे स्क्रिप्ट पसंद नहीं आई। मैंने ना कर दिया। इस फ़िल्म में हीरोइन का किरदार सिर्फ़ ग्लैमर और हीरो के लव इंट्रेस्ट तक ही सीमित था। अगर मेरा किरदार फ़िल्म में कुछ प्रभाव डालता तो मैं बिना पैसों के भी उनके लिए फ़िल्म कर लेती। वैसे मैं करण भट्ट जी से कहना चाहती हूँ कि अब चीज़ें बदल रही हैं। हीरोइनों को ध्यान में रखकर भी फ़िल्में लिखी जा रही हैं। फिर भी अगर उन्हें लगता है कि उनका काम सिर्फ़ ग्लैमर दिखाने का है तो आप यह समझ लीजिए कि यह कुछ ऐसा ही है जैसे खाने में नमक का होना। नमक के बिना खाना कोई नहीं खाता। इसी बात का सम्मान कर

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

लीजिए। फिर भी अगर वो इस बात से सहमत नहीं हैं तो वो लड़कों को लड़की बनाकर उनसे काम चला सकते हैं। आज भी कई जगह रामलीला में सीता का रोल लड़के करते हैं। क्या पता किसी रोल में वह ख़ुद ही फिट हो जाएँ। क्यों हम पर इतना ख़र्चा करना! फ़िल्म को तो वैसे भी हीरो ने ही चलाना है।"

मेरी इस बात पर सभी प्रेस वालों को बहुत मज़ा आया था। सबने ख़ूब मिर्च मसाला लगाकर मेरी इस बात को छापा था। फिर अगले कुछ दिनों में मेरे हाथ से चार अच्छी फ़िल्में निकल गई थीं। एक का तो प्रोमो भी शूट हो गया था। रिक्कू जी ने पता लगाया। वह सब करण भट्ट के ख़ास दोस्त थे। लगभग एक साल मेरी कोई फ़िल्म नहीं आई थी। लेकिन वह चारों फ़िल्में भी बॉक्स ऑफ़िस पर कोई कमाल नहीं कर पाई थीं। अब इसे उन फ़िल्मों की क़िस्मत कहें या उन लोगों का कर्मा, आख़िर में तमाशा तो मैंने ही पॉपकॉर्न खाते हुए देखा था। हालाँकि उन फ़िल्मों के निर्माताओं ने उनके अन्यायपूर्ण व्यवहार के लिए मुझसे कोई माफ़ी नहीं माँगी थी मगर कुछ समय बाद और फ़िल्मों के प्रस्ताव लेकर मेरे पास ज़रूर आए थे। मैंने कभी किसी फ़िल्म में सिर्फ़ अपना चेहरा दिखाने के लिए काम नहीं किया था। मैं इस बात के लिए हर वक़्त तैयार थी कि अगर मुझे अपनी पसंद की फ़िल्में नहीं मिली तो मैं कुछ और कर लूँगी। मगर ऐसा वक़्त कभी आया ही नहीं। मुझे काम की कमी कभी हुई ही नहीं।

यादों का हाल भी रूसी गुड़ियों की तरह है—एक के अंदर एक छुपी हुई। एक को खोलो दूसरी साथ निकल आती है। बहरहाल, चलिए फिर से शिमला के क़िस्सों की ओर चलते हैं।

एक दिन जब बाबा लकड़ी काट रहे थे तब मैं उन्हें बता रही थी कि आज स्कूल में मिस ने पूछा कि हम बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं? इस पर बाबा बोले, "तुमने क्या कहा?"

"यही कि मुझे नहीं पता।"

"क्यों? तुम कुछ बनना नहीं चाहती?"

"क्या कुछ बनना ज़रूरी होता है?"

"नहीं बिलकुल नहीं। ज़रूरी वही होता है जो हमारा दिल चाहता है।" बाबा भी मेरी तरह ही सोचते हैं, यह जानकर मेरा मन प्रसन्नता से भर गया था। मगर मेरी यह ख़ुशी कुछ पल भी न ठहर सकी। बाबा ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा, "फिर भी अगर देखो तो हम जो भी करते हैं उसे करते-करते कुछ तो बन ही जाते हैं। अच्छा नहीं होगा अगर हम पहले से सोच ले कि हमें क्या बनना है? और फिर वही करें जो उस बनने के लिए ज़रूरी हो?"

"इसका मतलब हम अपने लिए नहीं कुछ बनने के लिए जीते हैं? फिर इसमें हमारी मर्ज़ी कहाँ रह गई!"

बाबा मेरी बात सुनकर कुछ पल सोच में डूब गए। फिर मुस्कुराकर बोले, "दस साल के छोटे से दिमाग़ से इतना सब कैसे सोच लेती हो? तुम्हारी बात भी सही है मगर हमें क्या बनना है यह जानना हमें इसलिए चाहिए, ताकि हम पूरी ज़िंदगी इस बात को जानने के लिए न भटकते रहें कि हमें क्या करना अच्छा लगता है। और फिर क्या बनना है इसका निर्णय भी तो हम अपनी पसंद के हिसाब से ही तो लेते हैं! बिना कुछ बनने के सपने के

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

ज़िंदगी वैसी ही हो जाती है जैसे टाइम और कैलेंडर के बिना दुनिया हो जाती, Directionless.”

बाबा अपनी जगह सही थे। मगर जितना मुझे याद है उस वक़्त मुझे उनकी कुछ बनने के सपने के होने की थ्योरी ज़्यादा कुछ समझ तो नहीं आई थी। हाँ, मगर मैं यह सोचने ज़रूर लगी थी कि इतनी सारी चीज़ों में हम क्या बनें इस बात का निर्णय कोई किस तरह से ले सकता है। सोचते-सोचते कुछ देर तक मैं बाबा को लकड़ी काटते देखती रही। फिर मैंने उनसे पूछा, “बाबा, आप वह क्यों नहीं बने जो आप बनना चाहते थे?”

मेरे इस प्रश्न से बाबा का मूड एकदम से बदल गया था। उन्होंने लकड़ी काटना बंद कर दिया और कहा चलो बहुत हो गई बातें, अब घर चलते हैं। तब मुझे समझ नहीं आया था कि मैंने ऐसा क्या कहा जो बाबा को चुभ गया था। आज सोचती हूँ तो बाबा का दर्द मैं समझ पाती हूँ। उन्हें तो अपना सपना पूरा करने का एक मौक़ा भी नहीं मिला था। सफल और असफल होना तो बाद की बात थी। कोशिश न कर पाने का अफ़सोस इस दुनिया के सारे अफ़सोस से बड़ा होता है।

तब मेरी उम्र लगभग बारह साल की रही होगी, जब बाबा ने एक दिन अचानक आकर कहा, हम मुंबई घूमने जा रहे हैं। मैं बहुत ख़ुश हो गई थी क्योंकि मैं आज तक शिमला के बाहर नहीं गई थी। मुंबई मुझे एलिस के वंडरलैंड की तरह ही लगा था। शिमला जैसा वहाँ कुछ नहीं था। एक पूरा दिन हमने बड़े-बड़े सितारों के घर देखने और फ़िल्म सिटी और पृथ्वी थिएटर के चक्कर लगाने में लगा दिया था। बाबा उन्हें इस तरह से देख रहे थे जैसे बच्चा चाँद को न छू पाने पर उसे मायूसी से देखता है। जैसे आज यहाँ आकर उन्होंने अपनी कलाकार बनने के सपने को श्रद्धांजलि दे दी हो। शिमला वापस आने से एक दिन पहले हमने पूरा दिन जुहू चौपाटी पर गुज़ारा था। उस दिन बाबा बहुत ख़ुश थे। ऐसा लग रहा था जैसे कहीं खो गए थे, आज मिले हैं।

नाचते-गाते मस्ती करते शाम होने लगी थी। सूरज बस डूबने ही वाला था। बाबा ने उसे देखते हुए मुझसे कहा एक दिन मैं भी ऐसे ही डूब जाऊँगा। तब मुझे एक पल को ऐसे लगा था जैसे सब कुछ ख़त्म हो गया है। इस पूरी दुनिया में सिर्फ़ मैं अकेली बची हूँ। जैसे साइंस फ़िक्शन में दिखाते हैं अपॉक्लिप्स आ गया और कुछ नहीं बचा। उस तरह से अकेले हो जाने के डर का साया मैं आज अभी इस वक़्त भी अपने ऊपर मँडराता हुआ महसूस कर सकती हूँ। बस फ़र्क़ इतना है कि आज मेरे अलावा सब कुछ बचा हुआ है। वह आख़िरी बार था जब मैंने डूबता हुआ सूरज देखा था। आगे कभी जब भी उसके आगे से गुज़रना होता तो मैं अपनी आँखें बंद कर लेती थी।

बाबा ने मुझे मुंबई से बहुत सारे तोहफ़े दिलाए थे। मैं घर वापस आने के कुछ ही देर बाद उन्हें खोलने बैठ गई। तभी माँ ने कहा, जा बाबा को बुला ला, खाना लग गया है। मैं बाबा के कमरे में गई तो देखा बाबा पंखे से झूल रहे थे। मैं भागते हुए माँ के पास आई और कहा माँ बाबा मर गए। माँ ने मुझे एक ज़ोर से थप्पड़ लगा दिया और बाबा के कमरे की तरफ़ भागी। मैं रोते हुए यही सोच रही थी की यह आँसू बाबा के मरने पर हैं या सच बोलने पर माँ के मारने की वजह से? बाबा ने मरने से पहले एक चिट्ठी छोड़ी थी जिसमें में लिखा था-

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

'मुझसे ज़िंदगी का बोझ अब उठाया नहीं जा रहा था। सब कुछ बहुत अच्छा था। बस कोई भी उद्देश्य और संघर्ष बाक़ी नहीं रहा था। ऐसा लगता था जैसे मैं कोई गैस से भरा गुब्बारा हूँ जो बस उड़े जा रहा है। ज़िंदगी से जुड़े रहने के लिए हमारा वह काम करना ज़रूरी है जिसे करके हम ख़ुश होते हों। ऐसा नहीं है कि मैं अब तक अपने एक्टर बनने के सपने के पूरा न कर पाने का मलाल मन में लिए बैठा था। मगर मैं जो कर रहा था वह ज़िंदगी से जुड़े रहने के लिए काफ़ी नहीं था। परिवार, दोस्त हमारी ख़ुशियों का विस्तार हो सकते हैं, मगर उनका आधार नहीं। मैंने बहुत कोशिश की इस तरह से जीने की। मगर अब मुझसे कोशिश भी नहीं हो रही थी। मुझे अपनी ज़िंदगी बासी और नीरस लगने लगी थी। इसीलिए मैं अपनी जान ले रहा हूँ ताकि इस नीरस भरी ज़िंदगी से आज़ाद हो सकूँ।'

तब मैंने ख़ुद से वादा किया था कि मैं कभी भी ख़ुद को किसी भी चीज़ या हालात के आगे मजबूर नहीं होने दूँगी। मेरी पहली प्राथमिकता एक आज़ाद ज़िंदगी जीने की होगी। मैं वह कारण ही नहीं बनने दूँगी जिनकी वजह से चाहे वह सुख हो या दुख मुझ पर हावी होने लग जाएँ। मैं अपनी ज़िंदगी में कभी आसान रास्ते पर नहीं जाऊँगी। चीज़ें आसान होते ही नीरस हो जाती हैं।

बाबा का कमज़ोर पड़कर इस तरह आत्महत्या कर लेना मुझे कभी सही नहीं लगा था। बाबा ने मरकर अपनी नीरस ज़िंदगी से ख़ुद को आज़ाद तो कर लिया था मगर ज़िंदगी से तो दूर हो गए थे। किसी चीज़ से आज़ादी उसे खोकर या छोड़कर ही क्यों मिलती है? क्यों हम उनके साथ होते हुए ख़ुद को आज़ाद नहीं रख पाते? इसी दिन राजीव गाँधी की मद्रास में किसी ने हत्या कर दी थी। दिन था 21 मई 1991...

मेरी एक ही स्कूल फ़्रेंड थी शिल्पी जो तब स्कूल में आई जब मैं नौ साल की थी। उसके पापा मेरे बाबा के ही डिपार्टमेंट में थे। हम दोनों बहुत अच्छे दोस्त बन गए थे। बाबा के मरने के बाद उसी के साथ मेरा मन लगता था। लेकिन बाबा के मरने के एक साल बाद ही उसके बाबा का ट्रांसफ़र दिल्ली हो गया। तब उसने मुझसे कहा था, मैं 12वीं करने के बाद दिल्ली से ही आगे की पढ़ाई करूँ।

शिल्पी के चले जाने के बाद या तो मैं किताबें पढ़ती थी या फ़िल्में देखती थी। मुझे दुनिया भर का इतिहास भी अपनी ओर आकर्षित करता था। मैंने स्कूल की लाइब्रेरी में रखी इतिहास की हर किताब पढ़ डाली थी। मैं जब भी शिमला की कोई बहुत पुरानी बिल्डिंग देखती तो मुझे लगता जैसे इसने मेरे वर्तमान को अपने अतीत से जोड़ दिया है। मुझे लगता जैसे ये जानती है, मुझे इसकी कहानी पता है। किताबों का यही तो कमाल होता है। वह हमें दुनिया के कल से इस तरह जोड़ देती हैं जैसे हम उस कल से गुज़रकर ही आज यहाँ पहुँचे हों। जितना मैं दुनिया का इतिहास पढ़ती, उतना मुझे दुनिया देखनी की इच्छा होती।

बाबा ने भले ही फ़िल्में देखना छोड़ दिया था लेकिन उनकी वजह से मेरी दिलचस्पी फ़िल्मों में बढ़ गई थी। किताबें हो या फ़िल्में मुझे कहानियों में डूबे रहना पसंद था। क़रीब कहने वाला कोई दोस्त नहीं था मेरा। मैं किसी एक किरदार की जगह ख़ुद को रख लेती थी। फिर यही सोचती कि अगर ये किरदार मेरी तरह सोचते तो कहानी का अंत कितना अलग होता! पर मैंने हीरोइन बनने का सपना कभी नहीं देखा था, क्योंकि वह मेरे बाबा का

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

सपना था और मैं अपने बाबा के सपने को अपना सपना नहीं बनाना चाहती थी। मैं कुछ और करना चाहती थी जो मुझे पता नहीं था। बस इतना पता था कि सपने अपने होने चाहिए न कि किसी और से नक़ल किए हुए। अक्सर बच्चे यही करते हैं। वह अपने माँ-बाप का सपना पूरा करने में लग जाते हैं या फिर उन्हें बचपन से यही कहकर बड़ा किया जाता है तुम्हें यही करना है। फिर वह उसी को अपना सपना मानने लगते हैं। मेरी सोच कुछ इस तरह का आकार लेने लगी थी कि मुझे हर उस चीज़ के विपरीत जाना होता था जो इस दुनिया में आज तक होता आया है।

बाबा की मौत को दो वर्ष हो गए थे। एक दिन माँ ने अचानक मेरे साथ अकेले घूमने का प्रोग्राम बना लिया। बिलकुल वैसे ही जैसे हर रविवार हम बाबा के साथ जाया करते थे। सारा दिन घूमकर जब हम वापस घर लौट रहे थे तब माँ ने कहा, "मैं जा रही हूँ।"

"कहाँ? और कब तक वापस आओगी?"

"मैं दूसरी शादी कर रही हूँ।" माँ ने झिझकते हुए कहा।

उस वक़्त मैं चौदह साल की थी। मुझे समझ नहीं आया इस बात पर मुझे कैसे प्रतिक्रिया देनी चाहिए। मैंने बस इतना कहा, "मैं और दादी भी साथ चलेंगे।"

"तुम साथ नहीं चल सकते।"

"क्यों?"

"लेकिन उन्होंने कहा है मैं जब चाहूँ तुम लोगों से मिलने आ सकती हूँ।" माँ ने मेरे प्रश्न को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

"उन लोगों के लिए तुम हमें छोड़ दोगी!" यह कहते हुए मेरा गला भर आया था।

"मैं अकेले नहीं रह सकती। ये बात तुम अभी नहीं समझोगी। जब तुम..."

उनकी बात को बीच में ही काटते हुए मैंने कहा, "कब जाना है?"

"एक सप्ताह बाद।"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया और अकेले घर आ गई।

माँ पीछे से कहती रही, तुम्हें किसी चीज़ की चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं। बाबा की सेविंग्स और इंश्योरेंस का पैसा उन्होंने दादी को दे दिया है। और जितना उनसे बन पड़ेगा वह करती रहेंगी। जैसे मुझे उनके जाने का बुरा इस वजह से लग रहा था। जिस वक़्त कोई हमसे हमें छोड़ने की बात करता है तो इसका मतलब उसने जाने का मन बहुत पहले ही बना लिया होता है। हमारे कहने से वह शायद रुक भी जाए, लेकिन उसका रुकना पहले जैसा कभी नहीं होता। इसीलिए मैंने माँ को रोकने की कोशिश भी नहीं की थी। जाने वाले से मोह जी का रोग बन जाता है जो उदासी बनकर ज़िंदगी भर हमारी आँखों से रिसता रहता है।

हालाँकि मुझे माँ पर बहुत ग़ुस्सा आ रहा था। वह कैसे इस तरह अपनी बेटी को छोड़कर जा सकती है। वैसे माँ और मैं कभी बहुत क़रीब नहीं थे। लेकिन शायद माँ शब्द ही ऐसा है कि उसके दूर जाने की बात सुनकर ही ऐसे लगता है जैसे सब कुछ बिखर गया हो। माँ वो एहसास है जिसके पास न होने पर हमारा एक बड़ा हिस्सा रूठकर अपनी पहचान खो बैठता है। माँ से रिश्ता चाहे जैसा भी हो, उसकी कमी नाखून बनकर हमें हर पल चुभती

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

रहती है। शायद इसीलिए उनके बिना ज़िंदगी सोच पाना मुमकिन-सा नहीं लग रहा था। उस दिन मेरा ख़ुद से किया वादा और पक्का हो गया था कि मैं ख़ुद को कभी इतना कमज़ोर नहीं बनाऊँगी कि मुझे जीने के लिए किसी सहारे की ज़रूरत हो। जब माँ के जाने का वक़्त आ गया तब अचानक मैं रोते-रोते माँ के गले लग गई और उससे वापस जल्दी आने को कहा। माँ भी मुझसे जल्दी आने का वादा करके चली गई। जिस दिन माँ गई उस दिन 'डर' फ़िल्म रिलीज़ हुई थी। मैंने पहले से ही दादी को तैयार कर रखा था फ़िल्म देखने जाने के लिए। दिसंबर का महीना था। बहुत ठंड थी। माँ के साथ-साथ मन की भी सारी गर्माहट चली गई थी।

उसके बाद माँ जब भी आई उनमें थोड़ी-थोड़ी माँ कम होती रही और मुझ में थोड़ी-थोड़ी बेटी। वह जब भी आती तो मुझे और दादी को बाहर डिनर करवाने ले जाती। हर बार हमारे बीच बस मौसम और मेरे स्कूल की बातें होतीं। इस तरह दो साल गुज़र गए। माँ में अब माँ नहीं रही थी और मुझमें भी अब एक बेटी होने के कोई निशान बाक़ी नहीं थे। अब उनको माँ बुलाना कुछ ऐसा ही था जैसे किसी को उसके नाम से बुलाना। हाँ, मगर हम दोनों के बीच अब बातें पहले से थोड़ी ज़्यादा होने लगी थीं। जैसे माँ एक दिन घर आई और हर बार की तरह मुझे डिनर पर साथ ले गईं। उस दिन दादी बीमार होने की वजह से हमारे साथ नहीं गई थी। हमारी बातें हर बार की तरह शुरू हुई।

"आज मौसम कुछ ज़्यादा ही ठंडा है।" माँ ने खिड़की के बाहर देखते हुए कहा।

"मौसम है, रंग तो बदलेगा ही।" मैंने माँ की तरफ़ बिना देखे खाते हुए कहा।

"तेरा स्कूल कैसे चल रहा है?"

"ठीक है। बस फ़ाइनल होने वाले हैं।"

मेरी बातों में ज़्यादा रुचि न देखकर माँ ने कुछ देर चुप रहने के बाद मुझसे पूछा, "क्या तूने अब तक मुझे माफ़ नहीं किया?"

"पता नहीं। पर आज मुझे आपसे कोई शिकायत भी नहीं है।"

"क्यों?"

"पहले आप बताइए। क्या आज आपको मुझे छोड़कर जाने का थोड़ा-सा भी गिल्ट बाक़ी है!"

मेरा ये सवाल सुनकर माँ ने नज़रें झुका ली। उनकी चुप्पी साफ़ बता रही थी कि उनका जवाब ना है।

"आपको ऐसे मेरे सामने नज़रें नीची करने की कोई ज़रूरत नहीं है। न आप और न ही मैं आज वो हैं जो कल थे। इन्फ़ैक्ट आज मैं ख़ुश हूँ कि तब आपने अपने बारे में सोचा। मैंने तो तब भी कुछ सालों में अपनी लाइफ़ में बिज़ी हो जाना था। और तब आप अकेली हो जातीं। So chill! We are good now."

मैंने माँ के हाथ-पर-हाथ रखकर उनकी आँखों में आँखें डालकर कहा।

"हाँ मगर मैंने थोड़ी कोशिश की होती तो तुझे अपने साथ ले जा सकती थी।" माँ ने भी मेरे हाथों के ऊपर अपना हाथ रखते हुए कहा।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"I am glad you didn't. मुझे किसी और के घर पर रहकर अपनी फ़्रीडम नहीं खो देनी थी।"

"तू उम्र से पहले मैच्योर हो गई मीठी।" कहते हुए माँ की आँख में पानी था।

"Maturity doesn't come with age Ma. It comes from the life experiences. And I am happy the way I am. अब ज़्यादा मत सोचो। खाना ठंडा हो रहा है। खाने के बाद आइसक्रीम नहीं खिलाओगी?"

मैंने मुस्कुराते हुए कहा और माँ भी जवाब में मुस्कुरा दी। उस दिन माँ और मेरे बीच में एक नया ही समझ का रिश्ता बन गया था। रिश्तों का चेहरा उतारते ही हम कैसे एक-दूसरे को समझने लगते हैं! मुझे कभी उनके दूसरी शादी करने से कोई दिक़्क़त नहीं थी। मुझे शिकायत थी तो बस दादी और मुझे अकेला छोड़कर चले जाने से। रिश्तों से उम्मीदें होती ही हैं। इसलिए भी शायद मैं रिश्तों से दूर भागती हूँ। चाहे कितना भी कर लो हम उनको पूरी तरह निभा नहीं पाते और इस चक्कर में जाने कितने लोगों का दिल दुखा बैठते हैं। और तभी से मुझे लोगों का जाना भी अच्छा नहीं लगता था, क्योंकि लोग जैसे जाते हैं वैसे लौटकर नहीं आते। माँ लौटकर तो आती रही लेकिन उनमें माँ की जगह किसी और ने ले ली थी।

एक दिन रेशमा अपने मायके रहने आई। हाँ वही रेशमा जो दिव्या भारती के मरने पर बहुत रोई थी। उस वक़्त मैं बाहरवीं कक्षा में थी। जब वह मुझसे मिलने आई तो उसके पास एक सीडी थी जो वह अपने पति से छिपाकर लाई थी। आते ही वह मुझसे बोली वह मेरे लिए कुछ ऐसा लाई है जो मेरे लिए समझना बहुत ज़रूरी है। वह एक बड़ी बहन की ज़िम्मेदारी निभाने आई थी। मैंने सीडी लगाई तो वह एक पॉर्न थी। मैंने उसे घूरा तो उसने मुझे कहा, "यार ये सब भी ज़रूरी होता है। तू पहली बार करते हुए घबरा न जाए, इसीलिए दिखा रही हूँ।"

"तुम भूल रही हो, मैं एक साइंस स्टूडेंट हूँ।"

उसे मेरी बात जैसे सुनाई ही नहीं दी थी। वह देखने में इतनी मग्न थी कि मैं कमरे में हूँ या नहीं शायद यह भी उसे नहीं पता था। मैं कभी उसे देखती कभी टीवी को। वह गठरी-सी बनी ज़मीन पर लेट गई और बुदबुदाती हुई-सी आवाज़ में कहा मुझे मेरे पति की याद आ रही है। मैं उस वक़्त सोच में पड़ गई थी कि उसे अपने पति की याद क्यों आ रही है? सेक्स करने के लिए? या सच में वह अपने पति को याद कर रही थी? कुछ देर बाद वह सामान्य होते हुए बोली कि यह सब देखने से एक्साइटमेंट बढ़ जाती है और सेक्स करने में और मज़ा आता है। मैं मन-ही-मन यही सोचती रही कि अगर दो लोग एक-दूसरे को देखते हुए एक-दूसरे को एक-दूसरे के लिए पागल ही नहीं कर सकते तो उन दोनों को एक-दूसरे के साथ सेक्स करना ही क्यों है? कोई भी संबंध चाहे वह प्रेम का हो या सेक्स का जब बिना किसी कोशिश के बनाया जाता है तभी वह दिल से उठने वाली प्रसन्नता की लहरों पर बेपरवाह होकर नाच सकता है। उसके बाद मैंने ज़िंदगी में कभी पॉर्न नहीं देखी थी।

मेरे स्कूल जाने की रास्ते में एक बुक स्टॉल पड़ा करता था। एक दिन मैं एक बुक स्टॉल पर खड़ी हुई थी। मेरे हाथ में हैरी पॉटर की लास्ट पार्ट वाली किताब थी। हैरी पॉटर की

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

सीरीज़ की सबसे ख़ास बात मुझे यही लगती थी कि ये किताब हमें बताती हैं कि हमारी कल्पनाओं की कोई सीमा नहीं होती। हम अपनी पसंद के हिसाब से अपनी कल्पनाओं में कैसी भी दुनिया बना सकते हैं। जैसे JK Rowling ने Harry Potter लिखकर अपनी कल्पना को दुनिया के सामने रखा था। दूर से एक मासूम-सा दिखने वाला लड़का मुझे देखे जा रहा था। तब में पंद्रह साल की थी। पिछले एक महीने से वह लड़का हर रोज़ स्कूल आते-जाते मेरा पीछा करता था। उस दिन वह मुझे वहाँ देखकर मेरे पास आया। उसके हाथ में आइसक्रीम के दो कोन थे। उसने एक कोन मेरी तरफ़ बढ़ाते हुए पूछा, "क्या तुम मेरे साथ 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे' देखने चलोगी?"

"क्यों?" मैंने आइसक्रीम पकड़ते हुए पूछा।

"क्योंकि तुम मुझे अच्छी लगती हो।"

"ये बात पूछने में इतने दिन लगा दिए?"

"डर रहा था।" उसने शरमाते हुए कहा।

"क्यों? मैं क्या चुड़ैल जैसी दिखती हूँ?"

"जो चीज़ कभी देखी ना हो उससे क्या डरना! तुम तो मुझे परी जैसे लगती हो।"

"परी देखी है तुमने?"

"देख तो रहा हूँ।"

ये सुनकर मैं मन-ही-मन उसकी मासूमियत पर हँसी और उससे कहा, "How sweet of you!"

"इसका मतलब तुम मेरे साथ चलोगी?"

"पैसे हैं टिकट के तुम्हारे पास?"

अब तक उसकी आइसक्रीम पिघलने लगी थी।

"बहुत दिनों से बचा रहा हूँ। इतने दिनों से अपना फ़ेवरेट चना ज़ोर गर्म भी नहीं खाया।"

ये सुनकर मैं हँसने लगी।

"तुम चलोगी या नहीं?" उसने मुझे हँसते हुए देखकर पूछा।

"उम्र क्या है तुम्हारी?"

"पंद्रह।"

"सिर्फ़ एक साल से रह गए तुम।"

"मैं समझा नहीं।"

"मुझे सिर्फ़ चौदह साल के लड़के पसंद हैं।"

"तुम भी तो ग्यारहवीं क्लास में पढ़ती हो, पंद्रह की ही होगी?"

"तो?"

"कुछ नहीं।" उसने निराश होते हुए कहा।"वैसे तुम हो बहुत क्यूट।"

"फिर मना क्यों कर रही हो?"

"इसीलिए तो कर रही हूँ।"

यह कहकर मैंने उसे उसकी पिघली हुई आइसक्रीम पोछने के लिए अपना रुमाल दिया और उसके गाल पर एक छोटी-सी किस करते हुए कहा, "For icecream. अब जाकर

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

अपना चना ज़ोर गर्म खा लेना। किसी के लिए भी अपना मन नहीं मारना चाहिए।"

मुझे उसके साथ जाने में कोई दिक़्क़त नहीं थी। परंतु उसे मेरे साथ नहीं किसी परी के साथ जाना था। और मैं परी की उस छवि से बिलकुल विपरीत थी जो लोगों के मन में होती है। मेरे लिए वह कुछ ज़्यादा ही स्वीट था। दो मिनट उससे बात करके मुझे समझ आ गया था कि मेरे और उसके बीच में किसी भी तरह की कोई भी अर्थपूर्ण बातचीत संभव ही नहीं थी। जिसके साथ मैं अगर मानसिक तौर पर ही न जुड़ पाऊँ, फिर उसके साथ मैं फ़िल्म देखने का लुत्फ़ भी कैसे उठाती! दो लोगों के बीच की वैचारिक क्षमता का वज़न जब होने वाली बातचीत के तराज़ू के दोनों पलड़ों में बराबर पड़ता है तभी यह तय होता है कि उनके बीच बनने वाला रिश्ता कितना गहरा होगा! दूर कितना जाता है इस बात से कोई ख़ास फ़र्क़ नहीं पड़ता।

हर साल हमारे शहर में एक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता था जिसमें सारे स्कूल के बच्चे हिस्सा लेते थे। इस प्रतियोगिता में अलग-अलग विषयों पर चुनौतियाँ रखी जाती थीं जिसमें जीतने वालों को ईनाम दिया जाता था। मैं हर साल वाद-विवाद प्रतियोगिता में हिस्सा लेती थी। एक दिन स्कूल में नाटक की नायिका के लिए ऑडिशन चल रहा था। मुझे ये सब देखना बहुत आकर्षित करता था कि कैसे एक कहानी आख़िर में दर्शकों के आगे प्रस्तुत की जाती है। एक कहानी को स्टेज या परदे पर जीवित दिखाने के लिए शुरू से लेकर आख़िर तक क्या-क्या क़दम उठाए जाते हैं, ये सब जानना रोमांच भरा होता था। एक कलाकार ख़ुद को हर बार एक नये किरदार में ढालकर एक नयी ज़िंदगी जीता है। इस बात से मेरी एक कलाकार को लेकर उत्सुकता और बढ़ जाती थी। इसीलिए मैं वहाँ बैठकर ये सब देख रही थी। तभी टीचर ने कहा, "मीठी, इस साल तुम ऑडिशन क्यों नहीं दे देती!"

"सॉरी मिस, मैंने पहले से ही अपना रजिस्ट्रेशन डिबेट के लिए करवा दिया है।"

"वह तुम हर साल करती हो। इस बार कुछ नया करके देखो।"

इससे पहले मैं कुछ जवाब देती, वहाँ बैठी लड़कियाँ हँसने लगीं। ये वही गैंग था जो बचपन से मेरे नाम का मज़ाक़ उड़ाता आया था। उनमें से एक ने कहा, "मिस, इसे क्या पता एक केरेक्टर के इमोशन को कैसे पकड़ना है? इसका तो एक ही चेहरा है एंग्री बर्ड जैसा।"

इस बात पर सब मिलकर ठहाके लगाने लगी।

"Miss, Don't expect too much from her. She isn't an artist at all."

मिस ने उन्हें चुप करवाते हुए मेरी तरफ़ देखा।

"I want to try, Miss."

फिर मिस ने मुझे सीन समझाया जिसमें एक लड़की अकेले बैठे अपने ही ख़यालों में खोई हुई है। कभी वह बिलकुल सामान्य होती है तो कभी हँसने लगती है। तो कभी ग़ुस्सा हो जाती है तो कभी रोने लगती है। मुझे नहीं पता उस दिन मेरी क़िस्मत अच्छी थी या मुझे सचमुच एक्टिंग आती थी लेकिन जो सीन मुझे करने को बोला गया वह मेरे लिए बहुत आसान था। मैं अक्सर ऐसे ही अपने ख़यालों में गुम रहती थी। मेरी परफॉर्मेंस देखकर मिस ने कहा, "ये रोल तुम्हीं करोगी मीठी। There is no need to audition anymore."

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

ये सुनकर लड़कियाँ एक साथ मिलकर मिस से गुज़ारिश करने लगीं। परंतु मिस ने उन्हें ये कहकर चुप करवा दिया कि ये उनका आख़िरी फ़ैसला है।

"Thank you Miss for your appreciation! लेकिन मैं प्ले में हिस्सा नहीं लूँगी।"

मिस ने वजह पूछी।

"मैं तो डिबेट में भी हिस्सा ले सकती हूँ मिस। ये सब शायद कुछ और न कर पाएँ।"

वे लड़कियाँ बुरी नहीं थीं। बस वे मुझे वैसे नहीं अपनाना चाहती थीं जैसी मैं थी। जाने क्यों दुनिया ऐसे लोगों से डरती है जो उनसे थोड़ा अलग होते हैं! अलग होने का ये मतलब तो नहीं वह ख़तरनाक ही हो। इतना सब दुनिया सोचती नहीं है और अपने उस डर की वजह से उन लोगों को हराने के लिए मौक़ा मिलते ही नीचा दिखाने या दबाने की कोशिश करने लगती है। कई बार लोग सिर्फ़ इसीलिए बुरे बन जाते हैं क्योंकि दूसरे उनसे बेहतर होते हैं।

अगले दिन उन सब लड़कियों ने मुझे कोने में घेर लिया। फिर धमकियाँ देनी शुरू कर दीं। अपनी हद में रहा करो। ज़्यादा टशन मत दिखाया करो। वग़ैरह-वग़ैरह। उनमें से एक ने मुझे हल्का-सा धक्का दिया। मैंने गिर जाने का नाटक किया क्योंकि मैंने दूर से क्लास टीचर को आते हुए देख लिया था। वो सब तब तक मुझे घेर कर कुछ-न-कुछ कहती रहीं। और इतने में टीचर पास आ गई। ये सब करने के लिए उन्हें सज़ा भी मिली। मैं चाहती तो उनसे ख़ुद निपट लेती लेकिन मैंने ख़ुद को बुली होने दिया। क्या ग़लत तरीक़े से ग़लत को सज़ा दिलवाना ये शुरू से ही मेरे व्यक्तित्व का हिस्सा था?

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

बिफ़ोर सनराइज़

बचपन याद करते-करते कब आधी रात हो गई पता ही नहीं चला। इसी वक़्त से सनराइज़ होने का काउंटडाउन शुरू हो जाता है। जैसे किसी भी सफ़र का आधा सफ़र उसे शुरू करने में और आधा उसे ख़त्म करने में बीत जाता है। यह सब सोचकर याद आया कि मैंने कुछ साल पहले जब पहली बार 'बिफ़ोर सनराइज़' फ़िल्म देखी थी तो मुझे एक शख़्स बहुत याद आया था। जिसे मैं शिमला के समर फ़ेस्टिवल में मिली थी। उस फ़िल्म के मुख्य किरदारों की तरह मैंने भी उससे बहुत बातें की थी। वो दोनों भी अजनबी ही थे और एक ट्रेन में मिले थे। शिमला में हर साल गर्मियों में यह मेला लगता है। जहाँ देश-विदेश से लोग आया करते हैं। नाचना-गाना, खाना-पीना, खेलना-कूदना, इस मेले के रंग होते हैं। वह लंदन से आया था। पच्चीस-छब्बीस साल का रहा होगा। मेरा स्कूल पूरा हो गया था। और मैं मेडिकल एंट्रेंस की तैयारी कर रही थी। मेले में घूमते हुए मेरी नज़र बार-बार उस पर पड़ रही थी क्योंकि जहाँ देखो वह अपने कैमरे से तस्वीरें निकालने में लगा था। मैं उसको देखकर बार-बार यही सोच रही थी कि यह यहाँ तस्वीरें खींचने आया है या मेला देखने? तभी उसने मुझे उसे देखते हुए पकड़ लिया और पूछा, "What are you looking at?"

"Nothing, just thinking." मैंने जवाब दिया।

"What?"

"Why are you here?"

"To see the festival. To visit the city."

"And what are you doing?"

"What am I doing? Just capturing the beauty of this place from my camera. Why?"

मेरे सवाल उसे हैरान कर रहे थे।

"Beauty is not meant to be captured."

"Then what is it for?"

"To be lost in. To be immersed in."

"Point to be noted."

मेरे जवाब ने उसे लाजवाब कर दिया था।

"Your welcome."

"Photography is my passion. And I believe they give you something to remember when you are lost. Do you have a problem with it?"

"No, not at all. You asked so I told. But you need to experience it before in order to remember it later."

जवाब देने के बाद मुझे ख़ुद ही अपने जवाब पर बहुत प्यार आया था।

"Couldn't agree more."

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"You are not even taking a minute to enjoy your surroundings. Just keep clicking and clicking and clicking."

"You have a point. Are you a local?"

"Yes!"

"Tell me, what should I do then?"

"Do you mind Dance?"

"Not at all."

"Then let's go."

हम दोनों डांस करने उस जगह पहुँचे जहाँ सब मिलकर स्थानीय लोगों के साथ उनका स्थानीय नृत्य करने की कोशिश कर रहे थे। मैंने उसे स्टेप्स सिखाना शुरू किया। वह भी पूरी लगन से सीख रहा था। कुछ ही देर में वह नृत्य करने में इतना खो गया कि उसे देखकर लग ही नहीं रहा था कि वह कुछ देर पहले तक सिर्फ़ तस्वीरें निकालने में व्यस्त था। थक-हारकर हम एक फ़ूड स्टॉल पर कुछ ठंडा पीने के लिए रुके। तब उसने मुझसे पूछा, "How old are you?"

"Why?"

"You talk like a wise person."

"How is it related to age?"

"Now you are contradicting everyone who says by age you become wiser."

"I like to go against the current."

मैंने थोड़ा टशन दिखाते हुए कहा।

"What do you want to be?"

"Yet to be discovered."

इस जवाब में मुझे ख़ुद की उदासी सुनाई दे रही थी।

"What! You are smart enough to know by now."

"That is the problem."

"What?"

"I am good at so many things."

"Like?"

"Skating, dancing, acting, cooking and studying. I am preparing for the Medical Entrance."

यह सब बताते हुए मुझे पहली बार एहसास हुआ कि मैं इतना सब कुछ जानती हूँ। और इस बात पर मुझे थोड़ा-सा ख़ुद पर गर्व भी महसूस हुआ था।

"Wow! So much talent is contained in one person only. That's not fair."

मुझे उसके मुँह से अपने लिए तारीफ़ सुनकर बहुत अच्छा लग रहा था।

"To be honest, it's not that good."

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"Don't worry. You will figure it out soon."

"What is your dream?"

"Photography only."

"Have you come to visit Shimla only?"

"No, I am on the whole India tour. I was so curious about this country since the time when I got to know that British ruled over India for two hundred years. This is so insane, Man. Isn't it?"

वह बोले जा रहा था। मैं उसे लगातार देखे जा रही थी। मेरे इस तरह देखने से उसे लगा मैं बुरा मान गई।

"I am sorry. I shouldn't have said this."

"Hey it's ok. It was in the past. They were different sets of people with different minds ruled over different sets of people with different minds. Every time has its own story to tell."

"I am liking talking to you."

"Thank you. But I am afraid I have to take a leave. It is going to be dark soon. My grandmother must be waiting."

"Can you meet me tomorrow? Now I want to see this city from the eyes of a local."

ये सुनकर मैं कुछ देर चुप रही।

"Why? Don't you trust me?"

"No, it is not that."

"Then what?"

"I am just thinking how could you trust me just like that?"

इस बात पर हमारी हँसी ने एक साथ हमारे होंठों पर दस्तक दी। मैं उससे अगले दिन उसी जगह मिलने का वादा करके चली गई। उस दिन न उसने मेरा नाम पूछा न मैंने उसका। वह पहली बार था जब मुझे किसी विपरीत सेक्स की तरफ़ आकर्षण महसूस हुआ था। मेरे लिए मेरी उस भावना को शब्दों में लिखना बहुत मुश्किल था। वह जो कुछ भी था इतना अचानक हुआ था कि मुझे उसे समझकर शब्दों में समेटने का समय ही नहीं मिला था। इसीलिए शायद ये मुझ में ख़ुद को जानने की उत्सुकता जगा रहा था। वह आकर्षण अपने होने की हर संभावित वजह को झुठला रहा था। क्योंकि इसके होने की कोई वजह ही नहीं थी।

मुझे उससे बातें करने में बहुत मज़ा आया था। उसका ब्रिटिश एक्सेंट चेरी ऑन दि टॉप था। उसके भूरे बाल उसकी आँखों के रंग से मेल खाते थे। मैंने इससे पहले कभी किसी विदेशी से बात नहीं की थी। शायद यह भी एक वजह थी जो मैं उसकी तरफ़ ख़ुद को झुकता हुआ महसूस कर रही थी। वह मेरे शहर मेरे देश का नहीं था। मेरे लिए वह किसी और दुनिया से आया था जिसके बारे में मैंने सिर्फ़ पढ़ा था। उससे उसी की ज़ुबान में बात

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

करना मुझ में रोमांच पैदा कर रहा था। उस दिन वह सारी रात मैंने सुबह होने के इंतज़ार में गुज़ारी थी। जैसा हमने तय किया था मैं अगले दिन ठीक छह बजे उससे मिलने उसी जगह पहुँच गई थी। वह पहले से वहाँ कैमरे से तस्वीरें ले रहा था। मुझे आते हुए देख उसने कहा, "You are late."

"No, you are early."

"I couldn't sleep."

"Why?"

सो तो मैं भी नहीं पाई थी मगर मैं उसके न सो पाने की वजह जानना चाहती थी।

"Doesn't matter."

उसने इतना कहकर बात टाल दी। वह कुछ देर तक मुझे देखता रहा। उसके उस तरह देखने से मेरे शरीर में एक अजनबी-सी आहट दस्तक देने लगी थी। उसकी नज़रों की छुअन मुझ पर असर दिखा रही थी।

"Can I take a picture of you?" उसने पूछा।

"I prefer not."

"Why?"

"I don't want to be remembered by how I look." मैंने कहा।

"Then how?"

"By the time we spend together."

"You think a lot. Don't you?"

मुझसे बात करते हुए उसकी नज़रें मेरे चेहरे से हट नहीं रही थीं।

"Yes I do."

"Why?"

"Because people don't."

मेरा जवाब सुनकर उसकी उत्सुकता मुझ में बढ़ गई थी। मुझे भी उसके सवाल अच्छे लग रहे थे। मुझे उसका मुझे जानने में रुचि लेना भा रहा था। आज तक या तो लोग मुझ से डर जाते थे या उन्हें मैं कोई ऐसी चीज़ लगती थी, जिसकी भाषा उन्हें पढ़ने नहीं आती थी। उस दिन हम शिमला से कालकाजी चलने वाली टॉय ट्रेन का सफ़र करने गए जो कई सुरंगों और संकरे रास्तों से होकर गुज़रती है। जो वर्ल्ड हेरिटेज साइट्स की सूची में भी शामिल है। हम ट्रेन में साथ-साथ बैठे थे। मुझे उससे नज़दीकियाँ अच्छी लग रही थीं। वह मेरे साथ कम तस्वीरें ले रहा था। पर जब भी खिड़की से कुछ अच्छा नज़र आता तो मौक़ा हाथ से जाने भी नहीं देता था। मेरा तब तक कोई सपना नहीं था। पर मुझे उसका फ़ोटोग्राफ़ी के लिए पागलपन अंदर तक बेचैन कर रहा था। मैं ये तो जानती थी कि मुझे क्या नहीं करना है। पर मुझे करना क्या है इसकी खोज अभी बाक़ी थी।

मैं अपनी सोच में इतनी खो गई थी कि मुझे पता ही नहीं चला कि हम दोनों ने कब एक-दूसरे का हाथ पकड़ लिया था। उसने जब मुझे हमारे हाथों की तरफ़ देखते हुए देखा तो वह हड़बड़ा गया।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"Sorry I didn't realise it." उसने कहा।

"Mistakes are mutual." मैंने जवाब दिया।

इसके बाद उसने मेरा हाथ फिर से पकड़ लिया। फिर मुझसे पूछा, "Do you have a boyfriend?"

"This thing should not be asked."

"Not to everyone but to friends only."

"Are we friends?"

"Aren't we?"

"I think we are at the beginning of something."

कहकर मैंने उसकी नज़रों में झाँका।

"I like the way you put things in words."

मुझे ख़ुद अपने जवाब पर हैरानी हो रही थी। इससे पहले कभी किसी के साथ इस तरह की बातचीत कभी नहीं हुई थी। या यूँ कहो कि मुझे कभी कोई ऐसा मिला ही नहीं था जिसके साथ मैं इतना मैच्योर होना सोच भी सकती थी। वह बात करते-करते अपनी ली हुई तस्वीरें निकालकर देखने लगा। मैंने उसको उनमें खोया हुआ देखकर पूछा, "What is it like to have a dream?"

"It's like having an encounter with your soul. Something you only can own. The feeling is unearthly. Once you have it, you only want to live for it."

वह यह सब बताते हुए बहुत उत्साहित था। उसकी आँखें इस तरह चमक रही थीं जैसे वह अपने सामने अपना भविष्य देख रहा है, जहाँ वह एक बहुत बड़ा फ़ोटोग्राफ़र बन चुका है। परंतु मेरे मन में बार-बार यही प्रश्न उठ रहा था कि अगर सपना ढूँढ़ लेने के बाद हम सिर्फ़ अपने सपने के लिए जीना चाहते हैं तो इसका मतलब यह नहीं हुआ कि सपने हमें नियंत्रित करने लगे हैं? इससे पहले मैं अपने प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ पाती, स्टेशन आ गया।

हमने कालकाजी के स्टेशन पर उतरकर नाश्ता किया। उसके बाद उसने कुछ तस्वीरें ली। फिर हमने केबल कार की सैर की। उसने मुझे अपनी लंदन की लाइफ़ के बारे में बताया। अपने दोस्तों अपने परिवार के बारे में बताया। उसको दुनिया का बेहतरीन फ़ोटोग्राफ़र बनना था। घूम-फिरकर हम वापस शिमला आ गए। लौटकर हमने क्राइस्ट चर्च में कैंडल्स भी जलाई। फिर मैंने अगले दिन आने का वादा करके उससे विदा ली।

अगले दिन मैं भी एक घंटा पहले पहुँच गई थी। वह वहाँ पहले से था। उसने मुझे देखकर कहा, "You are early too."

"I couldn't sleep."

"Why?"

"For no reason." कहकर मैंने उसके चेहरे की तरफ़ इस तरह देखा जैसे उसके मन की बात पढ़ने की यह मेरी कोई कोशिश हो।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मेरा दिल बहुत ज़ोर से धड़क रहा था। उसने शायद उनका शोर सुन लिया था। फिर अचानक उसने बढ़कर मुझे अपने सीने से लगा लिया। अब मैं उसके इतने क़रीब थी कि उसकी धड़कनों का शोर भी सुन सकती थी। यानी जो कुछ मेरे साथ हो रहा था वह उसके साथ भी हो रहा था। वह पल एक ख़ूबसूरत तस्वीर की तरह उस वक़्त के कैमरे में इस तरह क़ैद हुआ कि आज भी मैं अपनी यादों की एल्बम में उसे किसी लाइव वीडियो की तरह बार-बार रिप्ले करके देख सकती हूँ। उसकी बाहों के घेरे में होते हुए भी मैं ख़ुद को बहुत आज़ाद महसूस कर रही थी। क्योंकि भले ही उसने मुझे सीने से लगाया था लेकिन उसके सीने से लगे रहना मेरी भी इच्छा थी। किसी के गले लगकर कैसा महसूस होता है यह उस दिन मैंने पहली बार जाना था। मैंने उससे न चाहते हुए भी दूर हटने की कोशिश की तो उसने मुझे ऐसा करने नहीं दिया। और मुझसे पूछा, आज कहाँ जा रहें है हम? उस दिन मैं उसे झाखू मंदिर ले गई थी। ऊपर से पूरा शिमला देखने में बहुत ही ख़ूबसूरत लगता है। वहाँ से शहर को देखते हुए उसने कहा, "It's wonderful."

"Whenever I come here I feel like we are just a tiny dot of this whole giant tapestry of the world."

मैंने उसकी तरफ़ देखते हुए कहा।

"Isn't it great? At least we are a part of this beautiful creation."

कहते-कहते उसने मेरे हाथों की उँगलियों में अपनी उँगलियाँ फँसा ली।

इसके बाद हमने स्पेस की, एलियंस की, दूसरे ग्रह पर जीवन होने की संभावनाओं की जाने कितनी बातें की।

फिर उसके जाने का वक़्त हो गया। उसने जाते हुए मुझसे पूछा, "You still didn't answer my question."

"Which one?"

"Do you have a boyfriend?"

"No"

"Why?"

"They are scared of me."

"Good for them."

"Do you have a girlfriend?"

"Not now."

वह भी जानता था इसके बाद हम फिर कभी नहीं मिलेंगे। लेकिन यह ख़याल कि जो वक़्त हमने साथ गुज़ारा था उस वक़्त में हम दोनों की ज़िंदगी में कोई नहीं था, हमें रोमांच से भर रहा था। उसके बाद मैंने अपनी ज़िंदगी के पहले चुंबन का उसके साथ अनुभव किया। यह मैंने अनजाने में नहीं समझते-बूझते किया था। मैं उसके स्वाद को उसके जाने के बाद भी अपनी ज़ुबान पर रखना चाहती थी। यादों का भी ऐसा ही है। किसी-न-किसी ख़ुशबू या स्वाद के साथ जुड़ ही जाती है। मैंने फिर उसे दोबारा मुड़कर नहीं देखा था। जाते हुए लोगों को देखना मुझे अच्छा नहीं लगता था। दुनियादारी की भाषा में बोलूँ तो वह मेरी

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

ज़िंदगी का पहला प्यार था। ऐसा आकर्षण मैंने ज़िंदगी में उसके बाद भी महसूस किया था, मगर उसके बाद जब भी हुआ उसके लिए मेरे पास कोई-न-कोई वजह रही। क्योंकि तब तक मैं दो लोगों के बीच के आकर्षण को पहचानने लगी थी। उस दिन देश में या दुनिया में क्या ख़ास घटा था मुझे इसकी कोई ख़बर नहीं है, क्योंकि मैंने कुछ दिन तक उसको सोचते हुए कोई ख़बर ही नहीं पढ़ी थी।

फिर एक दिन मेरी दादी चल बसी। उसी दिन मदर टेरेसा का भी निधन हुआ था। मेरी दादी ही थी जो मेरी माँ थी। उसे याद करने के लिए मुझे सोचने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती थी। उनके मरने पर माँ घर आई और सारी औपचारिकताओं के बाद मुझसे घर बेचने की बात करने लगीं। उन्हें पैसों की ज़रूरत थी। दादी ने घर मेरे नाम कर दिया था। माँ को पता था, मैंने आगे पढ़ने के लिए दिल्ली जाने का विचार बना लिया है। वह मेरे आगे घर बेचने के लिए गिड़गिड़ाने लगी। मैंने पूछा, "मैं आपके लिए ये घर क्यों बेचूँ?"

"क्योंकि इसके सिवा मुझे कोई और उम्मीद नज़र नहीं आ रही मीठी।"

मैं उनसे पूछना चाहती थी कि फिर मेरा क्या होगा, मगर उसकी जगह मैंने उनसे कहा, "इसके बाद आप मुझे हमेशा के लिए खो देंगी।"

"तू तो मुझसे बहुत पहले ही दूर हो चुकी है।"

यह कहते हुए उनकी आँखों में बेबसी के सिवा कुछ नहीं था। उनकी ज़रूरत उनके लिए इतनी बड़ी हो गई थी कि उन्होंने यह तक नहीं सोचा था कि घर बेचने के बाद मेरे लिए घर कहने को कोई जगह नहीं रह जाएगी। उन्हें खोने के बाद मैं भी तो अकेली हो जाऊँगी। उस दिन मेरे मन में माँ के लिए जो कुछ भी था सब मर गया था। उस दिन मेरा रिश्तों पर से भी विश्वास उठ गया था। फिर कुछ ही महीनों में घर बिक गया और मैं थोड़े से पैसों और दादी की थोड़ी-सी ज्वैलरी के साथ दिल्ली आ गई।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

पवन गुप्ता

नया दिन शुरू हो गया। क्या आज मुझे अपने सवाल का जवाब मिलेगा? क्या आज मुझे अपने मारने वाले का नाम पता लग पाएगा? मैं अपना क़ातिल ढूँढ़ लूँगी इसका मुझे पूरा विश्वास है। बस मेरे विश्वास की हद पूरी होने से पहले मेरी यह खोज पूरी हो जाए। क्योंकि जैसे-जैसे इंतज़ार लंबा होता जाता है वैसे-वैसे नकारात्मकता अपना एक रूप, रंग, आकार लेती जाती है और एक दिन अपने पूरे अस्तित्व में आकर हमारी सोच को अपनी दलदल में हमेशा के लिए दबा लेती है। हम एक तरह से उसके बंधुआ मज़दूर बन जाते हैं। और बंधुआ मज़दूरों की अपनी कोई आज़ाद सोच नहीं होती।

चौपाटी पर एक लाइन में जॉगिंग करने वाले लोगों को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे वह एक-दूसरे का पीछा कर रहे हैं। क्या आपका पीछा कभी किसी ने किया है? सेलिब्रिटीज़ की ज़िंदगी में होने वाला ये आम क़िस्सा है। लगभग हर सेलेब्रिटी को कभी-न-कभी एक बार छोटे या बड़े स्टॉकर का सामना करना ही पड़ता है।

वह मेरी एक फ़िल्म का लेखक था। फ़िल्म शूटिंग के दौरान हमारे बीच अच्छी जान-पहचान हो गई थी। कई बार शूटिंग ख़त्म होने के बाद हम डिनर पर भी जाते थे। फिर धीरे-धीरे उसका सेट पर आना-जाना बढ़ गया। वह बेवजह भी आने लगा। शूटिंग पर हम दोनों को लेकर खुसर-फुसर भी शुरू हो गई थी। मीडिया में भी अफ़वाहें उड़ने लगी थीं। भले ही वह शूटिंग पर आता था मगर मुझसे ज़्यादा नज़दीकियाँ बढ़ाने की कोशिश नहीं करता था। हमारी बातें दो अच्छी जान-पहचान वालों की हदों तक ही सीमित थीं। इसीलिए मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था कि कोई हमारे बारे में क्या सोच रहा है। एक दिन हम दोनों एक रेस्टोरेंट में डिनर कर रहे थे। तभी एक नौजवान मेरे पास मेरा ऑटोग्राफ़ माँगने आया। उसने ऑटोग्राफ़ को देखकर कहा कि आपका ऑटोग्राफ़ भी आप ही की तरह बहुत सुंदर है। क्या आप स्कूल में मिलने वाली सुलेख का सारा होमवर्क पूरा करती थीं? मुझे इस बात पर हँसी आ गई और मैं उससे दो मिनट बात करने लगी। जिसे देखकर वह चिढ़ गया। फिर उसके जाने के बाद उसने कहा, "मुझे ये सब पसंद नहीं।"

"क्या?"

"तुम्हारा इस तरह हँसकर किसी से भी बातें करना।"

उसका इस तरह मुझ पर अधिकार जताना मुझे पसंद नहीं आया। फिर मैंने भी रूखेपन से कहा, "तो मैं क्या करूँ? ये तुम्हारा प्रॉब्लम है मेरा नहीं।"

मेरा उसकी बात को गंभीर रूप से न लेने पर उसके चेहरे के भाव ग़ुस्से में बदलने लगे थे।

"क्या तुम ये सब करना बंद नहीं कर सकती?" उसने अपने ग़ुस्से को छुपाने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा।

"क्या?"

"ऐसे लड़कों से बात करना।"

"क्यों?"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"क्योंकि मैं कह रहा हूँ। हम डेट जो कर रहे हैं।"

"किसने कहा?"

अब मेरे भी सब्र का बाँध टूटने लगा था। मुझे उसकी आवाज़ से भी चिढ़ हो रही थी।

"फिर हम इतने दिनों से क्या कर रहे थे?"

"कम ऑन पवन, तुम एक राइटर होकर इस तरह का बेतुका सवाल कर रहे हो! मुझे लगता था राइटर्स ओपन माइंडेड होते हैं।"

"क्या तुम मुझे पसंद नहीं करती?"

"I don't have to answer this."

मेरा जवाब सुनकर उसका ग़ुस्सा जो उसने बहुत देर से अपने अंदर दबाया हुआ था उसके नियंत्रण से बाहर हो गया। ग़ुस्से में उसने वाइन से भरा गिलास ज़मीन पर पटक दिया। सब लोग हमारी तरफ़ ही देखने लगे। लोगों का शोरग़ुल सुनकर मेरा बॉडीगार्ड भी अंदर आ गया था और मुझे वहाँ से निकालकर ले गया। अगले दिन ये बात मीडिया में फैल गई। उसका शूटिंग पर आना रुकवा दिया गया। अफ़वाहों का बाज़ार फिर भी गर्म ही रहा। कुछ लोगों को यही लगता रहा कि मैंने उसे ऐसा सोचने के लिए बढ़ावा दिया था। ऐसे अधिकतर मामलों में अक्सर लड़कियों को ही दोषी ठहराया जाता है। नब्बे प्रतिशत दुनिया के लिए तो लड़के संत ही पैदा होते हैं।

कुछ महीने बीत गए। उसकी तरफ़ से मैंने इतने महीनों में कुछ नहीं सुना था। इन महीनों में मेरी मुलाक़ातें संदीप मित्तल के साथ बढ़ने लगी थीं। फिर अचानक से मुझे ख़ून से लिखे प्यार भरे ख़त मिलने लगे। ख़ून से लिखे ख़त प्यार भरे कैसे हो सकते हैं! मैं भी कभी-कभी कैसी बातें कर जाती हूँ! साथ ही जब भी मैं कहीं जाती थी तो मुझे ऐसा लगता था जैसे कोई मेरा पीछा कर रहा है। किसी की नज़रें मुझे अपनी पीठ पर ठहरी हुई-सी लगती थी। जैसे कोई अपनी आँखों से मुझे स्कैन कर रहा हो। मुझे अपने पूरे शरीर में एक अनचाहा-सा तनाव महसूस होने लगा था। मगर पीछे मुड़कर देखने पर कोई दिखाई नहीं देता था। हमेशा बेख़ौफ़ रहने वाली मैं हर वक़्त सावधान रहने लगी थी। जो दिखाई न दे पर महसूस हो, उससे थोड़ी घबराहट तो होगी ही। शुरू में तो मैंने उन ख़तों पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन जब उनका सिलसिला बढ़ने लगा तो मुझे ख़तरे का एहसास हुआ। अब ख़तों के साथ मुझे संदीप के साथ मेरी तस्वीरें भी मिलने लगी थीं, जिसमें संदीप का चेहरा लाल रंग की पेन से काटा हुआ होता था। मैंने संदीप को इन सब के बारे में बताया तो उसने मुझे पुलिस की मदद लेने की सलाह दी। पुलिस को ख़बर देते ही ये बात मीडिया की नज़रों से भी बच नहीं पाई। संदीप ने भी अपने कॉलम में इस बारे में लिखा-

एक अभिनेत्री की ज़िंदगी कई तरह के डर और हादसों से भरी होती है। पहले इस इंडस्ट्री में अपनी जगह न बना पाने का डर। फिर फ़िल्म के फ़्लॉप हो जाने का डर। फ़िल्म चल जाए तो उस मुक़ाम को बनाए रखने का डर। इस पर भी कम पड़ जाए तो एक फ़ेसलेस स्टॉकर का डर। आज मीरा एक ऐसे ही स्टॉकर के डर से जूझ रही हैं। ऐसे लोग कुछ दिनों तक तो डर का माहौल बना सकते है, परंतु जीत हासिल नहीं कर सकते। इनका अंत पहले से ही तय होता है। आज नहीं तो कल वह मुँह छिपाकर पीछा करने वाला पकड़ा ही

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

जाएगा। मगर आज मैं उससे एक सवाल पूछना चाहता हूँ। क्या इस तरह से ख़ून से लिखे ख़त भेजकर वह मीरा को हासिल कर लेगा? आपमें से कोई भी कभी मीरा के आस-पास किसी ऐसे व्यक्ति को देखें जिस पर संदेह किया जा सके तो कृपया तुरंत पुलिस में ख़बर कीजिए। यक़ीन मानिए ऐसा करके आप एक मानसिक रोगी की मदद ही करेंगे। आख़िर में मैं बस मीरा से यही कहना चाहता हूँ कि वह हमेशा की तरह मैदान में डटी रहें। हर बार की तरह जीत उन्हीं की होगी।

संदीप का ये आर्टिकल पढ़ने के बाद उसने मुझे मेरी और संदीप की मरीन ड्राइव पर एक-दूसरे को चूमते हुए कुछ तस्वीरें भेजी और साथ ही ये धमकी भी दी कि अगर संदीप चुप नहीं हुआ तो वह वो तस्वीरें मीडिया में लीक कर देगा। मगर संदीप नहीं माना। वह कुछ-न-कुछ इस बारे में कहीं-न-कहीं लिखता और कहता रहा। उसका कहना था इस तरह से वह जोश में आकर अपने बिल से बाहर निकल आएगा। फिर एक दिन सब अख़बारों में और ख़बरों में हमारी तस्वीरें वायरल हो गईं। अब लोगों का ध्यान उससे हटकर मेरे और संदीप के बीच क्या रिश्ता है इस पर आकर अटक गया था। मैंने और संदीप ने स्वीकार कर लिया कि हम दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। हालाँकि इस ख़बर की गर्माहट ने स्टॉकर वाली ख़बर को थोड़ा ठंडा कर दिया था। फिर भी हम उसे जीतने का एक भी मौक़ा नहीं देना चाहते थे। फिर एक दिन कुरियर से मुझे एक शादी का जोड़ा मिला जिसके साथ एक ख़त भी था। जिसमें लिखा था-

"किसी की हथेली छूते ही अगर उसकी आँखों में पूरी दुनिया नज़र आने लगे तब समझ जाना चाहिए कि यही वो दुनिया है जिसे ढूँढने के लिए हमारा जन्म इस दुनिया में हुआ है। मेरे लिए तुम वो दुनिया हो। अभी तो सिर्फ़ शादी का जोड़ा भेज रहा हूँ ताकि तुम जान पाओ कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ। मेरी चाहत तुम्हारे लिए कितनी सच्ची है। तुम जान हो मेरी और जान को ख़ुद से दूर नहीं रखा जाता। जब इस बात का एहसास मैं तुम्हें दिला दूँगा तब मैं तुम्हें ख़ुद लेने आऊँगा। तुम इसी शादी के जोड़े को पहनकर मेरी ज़िंदगी में क़दम रखोगी।"

ये मेरी ही एक फ़िल्म का डॉयलॉग था जिसे उस लेखक पवन ने ही लिखा था। मेरा शक उसकी ओर गया। फिर इस बारे में मैंने पुलिस को भी सूचना दे दी। जब पुलिस उसके घर की तलाशी लेने गई तो वहाँ उन्हें मेरी कई सारी तस्वीरें मिलीं। जिन तस्वीरों में मैं किसी और के साथ थी उनमें उन लोगों का चेहरा बिगड़ा हुआ था। तस्वीरें देखकर ऐसा लग रहा था जैसे पिछले कुछ समय से वह मेरे साथ मेरे साए की तरह चल रहा था। फिर उसकी तस्वीरें सब अख़बारों और टीवी चैनलों में वायरल हो गई।

इसी बीच मुझे उसका एक और ख़त मिला जिसमें लिखा था- *"आख़िर पहचान ही गई न तुम मुझे। और कहती हो तुम मुझे पसंद नहीं करती। तुम मुझसे बहुत प्यार करती हो। बस यह बात तुम ख़ुद नहीं जानती। अभी तो पुलिस मेरे पीछे है पर मेरा वादा है मैं जल्द तुमसे मिलूँगा।"*

अपने इस फितूर को वो प्रेम कहता था। यह बस उसकी एक सनक थी। सनक बिना दिमाग़ की वह काया होती है जो सिर्फ़ वह करना जानती है जिसके लिए उसका जन्म हुआ

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

है। ऐसा करते हुए वह उस इंसान को बर्बाद भी कर सकती है जो उसका अपना है, इस बात का एहसास भी उसे नहीं होता। प्रेम में हम भावनात्मक और आध्यात्मिक रूप से आबाद होते हैं। बर्बादी की राह कभी प्रेम की हो ही नहीं सकती। प्रेम जुगनू बनकर जीवन के हर अँधेरे कोने में रौशनी का एहसास देता है। प्रेम के नाम पर किसी को पा लेने की ज़िद हमारे जीवन से अमावस्या की रात को कभी ख़त्म होने ही नहीं देती।

पुलिस उसे ढूँढ़ती रही पर वह मिला नहीं। जाने कौन-सी जगह जाकर छुप गया था। एक दिन उस लड़के ने जो अविनाश लूथरा के यहाँ काम करता था उसने पुलिस स्टेशन जाकर उस जगह की सूचना दी जहाँ वह स्टॉकर छिपा हुआ था। पुलिस के डर से वह किसी छोटी-सी चाल में जाकर रहने लग गया था, जहाँ उस लड़के ने उसे पहचान लिया था। उसके पकड़े जाने पर उसे कुछ सालों की जेल हो गई थी। जिस दिन वह पकड़ा गया था उसी दिन इंडिया ने अपना फ़र्स्ट न्यूक्लियर सबमरीन अरिहंत का उद्घाटन किया था। इस बात को लगभग दस साल हो गए। मुझे नहीं पता वह अब कहाँ है। जेल में ही है या छूट गया। उसका नाम पवन गुप्ता था। और जो कुछ-कुछ सुनील शेट्टी की तरह नज़र आता था। क्या वह मेरा क़ातिल है?

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

दिल्ली : एक पड़ाव

चौपाटी पर चहल-पहल बढ़ गई है। आज भी मौसम कुछ बरसने वाला ही लग रहा है। इन सब ज़िंदगियों के बीच मैं ख़ुद को एलियंस-सा महसूस कर रही हूँ। जैसे मैं इस दुनिया को नहीं पहचानती। जैसे मुझे इन लोगों की ज़ुबान नहीं आती। इन से जुड़ न पाने का बेवजह डर सता रहा है। क्या यहाँ कोई और भी मेरे जैसा होगा जो अपनी किसी इच्छा की वजह से अटका होगा? आज अपने ही जैसे किसी को देखने की कितनी तलब हो रही है! इंसान ज़िंदा हो या मरा हुआ उसे किसी-न-किसी का साथ चाहिए। वह अकेले बचा तो रहता है मगर मानसिक तौर पर बीमार होता जाता है। मेरे साथ ऐसा कुछ भी होने से पहले मैं बस चाहती हूँ कि मुझे मेरे मरने वाले का नाम पता चल जाए। फिर मैं भी चैन से उस दुनिया में चली जाऊँगी जहाँ मरने के बाद लोग अपनी पहचान ढूँढ़ते हैं।

ऐसी ही घबराहट मुझे तब हो रही थी जब मैं शिमला से दिल्ली आई थी। उस वक़्त मैं उन्नीस वर्ष की थी। वह शहर मेरे लिए बिलकुल नया था। हालाँकि उस शहर के बारे में, उसके इतिहास के बारे में मैं अच्छे से वाक़िफ़ थी। यूँ तो मैंने इसके बारे में बहुत-सी किताबों में पढ़ा था मगर इस शहर की तरफ़ मेरा आकर्षण William Darlymple की 'City of Djinn' पढ़कर बढ़ा था। ये शहर न जाने कितनी बार उजड़ा कितनी बार बसा। इसकी यही बात मुझे बार-बार यहाँ आने को उकसाती थी। मैं इस शहर से इसका वह राज़ पूछना चाहती थी जिसकी वजह से इतने तूफ़ान झेलने के बाद भी ये खड़ा रहा। मगर मैं यहाँ एक मेहमान बनकर नहीं, अपने लिए एक जगह तलाशने आऊँगी ये मैंने कभी नहीं सोचा था।

मैं दिल्ली में कुछ समय शिल्पी के घर पर ही ठहरी थी। उसका दिल्ली के प्रीत विहार इलाक़े में ठीक-ठाक बड़ा-सा घर था। उसके मम्मी-पापा ने मुझे मेरा अपना एक कमरा सेकंड फ़्लोर पर दे दिया था। साथ ही ये तसल्ली भी दी थी की मैं जब तक चाहूँ उनके साथ रह सकती हूँ। उसके पापा बार-बार यही कहते रहते थे कि मेरे बाबा ने उनकी शिमला में बसने में बहुत मदद की थी। अब उनकी बारी है। जिस दिन मैं दिल्ली आई थी उसी दिन फ़िल्म 'कुछ कुछ होता है' रिलीज़ हुई थी। शिल्पी मेरा मूड अच्छा करने के लिए मुझे अगले दिन डिलाइट सिनेमा पर फ़िल्म दिखाने ले गई थी। तब मल्टीप्लेक्स सिनेमा नहीं हुआ करते थे। पूरे दिन में चार ही शो होते थे। हमने तीन से छह का शो देखा था। यहाँ का सिनेमा हॉल शिमला के सिनेमा हॉल से बहुत अलग था। फ़िल्म में शिमला के समर कैंप को देखकर मुझे शिमला का समर फ़ेस्टिवल याद आया। समर फ़ेस्टिवल से मुझे वह ब्रिटिश याद आया। हमने एक-दूसरे का नाम ही नहीं पूछा था। उसे याद करते हुए मुझे फ़ोटोग्राफ़ी के लिए उसका जुनून याद आया। यह याद आते ही मुझे ऐसे लगा जैसे मैं बिना किसी दिशा के एक आवारा ख़याल की तरह एक बिंदु से दूसरे बिंदु पर भटकती जा रही हूँ। तब मुझे बाबा की बात का मतलब समझ आया था कि क्यों हमारे लिए जानना ज़रूरी है कि हम ज़िंदगी में क्या करना चाहते हैं। सुनकर आपको अजीब लगेगा लेकिन मुझे उस भटकने में

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

भी एक सुख-सा महसूस होता था। अभी सोचती हूँ तो मेरी वह तलाश मेरी एक उत्सुकता भर थी, सिर्फ़ इस बात को जानने की कि मुझे किस काम को करके सबसे ज़्यादा ख़ुशी मिलती है।

फ़िल्म के बाद शिल्पी मुझे निरुलाज़ में पिज़्ज़ा खिलाने के लिए ले गई थी। तब तक डोमिनोज़ और पिज़्ज़ा हट की मार्केट नहीं बनी थी। शिल्पी मुझे अच्छा महसूस करवाने के लिए हर तरह की कोशिश कर रही थी। मगर मेरा मन सिर्फ़ इन सवालों का जवाब ढूँढ़ रहा था। मैं कौन हूँ? मैं क्यों हूँ? मेरा सपना क्या है? मैं अब तक ये नहीं जानती थी कि मैं यहाँ क्या करने आई हूँ। मेडिकल एंट्रेंस की टॉप रैंक की सूची में होने के बावजूद मैंने एडमिशन नहीं लिया था। जिस दिन एडमिशन की आख़िरी तारीख़ थी उस दिन अचानक मुझे लगा ये करना तो बहुत आसान है। बस उसी वक़्त मैंने एडमिशन न लेने का फ़ैसला कर लिया था। उस वक़्त भी मुझे नहीं पता था कि मैं ये नहीं करूँगी तो क्या करूँगी। मैं सिर्फ़ इतना जानती थी यह मुझे नहीं करना है। मेरे साथ हमेशा ऐसा ही रहा। मुझे क्या नहीं करना है इसका पता मुझे झट से चल जाता था। मुझे क्या करना है, ये मैं अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी ठीक से जान ही नहीं पाई थी। या शायद मैं जानना ही नहीं चाहती थी।

तीन दिन बाद दीवाली थी। दीवाली के वक़्त दिल्ली शहर की रौनक़ सितारों भरे आसमान से कम नहीं होती। मेरी ज़िंदगी की शायद वह पहली दीवाली थी जिसमें मुझे दीवाली का सही स्वाद चखने को मिला था। शिमला में दीवाली इतनी धूमधाम से नहीं मनाई जाती थी। मेरे बाबा के मरने के बाद तो हमने कभी इसे मनाया ही नहीं था। ये पहली ख़ुशी थी जो इस शहर ने मुझे दी थी। त्योहार के रंग परिवार के एक साथ ख़ुश रहने पर ही खिलते हैं, ये मैंने उस दिन जाना था।

शिल्पी मेरे आने से बहुत ख़ुश थी। उसे लगता था मैं उसके सपनों को समझती हूँ। अब वह ज़्यादातर मेरे ही कमरे में रहा करती थी। बहुत बार तो वह सो भी वहीं जाती थी। मुझे उसका साथ अच्छा लगता था, मगर कई बार अपने स्पेस की कमी भी महसूस होती थी। वह बस अपने सपनों के बारे में ख़याली पुलाव पकाती रहती थी। मैं ऐसा इसलिए कह रही हूँ क्योंकि उसके पास अपने सपनों को पूरा करने के लिए कोई प्लान नहीं था। कई बार मुझे अपने ऐसे सोचने पर ग्लानि भी होती थी। कम-से-कम उसके पास कोई सपना तो था। मेरे पास तो कुछ भी नहीं।

शिल्पी देखने में सुंदर थी। बिलकुल अमृता राव की तरह, जब वह पहली बार 'इश्क़ विशक' में आई थी। वह दिल्ली यूनिवर्सिटी के मिरांडा कॉलेज में आर्ट्स की स्टूडेंट थी। मगर मुझे कभी उसमें वह ज़िद, वह जुनून, वह पागलपन दिखाई नहीं दिया जो उस ब्रिटिश में अपनी फ़ोटोग्राफ़ी के लिए था। इसीलिए कभी-कभी मुझे उसके दिल टूटने का डर भी लगता था।

मेरी अँग्रेज़ी अच्छी होने की वजह से कुछ दिनों बाद मैंने एक कोचिंग सेंटर में अँग्रेज़ी सिखाना शुरू कर दिया था। इससे मेरा जेब ख़र्च चलता रहा। मौक़ा लगने पर मैं दिल्ली की किसी एक ऐतिहासिक जगह पर जाकर बैठ जाती थी और उससे जुड़ने की कोशिश करती। अगर आपको किसी की कहानी पता होती है तो आप उसका दर्द, उसकी ख़ुशी,

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

उसके सपने सब देख पाते हैं। इन जगहों पर भी जाने कितनी कहानियाँ दफ़न होती हैं। कुछ ख़ूनी तो कुछ मासूम। हमारी यादें भी तो कुछ ऐसी ऐतिहासिक स्मारकों जैसी ही होती हैं। अपनी एक कहानी लिए हुए। इन कहानियों को भी तो किसी एक का इंतज़ार होता है जो इनसे जुड़ पाए।

एक दिन शिल्पी अपने माँ-बाप के लिए एक ख़त छोड़कर अपने घर से भाग गई जिसमें लिखा था कि वह अपना मिस यूनिवर्स बनने का सपना पूरा करने जा रही है। प्रतियोगिता के बाद वह वापस आ जाएगी। उसके माँ-बाप ने बहुत ढूँढ़ा, वह नहीं मिली। एक दिन वह घर लौट आई। उसके माँ-बाप ने कुछ दिन ग़ुस्सा दिखाने के बाद उसे माफ़ कर दिया। मगर उसके कहीं भी अकेले आने जाने पर रोक लगा दी। उसने मुझे बताया कि उससे किसी ने वादा किया था मिस इंडिया की ट्रेनिंग दिलवाने का। मगर उसने कुछ दिन शिल्पी के साथ बिताकर उसे ये कहकर घर भेज दिया कि इस साल नहीं हो पाएगा। फिर कुछ दिन बाद शिल्पी ने मुझे बताया कि उसने फिर से उसे एक फ़िल्म में काम दिलवाने का वादा किया है जिसके लिए वह आज फिर से घर से भागने वाली है। मैंने ये बात उसके माँ-बाप को बता दी। इसके बाद शिल्पी ने मुझसे कभी बात नहीं की। मेरी पहली फ़िल्म के बाद मुझे उसका एक नोट मिला था जिस पर लिखा था- 'Bitch.' क्या मेरा उसके माँ-बाप को ये बात बताना ग़लत था?

इस घटना के बाद मैंने उनका घर छोड़ दिया था। मैं एक पीजी में रहने लगी थी। अब तक मैं इसी प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ रही थी कि आख़िर मैं करना क्या चाहती हूँ। यह मोड़ हर किसी की ज़िंदगी में एक बार ज़रूर आता है जब हमारे पास प्रश्नों की लंबी फ़ेहरिस्त होती है परंतु उत्तर का कोई अता-पता नहीं होता। या यूँ कहो कि सब हमारे सामने होता है मगर हमें वो पुल ही नज़र नहीं आता जो उन्हें एक-दूसरे से जोड़ता है। क्योंकि हम जानते ही नहीं कि हमें किस दिशा में देखना चाहिए। अपनी सोच को सही दिशा देने के लिए मैंने ओशो और बुद्ध को पढ़ना शुरू कर दिया था। मैं जितना उन्हें पढ़ती मेरी उन्हें पढ़ने की लालसा और बढ़ती जाती। उन्हें पढ़कर मुझे अपने और दुनिया के बीच की खाई और बड़ी लगने लगती। मुझे ऐसा लगता जैसे मैं सब जानती हूँ। मुझे जीवन दर्शन की सब समझ आ गई है। यहाँ तक कि मैं बुद्धिस्ट मोनेस्ट्री देखने चीन तक हो आई थी। एक दिन मैं चीन के एक बुद्ध मंदिर में बैठी हुई थी। वहाँ होने वाले मंत्रोच्चार की ध्वनि और अगरबत्ती की सुगंध मिलकर ऐसा तिलिस्मी वातावरण बना रही थी कि वहाँ से बाहर जाने का रास्ता ढूँढ़ने की सुधबुध ही नहीं रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे जबसे मेरा अस्तित्व है मैं इसी दुनिया को जानती हूँ। सब कुछ मंदिर की घंटी जैसा सुनाई दे रहा था। तभी मुझे एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनाई दी। मेरा ध्यान टूटा। ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे खोने से बचा लिया है। शायद वो मेरी जीने की ज़िद ही थी जिसने उस तिलिस्म को भेदकर मुझ तक उस बच्चे का रोना पहुँचने दिया। बुद्ध का आध्यात्मिक ज्ञान हो या ओशो का व्यावहारिक ज्ञान, लगातार सिर्फ़ इन्हीं को पढ़ते रहने से ये हमें ज़िंदगी से विमुख होने पर मजबूर कर देते हैं। इनकी मदद से अपने होने का मक़सद ढूँढ़ते-ढूँढ़ते हम हर चीज़ के होने पर प्रश्न करने लगते हैं। हमारा जन्म जीने के लिए हुआ है संत बनने के लिए नहीं। इनकी ज्ञान भरी बातें हमें

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

किसी और की सोच का ग़ुलाम न बनने को प्रेरित करती हैं। किसी भी तरह की आदत से दूर रहने को कहती हैं। परंतु इन्हें पढ़ते-पढ़ते हम इन्हीं की सोच के ग़ुलाम हो जाते हैं। हमारी अपनी कोई सोच रह ही नहीं जाती। यहाँ तक कि हम भाषा भी इनकी बोलने लग जाते हैं। शायद इनकी राह पर चलना किसी का सपना हो सकता है पर मैं किसी के भी क़दमों के निशान पर नहीं चलना चाहती थी। इसीलिए वहाँ से आकर मैंने इनकी सारी किताबें एक लाइब्रेरी में दान कर दीं। लेकिन कहते हैं न कोई भी अनुभव कभी बेकार नहीं जाता। फिर चाहे वह एक असफल कोशिश ही क्यों न हो!

मुझे भले ही इन्हें पढ़कर अपने सवालों के जवाब न मिले हों लेकिन इन्हें पढ़ने के बाद मेरी सोच में मैंने उतना ही फ़र्क़ महसूस किया था जितना शिक्षित हो जाने के बाद एक अनपढ़ महसूस करता है। इन्हें पढ़ना चाहिए मगर एक हद तक।

बीता हुआ कल भी याद करते हुए थकावट होने लगती है। थोड़ा यादों को ब्रेक देना चाहिए।

कुछ लोग झुंड बनाकर मोबाइल पर क्या देख रहे हैं? अभी-अभी मैंने इनकी बातों में अपना नाम सुना। पास जाकर देखती हूँ। ओ माय गॉड पवन गुप्ता ने आत्महत्या कर ली! अभी आपको इसी की कहानी तो सुना रही थी। सुनिए क्या ख़बर चल रही है।

मीरा की मौत की ख़बर सुनकर पवन गुप्ता नामक एक लेखक ने आत्महत्या कर ली है। एक समय पर वह फ़िल्मों के लिए स्क्रिप्ट लिखा करते थे। दस साल पहले उन्हें मीरा को स्टॉक करने की वजह से तीन साल की सज़ा हुई थी। जेल से छूटने के बाद से ही वह अपने गाँव में अपने परिवार के साथ गुमनामी की ज़िंदगी जी रहे थे। उनके घर वालों ने बताया कि मीरा की मौत की ख़बर वह सह नहीं पाए और कमरे की छत पर छींके के लिए लगाए गए कुंडों से फाँसी लगाकर अपनी जान दे दी। उनके घर वालों ने अभी बताया कि वह मीरा की हर एक फ़ोटो जो कहीं भी छपती थी ढूँढ़-ढूँढ़कर इकट्ठा करते थे।

क्या मिला इसे मेरे लिए अपनी पूरी ज़िंदगी बर्बाद करके! अच्छा-ख़ासा बॉलीवुड में नाम था। अपने सिर्फ़ एक पागलपन के लिए सब कुछ ख़राब कर दिया। इंसानियत के नाते मुझे उसकी मौत पर दुख होना चाहिए। मगर मुझे ऐसा कुछ महसूस नहीं हो रहा। हाँ, अगर उसका मरना एक हादसा होता तो शायद मैं दो मिनट मौन रखकर उसकी मौत पर अपना शोक जता देती। मगर आत्महत्या भी तो एक हत्या ही है। कोई ख़ुद को मारना ही चाहता हो तो उसके लिए क्या अफ़सोस करना! मेरी नज़र में ख़ुद को मार लेने से ज़्यादा बड़ा कोई अपराध नहीं। पर मेरे मरने के बाद भी इसने मेरा पीछा नहीं छोड़ा। कहीं मेरा पीछा करते-करते वह यहाँ तक आ गया तो?

हाँ, तो मैं आपको दिल्ली की कहानी सुना रही थी।

चीन से वापस आने के बाद मेरी ज़िंदगी फिर से उसके होने का उद्देश्य तलाशने लगी थी। अपनी ज़िंदगी से ज़िंदगी को इस तरह बेवजह घटता देखकर मुझे हर पल बेचैनी होती रहती। बस हर पल यही महसूस होता कि वक़्त रेत की तरह मुट्ठी से फिसलता जा रहा है और मैं जैसे समुद्र किनारे बैठी उसमें कंकड़ डालकर उसकी गहराई नापने की कोशिश कर

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

रही हूँ। यही सोचते-सोचते मैं घर से कोचिंग तक का सात-आठ किलोमीटर का सफ़र पैदल ही तय कर जाती थी। शिमला जैसे पहाड़ी इलाक़े में रहने की वजह से मुझे पैदल चलना अच्छा लगता था। अभी तक मुझे दिल्ली की बसों की आदत नहीं हुई थी। ऐसे ही एक दिन कोचिंग से घर जाते हुए मैंने एक व्यक्ति को देखा जो कार धो रहा था। कोई सोच भी नहीं सकता इतना मामूली-सा काम करते हुए भी कोई इतना ख़ुश हो सकता है। कार धोते-धोते साथ में वह कोई गीत भी गुनगुना रहा था। उसे देखकर मेरे मन में ख़याल आया कि कार धोने वाला बनना तो उसका सपना नहीं होगा। मगर फिर भी वह ज़िंदगी जीने का लुत्फ़ उठा रहा है। उसे देखकर मुझे एहसास हुआ कि ज़िंदगी का मक़सद उसे जीना होना चाहिए। कोई लक्ष्य हो तो अच्छी बात है। अगर नहीं है तो इसका मतलब यह नहीं कि लक्ष्य ढूँढ़ना ही इसका लक्ष्य बना लिया जाए। कुछ भी करो मगर उसे करते-करते जीना मत भूलो।

इसके बाद मैंने दिल्ली यूनिवर्सिटी के किरोड़ीमल कॉलेज में इंग्लिश लिट्रेचर के लिए अपना रजिस्ट्रेशन करवा लिया। कुछ तो करना ही था! ये एडमिशन कोचिंग सेंटर में मेरे साथ पढ़ाने वाली एक और टीचर की जान-पहचान और मेरे बारहवीं में अच्छे नंबरों की वजह से साल के बीच में ही हो गया था। ऐसा मैंने साहित्य के लिए अपने रुचि के चलते किया था। पढ़ने के साथ-साथ मैं कॉलेज के कल्चरल ग्रुप का भी हिस्सा बन गई थी। जब भी कभी कॉलेज में कोई नाटक होता तो मैं उसमें कभी हिस्सा नहीं लेती थी। मगर पर्दे के पीछे रहकर उस नाटक को पर्दे के सामने लाने तक की जो प्रक्रिया होती थी उसका हिस्सा बनने में मुझे बहुत मज़ा आता था।

उसी कॉलेज में मेरी जान-पहचान एक लड़के से हुई थी जिसका नाम था राहुल कुमार। मैं उम्र में उससे एक साल बड़ी थी। उसे भी एक्टर बनना था, मगर फ़िल्मों का नहीं थियेटर का। एक और बात मेरे साथ बहुत अजीब रही कि मुझे अपनी ज़िंदगी में ज़्यादातर ऐसे ही लोग मिले जो किसी-न-किसी तरह से सिनेमा से जुड़े रहना चाहते थे। राहुल का सपना नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा (एनएसडी) में एडमिशन लेने का था, जिसकी तैयारी वह अभी से कर रहा था। उसने मुझे बताया कि उसके पापा वहीं एनएसडी में कैंटीन चलाते हैं। जिसकी वजह से वह वहाँ पर कई फ़िल्मी हस्तियों को देख चुका है। उसने मुझे अपने साथ वहाँ ले जाने का वादा भी किया। मुझे एनएसडी के बारे में सुनकर मन में उसके लिए एक उत्सुकता-सी होने लगी थी। किसी स्कूल में एक्टिंग सीख भी सकते हैं ऐसा मैंने पहले कभी सोचा ही नहीं था।

एक दिन मैं राहुल के साथ फ़िल्म देखने गई। वहाँ मेरी बग़ल वाली सीट पर एक लड़की बैठी हुई थी, जो बड़ी शिद्दत से फ़िल्म देख रही थी। जब ब्रेक हुआ तो राहुल पॉपकॉर्न लेने बाहर चला गया था। उस लड़की और मेरी नज़रें टकराईं। उसने मुझे देखते ही कहा, "You are beautiful!"

अचानक से एक अजनबी से ऐसा सुनकर मैं थोड़ा हैरान हो गई थी। मगर फिर भी अपनी हैरानी को छुपाते हुए मैंने उसे जवाब दिया, "Thank you. You are charming too."

"तुम दिल्ली की नहीं लगती?" उसने पूछा।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"शिमला। तुम?"

"गंगटोक। यहाँ एक ब्यूटी पार्लर में काम करती हूँ। तुम क्या करती हो?"

"फ़िलहाल तो सिर्फ़ स्टडीज़। आज थोड़ा बोर हो रही थी तो अपने फ्रेंड के साथ फ़िल्म देखने आ गई।"

"मेरी भी आज छुट्टी थी। इसीलिए टाइमपास के लिए मैंने सोचा क्यों ना फ़िल्म देख ली जाए! हम जैसे लोग ऐसा न सोचें तो इन फ़िल्मों का क्या होगा!"

उसने थियेटर की ख़ाली पड़ी सीटों को देखते हुए कहा। फिर इस बात पर हम दोनों ही हँस पड़े। हमारी हँसी हमारा एक-दूसरे का नाम जानने के बाद ही रुकी। उसका नाम था राज़ी। जी हाँ, वही राज़ी जो बाद में मेरे घर की केयर टेकर बन गई थी। उसके पापा नहीं थे और उसकी माँ गंगटोक में उनके अपने घर में अकेली रहती थी। उस दिन के बाद राज़ी और मैं अक्सर मिलने लगे। उसने ही पहली बार मेरी थ्रेडिंग, वैक्सीन, फ़ेशियल और हेयर कट किया था। इससे पहले तक मेरे बाल मेरी दादी ही ट्रिम कर दिया करती थी। मैं राज़ी के रूप में एक दोस्त पाकर ख़ुश थी। वह बहुत ही प्यार और परवाह करने वाली लड़की थी। सबसे अच्छी बात उसकी ये थी कि उसने मुझे जैसी मैं थी वैसे ही स्वीकार किया था। वह एक-दूसरे के एकांत और स्वतंत्रता का आदर भी करती थी।

उधर राहुल और मेरे बीच भी एक अच्छा संबंध बन गया था। दिल्ली अब मुझे अपनी-सी लगने लगी थी। मैंने और इस शहर ने एक-दूसरे को पहचानना शुरू कर दिया था। एक दिन राहुल मुझे अपने साथ एनएसडी लेकर गया। वहाँ जाकर मुझे ऐसा लगा जैसे मैं हमेशा से वहाँ जाना चाहती थी। उसी वक़्त मैंने सोच लिया था कि मैं भी इधर डायरेक्शन सीखने के लिए एडमिशन लूँगी। कॉलेज में नाटक की डायरेक्शन टीम का हिस्सा बनते-बनते मुझे भी इसमें रुचि होने लगी थी। तब मैंने पता किया कि वहाँ एडमिशन लेने के लिए आपका ग्रेजुएट होना ज़रूरी है। हर साल केवल 25-26 कैंडिडेट्स को ही एडमिशन मिलता है। साथ ही आपको कुछ 5-6 प्ले में काम करने का अनुभव होना चाहिए। मैंने ठान लिया था कि मैं ख़ुद को वहाँ के लिए योग्य बनाकर ही रहूँगी। उस दिन मुझे ऐसा लगा था जैसे मेरी ज़िंदगी की रेल को भी एक पटरी मिल गई है।

अक्सर मुझे रात को घर लौटने में देर हो जाती थी। मेरी पीजी की वार्डन को ये पसंद नहीं था। उसने मुझे कमरा ख़ाली करने को कहा। तब राज़ी ने मेरा साथ दिया। उसने और मैंने साथ मिलकर एक दो कमरों का घर किराए पर ले लिया, जिसे दिलवाने में शिल्पी के पापा ने हमारी बहुत मदद की थी। शिल्पी भले ही मुझसे बात नहीं करती थी मगर उसके पापा अक्सर मेरे कोचिंग सेंटर पर आकर मेरा हाल-चाल पूछ जाते थे। उन्होंने मेरा दिल्ली में बैंक अकाउंट खुलवाने में भी अपना पूरा सहयोग दिया था। उन्होंने ही मुझे बताया था कि शिल्पी का रिश्ता पक्का हो गया है और वह शादी के बाद कनाडा चली जाएगी। मुझे नहीं पता था कि इस बात पर मुझे ख़ुश होना चाहिए था या दुखी क्योंकि उस वक्त मैं ये नहीं जानती थी कि ये सब उसकी मर्ज़ी से ही रहा है या उसके साथ ज़बरदस्ती की गई है।

अब राज़ी और मैं साथ रहने लगे थे। उसके पास घर और किचन का लगभग हर ज़रूरी सामान था। हमारा घर मेरे कॉलेज और उसके पार्लर के नज़दीक ही था। अब मैं कोचिंग

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

सेंटर में पढ़ाने सिर्फ़ वीकेंड पर ही जाती थी। हाँ, मगर रोज कुछ बच्चों को घर पर ही मैंने ट्यूशन देना शुरू कर दिया था। मेरे पास घर बेचने के बाद मिले कुछ पैसे और दादी की दी हुई छोटी-मोटी कुछ ज्वैलरी थी जिसे मैंने बैंक में अलग से रख दिया था ताकि एनएसडी में एडमिशन के वक़्त काम आ सके। राज़ी मुझसे खाने-पीने के पैसे नहीं लिया करती थी। वह हमेशा यही कहती कि जब तुम कुछ बड़ा करने लग जाओ तब सारा उधार चुका देना। उसे अपने पापा की वजह से आयुर्वेद की जड़ी-बूटियों और योग का अच्छा-ख़ासा ज्ञान था। उसने मुझे रोज़ सुबह जल्दी उठाकर योगा भी सिखाना शुरू कर दिया था, जो मेरे मरने तक मेरी दिनचर्या में शामिल रहा था। राज़ी इमोशनली भी काफ़ी मज़बूत थी। उसे ग्राउंड फ़्लोर पर रहने वालों की बिल्ली से बहुत प्यार था। मगर उस बिल्ली को एक जानलेवा बीमारी हो गई थी। उस वजह से वह बहुत दर्द में थी। तब डॉक्टर ने उसे हमेशा के लिए गहरी नींद में सुला देने की सलाह दी। मगर वह लोग ऐसा करने का मन नहीं बना पाए थे और बिल्ली को लेकर घर आ गए। डॉक्टर ने उन्हें इंजेक्शन भी दिया था कि अगर वह ज़्यादा दर्द में हो तो उसे लगा दें। उन्होंने ने आधी रात को इस काम के लिए राज़ी को बुलाया। और राज़ी ने बिना एक पल गँवाए वह इंजेक्शन उस बिल्ली को दे दिया। जब मैंने पूछा कि कैसे वह उसे मार सकती है जिससे वह इतना प्यार करती है? तब उसने कहा उसके प्यार से ज़्यादा बिल्ली को उसके दर्द से मुक्ति देना ज़्यादा ज़रूरी था। मैं उसकी जगह होती तो ऐसा कभी नहीं कर पाती। ऐसे ही एक बार हम टीवी पर मदर इंडिया देख रहे थे। जब भी नरगिस का सुनील दत्त को मारने वाला सीन आता था मैं बहुत भावुक हो जाती थी। उस सीन पर राज़ी बस इतना ही कहती थी, "What needs to be done is to be done."

राहुल के साथ मेरी मित्रता गहरी होने लगी थी। हम साथ में बहुत घूमते थे। कभी-कभी तो कॉलेज बंक करके, कभी अप्पू घर तो कभी लोधी गार्डन, पुराना क़िला, बिड़ला मंदिर, कमला रिज, तो कभी दिल्ली हाट। दिल्ली हाट जाकर मुझे हमेशा शिमला के बाज़ारों की याद आती थी। राहुल और मेरे बीच में कभी भी इन जगहों पर कुछ नहीं हुआ था। जबकि ये सब जगह तो उन दिनों कपल्स के लिए उनका हॉट स्पॉट हुआ करती थी। ये सुनकर आपको अजीब लगेगा पर मेरी और उसकी पहली किस चिड़ियाघर में शेर की गुफा के सामने हुई थी। अगर आप वहाँ गए होंगे तो आपको पता होगा वहाँ एक अजीब से गंदी-सी गंध आती रहती है। तो राहुल के साथ मेरे पहले चुंबन की याद उस गंदी वाली गंध के साथ जुड़ गई थी। आपको ये बात बताते हुए भी मैं वह गंध महसूस कर सकती हूँ। जिस दिन कॉलेज में कोई ख़ास लेक्चर नहीं होता था तो हम एनएसडी चले जाते थे। मेरी वहाँ पढ़ने वालों से भी थोड़ी-थोड़ी जान-पहचान होने लगी थी। कभी कोई सेलेब्रिटी वहाँ गेस्ट बनकर आता तो राहुल मुझे वहाँ ले जाता। हम कैंटीन में बैठकर उनकी एक झलक देखने का इंतज़ार करते रहते थे। एक बार कुछ लोग कैंटीन में बैठकर दिल्ली पर एक डॉक्यूमेंट्री बनाने को लेकर कुछ विचार-विमर्श कर रहे थे। मैं उनकी बातें बहुत देर से सुन रही थी। उन्हें कोई ऐसा बंदा चाहिए था जो दिल्ली की सभी जगह को उनके इतिहास के साथ जानता हो। मैंने उनके पास जाकर इस काम के लिए ख़ुद को वॉलंटियर किया। उन्होंने कुछ

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

सवाल पूछने के बाद कहा कि अगर ये काम तुम अच्छे से कर दोगी तो हम तुम्हें इसके लिए तुम्हारा मेहनताना भी देंगे। उनकी टीम में एक लड़की थी जो प्रोग्राम की होस्ट थी, एक डायरेक्टर और एक कैमरामैन था। अगले दिन सबसे पहले हम क़ुतुबमीनार गए। वहाँ ऐसे ही चलते हुए उनके कैमरामैन ने मेरे हिप्स पर एक चूँटी भरी। मैंने उसे ज़ोर से धक्का देकर उसकी इस हरकत का जवाब दिया। इस चक्कर में उसका कैमरा भी टूट गया था। उसके बाद मैं वहाँ से भाग आई थी। तब ये बात मैंने किसी को बताई भी नहीं थी।

इस घटना के कुछ दिन बाद मैं और राहुल मेरे कमरे में एक प्रोजेक्ट पर काम कर रहे थे। राज़ी उस वक़्त पार्लर में थी। पिछले कुछ महीनों से मिलते-जुलते हमारे बीच में झिझक की सीमा थोड़ी कम हो गई थी। उस दिन हम दोनों थोड़े और क़रीब आ गए थे। लेकिन जैसे ही उसने मेरे कपड़े उतारने के लिए हाथ बढ़ाया, मैंने उसका हाथ रोक दिया और उसे वहाँ से चले जाने को कहा। मुझे अचानक एहसास हुआ कि ये वह नहीं है जिसके साथ मैं सेक्स करना चाहती हूँ। उस दिन एक और बात मुझे अपने बारे में पता चली कि मैं सेक्स उसी के साथ कर पाऊँगी जिसके साथ का मेरी ज़िंदगी में कोई अर्थ होगा। राहुल का मेरी ज़िंदगी में होना मेरे लिए क्या मायने रखता है, मैं उस वक़्त ठीक से नहीं जानती थी। इसके बाद से राहुल मुझसे थोड़ा उखड़ा-उखड़ा रहने लगा था। राज़ी को मेरा लड़कों के चक्कर में पड़ना पसंद नहीं था। वह मुझसे बस यही कहा करती थी कि अभी मेरी उम्र सिर्फ़ अपने करियर पर ध्यान लगाने की है।

एक दिन कॉलेज में राहुल ने मुझे बताया कि उसके पापा ने मुझे एनएसडी आने के लिए मना किया है। तब मैंने राहुल को उस दिन की पूरी बात बताई। सब सुनकर उसने कहा, “तुम उस ज़रा-सी बात को इग्नोर भी तो कर सकती थी। इतना वायलेंट होने की क्या ज़रूरत थी! तुम ख़ुद को समझती क्या हो!”

उसकी आवाज़ में मेरा उसके साथ सेक्स न करने का ग़ुस्सा था। मैंने उस दिन के बाद राहुल से बात करना छोड़ दिया था। और यही सोचा कि जब ग्रेजुएट हो जाऊँगी तभी एनएसडी जाऊँगी।

फिर एक दिन कुछ ऐसा हुआ जिसके बाद मेरी ज़िंदगी ने एक नया मोड़ लेना शुरू कर दिया था।

ये उस दिन की बात है जब वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला हुआ था। राज़ी और मैं सड़क किनारे एक स्टॉल पर नींबू-पानी पी रहे थे। हमारे बीच बातचीत उसी हमले को लेकर हो रही थी। मैं उसे इशारों के साथ कुछ बता रही थी। तभी आशा नायर जी ने दूर से मुझे अपनी कार में बैठे हुए देखा। वह उस समय की जानी-मानी डायरेक्टर-प्रोड्यूसर थीं। मुझे देखने के बाद उन्होंने किसी को मुझे बुलाने के लिए मेरे पास भेजा। मैं उनका विज़िटिंग कार्ड देखते ही समझ गई थी कि ये कौन हैं। उनकी कार सड़क के दूसरे किनारे पर खड़ी हुई थी। उन्होंने मुझे इशारा करके अपने पास बुलाया। मैं जाने लगी तो राज़ी ने मुझे रोककर कहा, “यूँही किसी से भी मिलने चली जाओगी क्या!”

“मैं जानती हूँ उन्हें। ये विजिटिंग कार्ड देखो।”

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"बोल तो ऐसे रही हो जैसे बचपन से उन्हें मौसी कहते-कहते बड़ी हुई है। याद नहीं उस आस्था फ़िल्म में क्या हुआ था? कैसे उस औरत ने रेखा को अपनी कार में बुलाकर अपनी बातों में फँसा लिया था!"

मुझे राज़ी की बात सुनकर बहुत हँसी आई थी। मगर उसका डर भी बेवजह नहीं था। उनको मैं जानती ही कितना थी! सिर्फ़ उतना ही जितना उनके बारे में छपे हुए आर्टिकल्स में लिखा था। फिर भी मुझे इस तरह न जाना सही नहीं लगा। मैंने राज़ी को समझा-बुझाकर घर भेज दिया और ख़ुद उनसे मिलने चली गई। मुझे देखते ही उन्होंने पूछा, "फ़िल्म में काम करना चाहती हो?"

अचानक से मिले इस प्रस्ताव से मैं थोड़ा घबरा गई थी। मैंने बिना कुछ सोचे ही फ़िल्म करने से इनकार कर दिया था। उन्होंने भी फिर मुझसे कुछ नहीं कहा और मैं घर आ गई।

लेकिन शायद मेरी क़िस्मत मुझे अभिनेत्री बनाने की साज़िश रच चुकी थी। दो दिन बाद मैं आशा नायर जी से एक थिएटर में मिली। मैं उन्हें वहाँ देखकर चौंक गई थी। क्योंकि उनके जैसी बड़ी हस्तियाँ उधर नाटक देखने नहीं आया करती थीं। उन्हें देखकर भी ऐसा लग रहा था कि जैसे उन्होंने भी नहीं सोचा था कि वह मुझसे इस तरह इस जगह पर टकराएँगी। हमारी नज़रें मिलते ही मैंने सिर झुकाकर उनका अभिवादन किया। वह मेरे साथ वाली सीट पर ही आकर बैठ गईं। मैंने उनसे पूछा, "आप यहाँ कैसे?"

"जब मैं तुम्हारी उम्र की थी, तब मैंने बहुत सारे प्ले में काम किया था। यह जगह तो हमारा रोज़ का अड्डा हुआ करती थी। जब भी दिल्ली आना होता है तो मैं यहाँ एक बार ज़रूर आती हूँ।"

उन्होंने एक प्यारी-सी मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया। यह सुनकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था। मैंने उनके बहुत सारे इंटरव्यू पढ़े थे लेकिन कभी भी उन्होंने इस बारे में कहीं कोई ज़िक्र नहीं किया था। फिर उन्होंने मुझसे पूछा, "तुम यहाँ अक्सर आती हो?"

"हाँ, मुझे एनएसडी से डायरेक्शन सीखने का मन है। समझ लीजिए, यहाँ आना भी उसी की तैयारी का एक हिस्सा है।"

मुझे उनके साथ बात करना अच्छा लग रहा था। बहुत कम लोग होते हैं जो पहली मुलाक़ात में ही हमारे मन में उतर जाते हैं। उन्हें अपने प्रोड्यूसर-डायरेक्टर होने का ज़रा भी घमंड नहीं था। मेरी बात सुनकर उन्होंने कहा, "चलो तुम्हारी तैयारी में मैं भी थोड़ा मदद कर देती हूँ। कल मैं कुछ लोगों का ऑडिशन ले रही हूँ। तुम भी आ जाना। मेरी थोड़ी हेल्प भी कर देना और तुम्हारी भी एक प्रैक्टिकल ट्रेनिंग हो जाएगी।"

इस बार मैं उन्हें मना नहीं कर पाई और आने के लिए हाँ कर दिया। अगले दिन मैं उनकी बताई जगह पर ठीक समय पर पहुँच गई। वहाँ के माहौल में कुछ खिंचाव-सा था। कुछ पंद्रह-बीस लड़कियाँ ऑडिशन देने की तैयारी में लगी हुई थीं। सबके हाथों में एक स्क्रिप्ट थी जो उन्हें ऑडिशन में एक्ट करके दिखानी थी। आशा जी ने मुझे देखकर अपने पास बुलाया। उनके पास एक लड़की पहले से ही खड़ी हुई थी। उन्होंने मुझे एक स्क्रिप्ट पकड़ाते हुए कहा कि तुम ज़रा इसके साथ इसकी रिहर्सल करने में मदद कर दो। मैंने उनकी बात मान ली। वह लड़की और मैं सीन की रिहर्सल करने लगे। आशा जी के साथ दो-तीन और

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

लोग थे जो हमें रिहर्सल करते हुए देखे जा रहे थे। लगभग एक घंटे बाद आशा जी ने मुझे अपने पास बुलाया और कहा, "तुम मेरी इस फ़िल्म के लिए मेरी पहली पसंद हो। तुम्हें देखते ही मुझे ऐसा लगा था जैसे मेरी फ़िल्म के किरदार ने अवतार ले लिया हो। उस दिन तुम्हारे मना करने पर मैं बहुत मायूस हो गई थी। इतना तो तुम समझती होगी कि इतने सालों के एक्सपीरियंस के बाद मैं इतना तो बता सकती हूँ कौन एक्टिंग कर सकता है, कौन नहीं। तुम्हें देखकर लगता है तुम्हारा जन्म यही करने के लिए हुआ है। सीन करते हुए अभी तुम इतनी नैचुरल थी कि कोई नहीं कह सकता था उस वक़्त तुम एक्ट कर रही थी।"

मैं बिना कुछ कहे उनकी बात सुनती रही।

"I want you in my film, मीठी, मगर मैं तुम पर कोई प्रेशर नहीं डालूँगी। हाँ इतना ज़रूर कहूँगी कि बिना सोचे कोई फ़ैसला मत लेना। You can do wonder in this field. मुझे ख़ुशी होगी तुम्हारे जैसा टैलेंट दुनिया के सामने लाने में। और फिर क़िस्मत जब हमें बार-बार मिलवा रही है तो हमें भी तो उसका इशारा समझना चाहिए।"

मैंने उनसे सोचने का कुछ वक़्त माँगा और घर आ गई। मैंने जब राज़ी को इस बारे में बताया तो वह मुझे फ़िल्म करने के लिए मनाने लगी। उसने कहा इसे अपनी एक और पसंद समझकर कर लो। या फिर जैसे तुम अँग्रेज़ी पढ़ाती हो वैसे ही काम समझकर फ़िल्म कर लो। ज़रूरी तो नहीं कि जो कुछ भी किया जाए वह सपनों के लिए ही किया जाए।

राज़ी के इतना समझाने के बावजूद, मैं अपनी इच्छा के विरुद्ध नहीं जा पाई थी। मैंने आशा जी को फ़िल्म करने से मना कर दिया था।

इस बात के दो दिन बाद, राज़ी को पता चला कि उसकी माँ की एक किडनी ख़राब हो चुकी है। दूसरी बुरी तरह संक्रमित है। उनके इलाज का ख़र्च बहुत ज़्यादा था। राज़ी ने अपने गंगटोक वाले घर को बेचने का फ़ैसला कर लिया था। पर मैंने उसे ऐसा करने नहीं दिया। मुझसे बेहतर कौन जान सकता था कि अपना घर बिक जाने का दुख क्या होता है! मैंने अपनी सारी सेविंग्स और दादी के गहने बेचकर मिले सारे पैसे, उसे उसकी माँ के इलाज के लिए दे दिए थे। मगर दिल्ली जैसी बड़ी जगह पर रहने के लिए मुझे भी पैसे चाहिए थे। राज़ी भी कुछ समय के लिए गंगटोक चली गई थी। घर के किराये की ज़िम्मेदारी भी मुझ पर आ गई थी। तब राज़ी फिर से मुझे फ़िल्म करने के लिए मनाने लगी।

मैंने भी सोचा कि एक फ़िल्म करके देख लेते हैं। कुछ नहीं भी हुआ तो इस फ़िल्म में काम करने का अनुभव मुझे एनएसडी में एडमिशन के वक़्त भी काम आएगा। मैं जानती थी कि फ़िल्मों में काम करना आसान नहीं है। बहुत मेहनत करनी पड़ेगी। दिन रात भूलने होंगे। मगर, मुश्किलें मेरे लिए कभी भी कोई रुकावट नहीं थी। फ़िल्मों में काम न करने के पीछे मेरी वजह सिर्फ़ इतनी ही थी कि यह मेरे बाबा का सपना था, जिसे मैं अपना सपना नहीं बनाना चाहती थी। मैंने अपने मन को समझाया कि मुझे यह फ़िल्म एक काम समझकर करनी है, कोई सपना पूरा करने के लिए नहीं। और उस वक्त फ़िल्म में काम करना मेरी ज़रूरत भी थी। कोई एकेडमिक डिग्री भी नहीं थी मेरे पास। इसलिए, कहीं नौकरी मिलने का सवाल ही नहीं था।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मैंने आशा जी के दिल्ली वाले पते पर, फ़ोन करके उनसे संपर्क करने की कोशिश की। मुझे पता चला कि वो मुंबई लौट चुकी हैं। मेरे बहुत गुज़ारिश करने के बाद उन्होंने मुझे उनका मुंबई वाला पता और फ़ोन नंबर दिया। एक हफ़्ते लगातार कोशिश करने के बाद मेरी उनसे बात हो पाई। उन्होंने मुझे कहा कि उस फ़िल्म के लिए हीरोइन फ़ाइनल हो गई है। जब भी उनके पास मेरे लिए कोई दूसरा ऑफ़र होगा, वो मुझे संपर्क करेंगी। उनका जवाब सुनकर मैं बहुत मायूस हो गई थी। मुझे ख़ुद इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि फ़िल्म में काम न कर पाने का दुख मुझे अंदर तक कचोट रहा था।

फिर दो दिन बाद मुझे कुरियर से मुंबई जाने की टिकट मिली। साथ में, आशा जी की चिट्ठी भी थी। जिस हीरोइन को उन्होंने फ़ाइनल किया था, उसने कोई दूसरी बड़ी फ़िल्म मिलने के वजह से, उनकी फ़िल्म में काम करने से मना कर दिया था।

और इस तरह, मेरा फ़िल्मी सफ़र शुरू हुआ।

अपनी ज़िंदगी में, मुझे किसी भी चीज़ को पाने के लिए कभी ज़्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ा। थोड़ी-सी मुश्किलों के बाद सब आसान हो जाता था। बस रिश्ते और लोग मुझे कभी समझ नहीं आए।

राज़ी मुझे फ़िल्म मिल जाने से बहुत ख़ुश थी। उसने वहीं किसी मंदिर में जाकर मेरे नाम का चढ़ावा भी चढ़ाया था, और मेरे लिए दुआ भी की थी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

नारायण शास्त्री

जब मैं दिल्ली आई थी, उसके लगभग एक साल बाद इंडियन एयरलाइंस के एक प्लेन का कंधार में अपहरण कर लिया गया था। पूरे आठ दिन के लिए वे सब यात्री बंदी बना लिए गए थे। बंदी का जीवन मौत से भी बदतर होता है। क्या आपका किसी ने कभी अपहरण किया है? क्या आप कभी किसी के बंदी बनकर रहे हैं? मुझसे तो पूछिए ही मत। मेरे साथ शायद ही ऐसा कोई हादसा होने से बचा हो जो मेरे जीते जी न हुआ हो। बंदी बनाने वाला एक तरह से हमसे हमारा सोचने का अधिकार छीन लेता है। मैं तो इस तरह का जीवन अपने लिए सोच भी नहीं सकती थी। यह बात मैं दावे से इसलिए कह सकती हूँ क्योंकि मेरे पास मौत और बंदी दोनों के होने का अनुभव जो है।

हुआ यूँ कि मेरी एक फ़िल्म के लिए मुझे क्लासिकल नृत्य सीखना था। उसके लिए साउथ के एक बहुत बड़े नृत्यकार को बुलाया गया था। जिनका नाम था नारायण शास्त्री। वह अपनी कला में निपुण से भी ज़्यादा निपुण थे। उनका नाम मेरी ही एक फ़िल्म की प्रोड्यूसर ने सुझाया था। शास्त्री जी का स्वभाव सरल नहीं था। उन्हें अपने काम में कोई भी लापरवाही पसंद नहीं थी। वह रोज़ मेरे घर मुझे नृत्य सिखाने आया करते थे। जितनी देर वह मुझे सिखाते थे उतनी देर हमें कोई भी किसी भी काम के लिए टोक नहीं सकता था। मैं भी बस अपना पूरा ध्यान नृत्य सीखने में ही लगाती थी। मुझे उनसे सीखने में बहुत मज़ा आ रहा था। वह सचमुच अपने काम को जानते थे। एक महीने के अंदर मैंने काफ़ी कुछ सीख लिया था। वह भी मेरी मेहनत और लगन से ख़ुश थे। मुझसे अक्सर कहा करते थे कि तुम मेरी उन दो-चार शिष्यों में से हो जिन्हें सिखाते हुए मुझे अपनी कला पर गर्व होता है। कभी-कभी वह मुझसे कहते कि मुझे फ़िल्में करना छोड़कर सिर्फ़ नटराज की आराधना करनी चाहिए। उनके इन शब्दों को मैं अपनी तारीफ़ समझकर ख़ुश हो जाती थी। जितना मुझे फ़िल्म के लिए चाहिए था, उससे कहीं ज़्यादा मैं एक महीने में सीख चुकी थी। एक दिन मैंने उनसे कहा, "गुरु जी, अब मुझे लगता है हमें अपनी क्लास बंद कर देनी चाहिए। मुझे जितनी ज़रूरत थी, उतना मुझे आ गया है। मेरी फ़िल्म की डेट्स भी नज़दीक आ रही है। अब आगे और नहीं हो पाएगा।"

ये सुनकर वह ग़ुस्से से आग बबूला हो गए।

"तुम बीच में कैसे बंद कर सकती हो! अभी तो कितना कुछ है जो हमें तुम्हें सिखाना है! नहीं-नहीं, अभी हम सिखाना बंद नहीं करेंगे।"

मेरे बहुत समझाने पर भी वह नहीं माने और ज़िद पर अड़े रहे। तब मैंने कहा, "आप मुझे ज़बरदस्ती कुछ नहीं सिखा सकते। ऐसा करके आप अपनी कला का ही अपमान करेंगे। गुरु जी माना है इसीलिए अब तक आराम से बात कर रही हूँ, वरना किसी का भी मुझे इस तरह से बात करना पसंद नहीं है। अच्छा यही होगा कि आप इज़्ज़त से यहाँ से चले जाएँ।"

मेरे इतना कहने पर वह चुपचाप वहाँ से चले गए। इन सब चक्करों में उनकी दक्षिणा भी उन्हें देनी रह गई थी। काफ़ी समय तक रिक्कू जी उनसे संपर्क करने की कोशिश करते रहे

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मगर उनकी तरफ़ से कोई जवाब नहीं मिला।

एक दिन उनका मुझे फ़ोन आया और वह मुझसे अपने उस दिन के व्यवहार की माफ़ी माँगने लगे। मैंने उन्हें बड़ी शालीनता से सब कुछ भूल जाने को कहा। फिर उन्होंने पूछा, क्या मैं उन्हें उनकी दक्षिणा नहीं दूँगी? मैंने उनसे किसी के हाथ भिजवाने का वादा किया जिसके लिए उन्होंने इंकार कर दिया और कहा वह दक्षिणा सिर्फ़ अपने शिष्यों के हाथ से ही लेते हैं। इसके लिए उन्होंने मुझे बेंगलुरु बुलाया था। ये 2012 की बात है, जब पूरा देश निर्भया रेप केस में उलझा हुए था। संदीप भी उस वक़्त किसी काम से दिल्ली गया हुआ था। मैं भी यह सोचकर चली गई कि चलो सबसे ग़लतियाँ हो जाती हैं और उनके सिखाने की वजह से ही मेरा काम फ़िल्म में बहुत बढ़िया निकलकर आया था। इसके बदले इतना तो मैं उनके लिए कर ही सकती हूँ।

मैंने बेंगलुरु पहुँचकर शास्त्री जी को फ़ोन किया। मेरे साथ मेरा बॉडीगार्ड भी था। उन्होंने मुझे अपने नृत्य मंदिर बुलाया था और साथ ही यह कहा था कि मैं अपने बॉडीगार्ड को साथ न लाऊँ। उनके लिए वह उनकी साधना का मंदिर था, कोई युद्ध का मैदान नहीं। मुझे थोड़ा अजीब ज़रूर लगा था मगर अजीब चीज़ें मुझे अपनी ओर ज़्यादा ही आकर्षित करती थी। मैं वहाँ अकेले ही चली गई।

आश्रम का माहौल बहुत ही लुभावना था। छोटे-छोटे झोपड़ीनुमा केबिन दूर-दूर तक देखे जा सकते थे। पुराने ज़माने में गुरुकुल शायद ऐसे ही होते होंगे। हर उम्र के बच्चों को नृत्य सीखते हुए देखकर आत्मा प्रसन्न हो गई थी। मेरे आने की ख़बर मिलते ही शास्त्री जी ख़ुद मुझे अंदर ले जाने आए। औपचारिकताएँ पूरी हो जाने के बाद उन्होंने फिर मुझ से माफ़ी माँगी।

“अब आप मुझसे बार-बार माफ़ी माँगकर मुझे शर्मिंदा मत कीजिए। मेरा भी व्यवहार उस दिन ज़रूरत से ज़्यादा रूखा हो गया था। बेहतर यही होगा कि हम सब भूलकर आगे बढ़ जाएँ।”

शास्त्री जी ने मेरी बात पर अपना सिर हिलाकर अपनी सहमति जताई। फिर मैंने उनसे पूछा, “बताइए क्या दक्षिणा लेंगे आप?”

“तुम्हारा यहाँ आना ही मेरी दक्षिणा है। मैं देखना चाहता था कि तुम मेरे बुलाने पर यहाँ आती हो या नहीं। तुम्हारे आने से मुझे विश्वास हो गया कि तुमने मुझे दिल से माफ़ कर दिया है।”

शास्त्री जी की इस बात ने मेरा दिल छू लिया था। मैंने भी उनसे वादा किया कि जो भी आज तक उन्होंने मुझे सिखाया है, मैं उसका अभ्यास करती रहूँगी। और जब भी कभी मुझे थोड़ा ख़ाली वक़्त मिलेगा मैं यहाँ उनके आश्रम में आकर आगे की शिक्षा लूँगी। बातों-बातों में लंच का वक़्त हो गया था। शास्त्री जी ने उस दिन मुझे बहुत ही बढ़िया साउथ इंडियन खाना खिलाया था। खाने के बाद मैंने उनसे कहा कि मैं उनका आश्रम देखना चाहती हूँ। वह किसी को मेरे साथ भेजना चाहते थे, मगर मैंने उन्हें मना कर दिया था।

टहलते-टहलते मैं आश्रम के पीछे वाले हिस्से में पहुँच गई थी जो एक बहुत ही सुंदर बगीचे का रूप लिए हुए था। मैं उत्सुकतावश पीछे वाले दरवाज़े से बाहर निकलकर देखने

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

लगी। तभी किसी ने पीछे से मुझ पर ख़ाली बोरी डालकर मेरा चेहरा ढक दिया। फिर उसने मुझे एक सामान ढोने वाले ऑटो में बंद कर दिया जो दरवाज़े के ठीक सामने खड़ा था। बंद करने से पहले उसने मेरे हाथ और मुँह दोनों बाँध दिए थे। उस ऑटो में कुछ खाद की बोरियाँ पड़ी हुई थीं। दोपहर का वक़्त होने के कारण आश्रम के पिछले हिस्से में कोई नहीं था। कुछ दूर जाने के बाद उसने मेरा फ़ोन भी बंद करके रास्ते में कहीं फेंक दिया था। फिर उसने मुझे किसी दुकान में ले जाकर बंद कर दिया, जो देखने में कोई कबाड़ी की दुकान नज़र आ रही थी। मेरे पैर भी उसने बाँध दिए थे। इसके बाद मुझे वहाँ छोड़कर वह चला गया। तीन-चार घंटे तक कोई नहीं आया। अपने हाथ खोलने की कोशिश करते-करते मेरी भी आँख लग गई थी।

कुछ देर बाद मुझे कुछ आवाज़ें सुनाई दी। मैं आँख बंद करके सुनने की कोशिश करने लगी। आवाज़ किसी औरत की थी।

"ये क्या किया तूने? जानता भी है कितनी बड़ी स्टार है ये? बाहर इसके ग़ायब हो जाने का हल्ला मचा हुआ है। पुलिस शास्त्री जी को भी पूछताछ के लिए ले गई है। पूरे आश्रम की तलाशी ली जा रही है। आश्रम में सभी काम करने वालों से सवाल पूछे जा रहे हैं।"

"जानता हूँ। अभी वहीं से आ रहा हूँ। मुझसे भी उन लोगों ने पूछताछ की। मगर तू ही बता और क्या करता मैं! अपने बच्चे को मर जाने दें क्या! इन मैडम को किसी से फ़ोन पर बात करते सुना। लाखों-करोड़ों की बातें कर रही थीं। मैंने सोचा इन्हें बंदी बनाकर शायद कुछ पैसे मिल जाएँगे।"

उस औरत के आदमी ने बेबसी से चिल्लाते हुए कहा। उस औरत ने उससे पूछा कि अब वह क्या करने वाला है? मगर उसे नहीं पता था वह क्या करेगा। मेरा अपहरण भी उसने बिना सोचे-समझे ही किया था। फिर वह औरत ज़ोर-ज़ोर से रोने लग गई। उनकी बातों से मुझे पता लगा कि उनके बेटे को कैंसर है जिसके लिए उन्हें लगभग दस लाख रुपये चाहिए थे।

उनकी बातें सुनकर मैं न चाहते हुए भी उनकी तुलना अपनी माँ से करने लगी। यह लोग अपने बच्चे की जान बचाने के लिए अपनी परवाह किए बिना किसी का अपहरण करने जैसा बड़ा गुनाह कर बैठे। और मेरी माँ ने अपनी बेटी की परवाह किए बिना उसका घर बेच दिया था।

बंदी बने होने के बावजूद मुझे उन लोगों पर दया आ रही थी। कभी-कभी लोग मुसीबतों का हल खोजते-खोजते नयी मुसीबतों को दावत दे बैठते हैं। ये दावत इतनी लंबी चलती है कि उनके सारे ख़ज़ाने ख़ाली हो जाते हैं। मैंने इन्हें कंगाल होने से बचाने का सोच लिया था।

मुझे लगा यही सही वक़्त है इन दोनों से बात करने का। यह दोनों कोई व्यावसायिक मुजरिम नहीं थे, तो इनसे बात की जा सकती थी। मैंने अपने पास रखे एक डिब्बे को गिराकर उन्हें अपने उठने का एहसास करवाया। आवाज़ सुनकर दोनों चौंक गए। मैंने उठकर बैठने की कोशिश की। मगर मेरे हाथ पैर बँधे होने की वजह से मैं असफल रही। मुझे होश में आया देख वह आदमी घबरा गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह मुझसे

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

बात करते हुए किस तरह से ख़ुद को मेरे सामने पेश करे। मैंने पानी की तरफ़ इशारा करके उनसे पानी माँगा। उस औरत ने मेरे मुँह पर लगी पट्टी हटाकर मुझे पानी पिलाया। फिर मैंने उनसे कहा, "देखो, अभी तुम दोनों जो बातें कर रहे थे, मैंने सब सुन लिया है। तुम मुझे यहाँ से जाने दो। मैं वादा करती हूँ, तुम्हारे बच्चे के इलाज का सारा ख़र्चा मैं उठाऊँगी। और तुम्हारा नाम भी नहीं आएगा।"

इलाज की बात सुनकर उस औरत की आँखों में चमक आ गई थी। फिर मैंने दोनों को समझाया कि इसके अलावा उन दोनों के पास कोई चारा नहीं है। उनसे एक बहुत बड़ी ग़लती हो गई है। मेरी बात मानकर ही वो दोनों बच सकते हैं। परंतु उस आदमी को मेरी बातों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा वह सोचकर बताएगा। वह आदमी आश्रम में माली का काम करता था। उसने मुझे मेरे CA से बात करते हुए सुन लिया था। सारी रात वह औरत अपने आदमी को समझाती रही। सुबह हो गई। टीवी पर, न्यूज़ में, अख़बारों में, शास्त्री जी की इज़्ज़त की धज्जियाँ उड़ चुकी थीं। निर्भया की ख़बर के साथ-साथ मेरे अपहरण होने की ख़बर ने भी लोगों के मन में असुरक्षा की भावना पैदा कर थी। इस बारे में संदीप ने अपने कॉलम में भी लिखा-

इस देश में जिस तरह की घटनाएँ घट रही हैं, उसे देखकर, सुनकर मन में हमेशा एक दहशत बनी रहती है। हर पल यही डर बना रहता है कि अब न जाने कौन-सी बुरी ख़बर सुनने को मिल जाए। अभी निर्भया के साथ जो हुआ उससे हम सँभल भी नहीं पाए थे कि शैतान के एक और रूप ने मीरा का अपहरण कर लिया। इसमें शास्त्री जी का हाथ है या नहीं मैं नहीं कह सकता। लेकिन यह घटना उनके आश्रम में घटी है तो उन पर शक करने की संभावना को नकारा भी नहीं जा सकता। मीरा आश्रम से बाहर आई ही नहीं। आश्रम के मेन गेट पर ही मीरा का बॉडीगार्ड खड़ा था। अगर वह बाहर नहीं आई तो कहाँ गई? क्यों शास्त्री जी ने मीरा के बॉडीगार्ड को अंदर आने से मना कर दिया था? क्या इस बात की कोई सफ़ाई शास्त्री जी दे सकते हैं?

मुझे बँधे-बँधे घुटन होने लगी थी। उस आदमी के फ़ैसले पर मेरी आज़ादी टिकी हुई थी, यह बात मुझे बर्दाश्त ही नहीं हो रही थी। वह आदमी अख़बार पढ़कर शायद थोड़ा डर गया था। घबराहट और चिंता की छाया उसके चेहरे पर साफ़ देखी जा सकती थी। बहुत देर सोच में डूबे रहने के बाद उसने मुझसे कहा, "आप अपनी बात से मुकर तो नहीं जाओगी?"

मैंने ना में सिर हिलाया और फिर उसे अपना प्लान समझाया। मैंने उससे कहा कि वह मुझे किसी ऐसी जगह छोड़ दें जो आश्रम से कुछ दूरी पर हो। और जहाँ से मैं किसी को फ़ोन कर पाऊँ। फिर मैंने उसे अपनी सारी ज्वैलरी भी उतारकर दे दी और कहा कि जब तक मैं उन्हें और पैसे न दे पाऊँ तब तक इसे बेचकर वो काम चला सकते हैं। उन्होंने मुझसे पूछा, "आप हमें बचा क्यों रही हो?"

"तुम्हारे बच्चे के लिए। उसे इस वक़्त तुम दोनों की ज़रूरत है।"

यह सुनकर उस औरत ने मेरे पाँव पकड़ लिए और माफ़ी माँगने लगी। भले ही मैं उनकी मदद कर रही थी मगर मैंने उन्हें मुझे इस तरह से बंदी बनाने के लिए कभी माफ़ नहीं किया था।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

उस आदमी ने मुझे आश्रम से कुछ दूर एक चाय की दुकान के पास छोड़ दिया था। वहाँ से मैंने अपने बॉडीगार्ड को फ़ोन लगाया। वह पुलिस के साथ वहाँ पहुँच गया। पुलिस के पीछे-पीछे सभी मीडिया वाले भी पहुँच गए। मैंने सब मीडिया वालो के सामने ही अपना बयान दिया।

"मेरी किडनैपिंग में शास्त्री जी का कोई हाथ नहीं था। मैं आश्रम में टहलते-टहलते पीछे वाले गेट से बाहर निकल गई थी। तभी कुछ लड़के एक मारुति वैन में आए और मुझे उठाकर ले गए। कुछ दूर जाकर जब उन्होंने मुझे पहचाना तो वह घबरा गए। किसी बड़े स्कैंडल में न फँस जाएँ इसलिए उन्होंने मुझसे मेरे सारे पैसे और ज्वैलरी छीनकर मुझे किसी सुनसान जगह पर छोड़ दिया था। जैसे ही मुझे होश आया मैं रास्ता ढूँढ़ते-ढूँढ़ते इस चाय की दुकान पर पहुँची और अपने बॉडीगार्ड को फ़ोन लगाया। यही एक नंबर मैं हमेशा याद रखती हूँ। इन सबसे शास्त्री जी को जो अपमान सहना पड़ा उसके लिए मैं उनसे हाथ जोड़कर माफ़ी चाहती हूँ।"

मेरी इस बनाई हुई स्क्रिप्ट पर कितने लोगों ने विश्वास किया था, मुझे नहीं पता था। हाँ, मगर उस दिन मेरे इस झूठ ने उस बच्चे के माँ-बाप को उससे दूर होने से बचा लिया था।

तब तक संदीप भी वहाँ पहुँच गया था। उसने मुझे देखते ही अपनी बाहों में भींच लिया और कहा कि वह कभी आगे से कहीं भी मुझे अकेले नहीं जाने देगा। मुझे उसका परवाह करना अच्छा लग रहा था। मगर मन-ही-मन मैं ये भी सोच रही थी कि संदीप मुझे कभी किसी चीज़ के लिए न बाँधे।

शास्त्री जी को अपने इस अपमान से बहुत चोट पहुँची थी। उन्होंने मुझसे बात करना भी बंद कर दिया था। मैंने बहुत कोशिश की उन्हें मनाने की, लेकिन न वह मुझसे मिलते थे, न ही मेरा फ़ोन उठाते थे। फिर एक वक़्त के बाद मैंने भी कोशिश छोड़ दी थी। इस घटना के बाद लोगों ने अपने बच्चों को उनके आश्रम में नृत्य सीखने के लिए भेजना भी बंद कर दिया था। धीरे-धीरे उन्हें फ़िल्म इंडस्ट्री से भी काम मिलना कम होता गया। इज़्ज़त भी एक फूले हुए ग़ुब्बारे की तरह होती है, एक पिन चुभते ही ख़त्म। किसी का नाम चाहे ग़लती से ही सही एक बार लोगों की बैड बुक में आ जाए तो वह कभी उसे दोबारा दिल से स्वीकार कर ही नहीं पाते। इस घटना के हफ़्तों बाद तक लोग सोशल मीडिया पर शास्त्री जी पर शक जताते रहे। शास्त्री जी अपनी इस हालत का ज़िम्मेदार मुझे मानने लगे थे। उन्हें कुछ दिन पहले मैंने यहीं मुंबई में टैक्सी से कहीं जाते हुए देखा था। क्या वह मुझे मारने की साज़िश रच सकते हैं?

बहुत वक़्त बीत गया दिल्ली और शिमला की यादों को याद करते हुए।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

संदीप मित्तल

'ज़िंदगी कैसी है पहेली हाय...' एक बूढ़े अंकल गाना गुनगुना रहे हैं। पहेली तो मेरी मौत भी बनती जा रही है। अभी तक कोई सुराग मिलने की ख़बर नहीं मिली। मुझे फिर से शहर जाकर टीवी पर देखना होगा।

एंकर: मीरा की माँ बिंदु सहगल ने मीरा की जायदाद पर कोई भी हक़ जताने से किया इनकार। उनका कहना है कि मीरा के इस मुक़ाम तक पहुँचने में उनका कोई भी योगदान कभी नहीं रहा। मीरा जो थी वह ख़ुद अपने बलबूते पर थी। मीरा की माँ मीरा से माफ़ी माँगना चाहती हैं। उन्हें उस वक़्त अकेला छोड़ने के लिए जब उन्हें उनकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत थी। वह चाहती हैं कि मीरा की सारी जायदाद अनाथ आश्रम में रहने वाले बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए ख़र्च की जाए।

टीवी पर ये ख़बर सुनते हुए मुझे समझ ही नहीं आ रहा कि मैं माँ के लिए क्या महसूस करूँ? न मुझे कोई ग़ुस्सा है, न कोई ममता। अब बहुत देर हो चुकी है, इन सब दुनियादारी को निभाने के लिए। वह चाहती तो मुझसे मिलने पहले भी आ सकती थी। माफ़ी माँग सकती थी। शायद मैं उन्हें माफ़ नहीं करती, मगर वह कोशिश तो कर सकती थी। अब मेरे मरने के बाद मीडिया वालों के आगे ये सब कहकर क्या फ़ायदा! उन्हें इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है! जिसे पड़ता वह मर चुकी है। अब क्या होगा इन बातों को कहने से! जानती हूँ मुझे अपने मन में उनके लिए अब कोई ख़लिश नहीं रखनी चाहिए। किंतु कुछ बिगड़ी हुई चीज़ें कभी सुधर नहीं पातीं। शायद माँ से प्यार ही कुछ ज़्यादा था।

एंकर: एक पत्रकार के पूछने पर संदीप मित्तल ने मीरा की मौत पर अभी कुछ भी कहने से किया इनकार। उनका कहना है कि वह अभी तक मीरा की मौत के सदमे से बाहर नहीं आ पाए हैं।

कभी-कभी मुझे लगता था, अगर मैंने अपनी ज़िंदगी में किसी के साथ बुरा किया था तो वह है संदीप मित्तल। संदीप मित्तल पर पहली बार मेरा ध्यान तब गया था जब मेरी पहली फ़िल्म रिलीज़ हुई थी और उसने अपने कॉलम में मेरी फ़िल्म और मेरे बारे में कुछ बातें लिखी थीं।

आशा नायर की पहली फ़िल्म 'दस्तक' भले ही कोई व्यावसायिक सिनेमा न हो परंतु फ़िल्म हर लिहाज़ से अपनी छाप छोड़ती नज़र आती है। आशा जी ने सिर्फ़ एक शानदार फ़िल्म ही नहीं बल्कि इस फ़िल्म के साथ एक नया ख़ूबसूरत चेहरा भी बॉलीवुड को दिया है। एक पहाड़ी तड़का जो सिनेमा जगत का ज़ायक़ा बढ़ा देगा। मीरा अपनी पहली फ़िल्म से ही बता देती हैं कि वह अपने काम को जानती हैं। मैं उन्हें उनकी पहली फ़िल्म की शुभकामनाएँ देते हुए बस इतना कहना चाहूँगा कि वह ऐसे ही पूरी ईमानदारी से काम करती रहें। मैं उनको पर्दे पर लंबे समय तक देखना चाहता हूँ।

तब आशा जी ने बताया कि अगर इसने तुम्हारे काम के बारे में कुछ अच्छा लिखा है तो समझो बॉलीवुड में आगे बढ़ने का एक पड़ाव तुमने पूरा कर लिया है। इसके बाद संदीप

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मित्तल में मेरी रुचि बढ़ने लगी। मुझे पता चला कि उसका पूरा बचपन देहरादून में ही बीता था। जर्नलिज़्म की पढ़ाई उसने दिल्ली से की थी। मुझे उसके बारे में और भी कई बातें पता चलीं, जैसे वह अपने काम के प्रति बहुत ईमानदार है। अगर आज वह किसी के बारे में अच्छा लिख रहा है तो कल उसका काम पसंद न आने पर सच लिखने से कतराएगा भी नहीं। वह सिर्फ़ ब्लैक कॉफ़ी पीता है। मामूली-सी हार्ट प्रॉब्लम होने की वजह से कुछ साल पहले अल्कोहल छोड़ चुका है। खादी का कुर्ता और जींस उसकी यूनिफ़ॉर्म कह लो या उसके व्यक्तित्व का एक रंग, परंतु वह इसके सिवा कुछ नहीं पहनता था। आँखों पर नज़र का चश्मा, बाल बेतरतीबी से बिखरे हुए और पाँव में एडिडास के स्पोर्ट्स शूज़। कुल मिलाकर मुझे वह प्रियांशु चैटर्जी जैसा लगता था। जितना मैं उसके बारे में जानती, उतना मेरा और जानने का मन करता। मगर हमारी कभी दुआ सलाम से ज़्यादा बात नहीं हुई। एक बार उसने रिक्कू जी से मेरा इंटरव्यू लेने की बात कही। उस बार मुझे दूसरी बार फ़िल्मफ़ेयर का पुरस्कार मिला था। मैं भी उसे जानने में उत्सुक थी, इसीलिए मैंने इंटरव्यू के लिए हाँ कर दिया था। वह तय समय पर मेरा इंटरव्यू लेने मेरे घर आया। ये मेरी पहली फ़िल्म के दो साल बाद की बात है और अविनाश लूथरा के मामले से एक साल पहले की। तब मैं एक दो बेडरूम वाले एक अपार्टमेंट में रहा करती थी। तब सिर्फ़ राज़ी मेरे साथ थी। मेरी पहली फ़िल्म के बाद राज़ी ने मुझसे मेरे लिए काम करने की इच्छा ज़ाहिर की थी और मैंने फ़ौरन उसे मुंबई बुला लिया था। उसका यहाँ होना उससे ज़्यादा शायद मेरे लिए ज़रूरी था। और इस तरह वह मेरे घर की केयर टेकर बन गई थी।

अनावश्यक औपचारिकताओं के बाद संदीप ने अपने सवाल शुरू किए।

"क्या आपका सपना हमेशा से फ़िल्मों में आने का रहा है?"

"आप मानेंगे नहीं... मगर मैं आज तक सही से नहीं जान पाई कि मैं बनना क्या चाहती थी।"

(हँसते हुए)

"इसका मतलब फ़िल्मों में आपका आना मात्र संयोग था?"

"यही समझ लीजिए... ऐसे ही एक दिन आशा जी और मैं दिल्ली में टकरा गए। उन्होंने मेरा ऑडिशन लिया और मुझे फ़िल्म मिल गई। मैं कभी फ़िल्मों में नहीं आना चाहती थी क्योंकि ये मेरे बाबा का सपना था, पर सब कुछ हमारे हाथों में नहीं होता।"

"आपके काम को देखकर नहीं लगता कि आप कभी फ़िल्मों में काम करने की इच्छा नहीं रखती थीं।"

"पहले तो तारीफ़ के लिए शुक्रिया। ज़रूरी तो नहीं कि जिस काम में आप अच्छे हों, वही आप ज़िंदगी में करना भी चाहते हों।"

"आपके बारे में अक्सर कहा जाता है आप अपने सह-कलाकरों के साथ ज़्यादा अच्छे संबंध नहीं बना पातीं। क्या आप उनको अपने से कम आँकती हैं?"

"मैं बस इतना कहना चाहूँगी कि मैं फ़िल्मों के बाहर एक अच्छी कलाकार नहीं हूँ। मैं जैसी हूँ वैसी ही अगर आप मुझे स्वीकार करेंगे तब आप मुझे अपने बीच पाएँगे। रही बात

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

कम आँकने की तो ये मेरा काम नहीं है। हम सबकी जज पब्लिक है। ये काम उन्हीं पर छोड़ दीजिए।"

"आप कहना चाहती हैं बॉलीवुड में लोग फ़िल्मों के बाहर भी एक्टिंग करते हैं?"

"Don't try to read in between the lines. I just want to be true to myself. That's it."

"आप अपने आपको बॉलीवुड में किस मुक़ाम पर देखना चाहती हैं?"

"मैं उस ऊँचाई तक जाना चाहती हूँ जहाँ से मुझे नीचे गिरने का डर लगने लगे। जिस दिन ऐसा होगा उस दिन मैं फ़िल्मों से संन्यास ले लूँगी। किसी भी चीज़ को छोड़ने का सही वक़्त वही होता है जब उसे खोने का डर सताने लगता है।"

"आपको गिरने से डर लगता है या गिरकर न उठने से?"

"नहीं... मुझे किसी भी सफ़र के टॉक्सिक हो जाने से डर लगता है।"

"ये बात सिर्फ़ फ़िल्मों पर भी लागू होती है या रिश्तों पर भी?"

"रिश्तों से मेरा राबता कभी कुछ ख़ास नहीं रहा। तो हाँ, आप कह सकते हैं ये रिश्तों के बारे में भी है।"

"आपके परिवार के बारे में कोई ज़्यादा नहीं जानता सिवाय इसके कि आप शिमला से हैं... कुछ बताना चाहेंगी आप?"

"मुझे अच्छा लगेगा आप सिर्फ़ मीरा को मीरा के नाम से और उसके काम से जानिए।"

"मीरा अगर एक अभिनेत्री न होती, तो क्या होती?"

"कुछ भी हो सकती थी, ठीक उसी तरह जैसे आज एक अभिनेत्री हूँ। वैसे आपको नहीं लगता कि हम कुछ न होकर ही पूरी तरह आज़ाद होते हैं। तब हम कुछ भी कर सकते हैं। मगर कुछ होने के बाद हम वही करते हैं जो हम होते हैं। यह बात मुझे पूरी तरह एक अभिनेत्री बनने के बाद समझ आई। इससे पहले मैंने अपना बहुत सारा वक़्त इस सवाल का जवाब ढूँढ़ने में लगा दिया था कि आख़िर मैं होना क्या चाहती हूँ।"

मेरे इस जवाब पर वह मुस्कुराया था जो मेरी नज़रों से बचा नहीं रह सका। अक्सर मैं वही चीज़ें देख लेती हूँ जो मुझे नहीं देखनी चाहिए। फिर उसने कोई जवाब दिए बिना ही मुझसे अपना अगला प्रश्न पूछा।

"आपको अपनी पहली फ़िल्म के लिए ज़्यादा स्ट्रगल नहीं करना पड़ा। उसके बाद आपका सफ़र कैसा रहा? आप नेपोटिज़्म पर क्या राय रखती हैं?"

"मैं काम मिलने के मामले में हमेशा से लक्की ही रही। फ़िल्मी बैकग्राउंड से न होते हुए भी और कोई गॉडफ़ादर न होने के बावजूद मुझे अच्छी फ़िल्में मिलती रहीं। और रही बात नेपोटिज़्म की तो यह बताइए यह कहाँ नहीं है! आप इसे ऐसी बीमारी समझ लीजिए जिसका कोई इलाज नहीं है। जब तक इस दुनिया का कारोबार चलेगा तब तक यह बीमारी हमारे साथ-साथ चलेगी। इसके ख़िलाफ़ लड़ाइयाँ चलती रहेंगी, मोर्चे निकाले जाते रहेंगे लेकिन ये यहीं रहेगा। ये एक कड़वा सच है जिसे हमें स्वीकार कर लेना चाहिए।"

"इसका मतलब आप नेपोटिज़्म को कोई बड़ी समस्या नहीं मानती? आप अपना जवाब सिर्फ़ बॉलीवुड को ध्यान में रख कर दीजिए।"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"बात इसे समस्या मानने या न मानने की नहीं है। बात इस सच को स्वीकार करने की है कि इस समस्या का कोई हल नहीं है। मैं मानती हूँ फ़िल्मी बैकग्राउंड से आने वाले लोगों का सफ़र वहाँ से शुरू होता है जहाँ से एक आम इंसान का स्ट्रगल ख़त्म होता है। मगर नेपोटिज़्म आपको एक सशक्त अभिनेता होने का ताज नहीं दिला सकता। एक बार फ़िल्म आ जाने के बाद सबका भविष्य जनता के हाथों में होता है। और जनता नेपोटिज़्म का झंडा लेकर नहीं घूमती। दूर तक वही जाता है जिसके पास हुनर होता है।"

"आप ऐसा इसलिए कह सकती हैं क्योंकि आप कभी इसका शिकार नहीं हुईं। सफलता छू लेने के बाद ज्ञान देना आसान हो जाता है।"

"आपको क्या लगता हैं स्ट्रगल सिर्फ़ वही लोग करते हैं जो इसका शिकार होते हैं? सफलता मिलने के बाद तो सफ़र और भी कठिन हो जाता है। और जिसे आप ज्ञान की बातें कह रहे हैं वह एक्चुअली में एक्सपीरियंस होता है जो बहुत सारी ग़लतियाँ करने के बाद मिलता है। मंज़िल पर पहुँचकर ही कोई बता सकता है कि सफ़र में क्या-क्या कठिनाई आ सकती है।"

"फिर भी हर किसी का एक सामाजिक उत्तरदायित्व होता है। ग़लत के ख़िलाफ़ बोलने का, अपनी आवाज़ उठाने का। क्या मैं ग़लत कह रहा हूँ?"

"हाँ, तो मैंने कब कहा आप आवाज़ मत उठाइए। मगर हर कोई हर तरह का काम नहीं कर सकता। मैं दिन भर नारे नहीं लगा सकती। इसके ख़िलाफ़ लंबे-लंबे भाषण नहीं दे सकती। मुझे अगर अपना सामाजिक उत्तरदायित्व निभाना ही होगा तो मैं किसी ग़ैर फ़िल्मी बैकग्राउंड वाले व्यक्ति को आगे प्रोमोट करूँगी। अगर उसमें टैलेंट हुआ तो जितना मुझसे बन पड़ेगा मैं उतना करूँगी। ये मेरा पर्सनल ओपीनियन है। हर कोई अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने के लिए स्वतंत्र है। और मैं इस बात की रिस्पेक्ट भी करती हूँ। लोग आवाज़ उठाएँ इसके ख़िलाफ़। इससे ये ख़त्म नहीं होगा तो कम-से-कम अति भी नहीं होगी।"

"मगर आप तो इसे ग़लत मान ही नहीं रही हैं? आपके लिए तो यह एक समस्या है।"

"मैंने कब कहा कि ये सही है। मैं बस इसके होने का सच स्वीकार कर चुकी हूँ। मैं आपसे कहती हूँ जिस दिन एक बाप अपनी प्रॉपर्टी अपने बच्चों में न बाँटकर ग़ैरों में बाँटने लगेगा उस दिन नेपोटिज़्म ख़त्म हो जाएगा। क्या आप ऐसे दिन की कल्पना भी कर सकते हैं?"

इसके बाद संदीप ने मुझसे नेपोटिज़्म से संबंधित कोई सवाल नहीं पूछा था। उस दिन मैं भी जान गई थी कि क्यों इस इंडस्ट्री में संदीप का इतना नाम है।

"आपके फ़ैंस जानना चाहते हैं कि क्या आप किसी से प्यार करती है?"

"अब ये तो कोई राज़ नहीं है... हर फ़िल्म के साथ मेरे अफ़ेयर की ख़बरें उड़ती हैं।"

"आप कोई राज़ वाली बात बता दीजिए?"

"जी हाँ मैं ख़ुद से और अपने फ़ैंस से प्यार करती हूँ।"

"अब ये तो आपने बड़ा ही डिप्लोमैट-सा जवाब दिया।"

"आप इतनी देर से कंट्रोवर्सी जो ढूँढ़ रहे हैं।"

मैंने मुस्कुराते हुए कहा। इस बार जवाब में संदीप ने अपनी मुस्कुराहट को छुपाया नहीं।

"आख़िरी सवाल। मीरा क्या है? मीरा ख़ुद को कैसे देखती है?"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"मीरा एक जवाब है जिसका सवाल उसकी ख़ुद की ज़िंदगी है।"

इंटरव्यू ख़त्म करने के बाद वह चला गया। जाते समय उसने कहा कि उसे मेरे बारे में आज बहुत कुछ पता चला है। वह भी जो मैंने उसे नहीं बताया। इसके बाद हमारी मुलाक़ातें इधर-उधर कभी किसी इवेंट पर तो कभी किसी फ़िल्म प्रीमियर पर होती रहीं। लेकिन बातें सिर्फ़ औपचारिकताओं तक ही सीमित रहीं। हमारी सही से अनौपचारिक तरीक़े से बात अविनाश लूथरा को सज़ा मिलने के लगभग एक साल बाद मुंबई के ताज होटल में चल रही एक पार्टी के दौरान हुई। उसी दिन ताज पर आतंकवादी हमला हुआ था। मगर हमले से कुछ देर पहले ही हम पार्टी से निकल चुके थे।

पार्टी एक प्रोड्यूसर के जन्मदिन की थी। वहाँ हर क्षेत्र से जुड़े नामी-गिरामी लोग मौजूद थे। वहाँ आने के कुछ देर बाद ही मुझे ऐसा लगने लगा था जैसे मैं वहाँ उस एक्स्ट्रा पेंच की तरह हूँ जिसकी फ़िलहाल तो किसी को ज़रूरत नहीं है। लोग मुझसे जुड़ ही नहीं पाते थे। मुझ में कमी थी या उनकी कोशिश में मुझे नहीं पता। मैं सबसे मिलने-जुलने के बाद खिड़की के पास जाकर खड़ी होकर सिगरेट पीने लगी। वाइन और वोडका पीना मुझे पसंद था। मगर जब मुझे उनकी लत लगती महसूस हुई तो मैंने पीना छोड़ दिया था। जब भी कभी मैं भीड़ में होती तो मैं सिगरेट पीने लगती ताकि उस भीड़ को झेल सकूँ जहाँ होना मैं टाल नहीं सकती थी। मुझे अलग खड़ा हुआ देखकर संदीप मेरे पास आया। वह हर बार की तरह आज भी अपनी यूनिफ़ॉर्म में ही था। बस कुर्ते का रंग आज नेवी ब्लू था। अच्छा लग रहा था। मैंने उस दिन लाइट ग्रीन कलर का इवनिंग गाउन पहना था। बालों को लापरवाही से एक नॉट में बाँधा हुआ था। उसने मेरे पास आकर मुस्कुराते हुए कहा, "Hi, I am Sandip Mittal."

फिर उसने हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ाया।

"Meera, Nice to meet you."

हाथ-से-हाथ मिलाते हुए मैंने कहा।

"सोचा आज इन्फ़ॉर्मली इंट्रोड्यूस किया जाए ख़ुद को।"

ये सुनकर मैं मुस्कुरा दी और सिगरेट का एक कश भरा।

"You are looking beautiful today."

"Thanks. You too."

"मैं तो हमेशा एक जैसा लगता हूँ।"

"हाँ, बस कुर्ते का रंग अलग होता है।"

"आप ये नोटिस करती हैं?"

मैं उसे कहना चाहती थी कि वह मुझे आप की जगह तुम कह सकता है। मगर मैं चुप रही। मुझे लगता है जब दो लोगों के बीच किसी भी तरह का आकर्षण अपने शुरुआती दौर में होता है तो वहाँ इस तरह की औपचारिकताएँ उस आकर्षण को और भी रूमानी बना देती हैं।

"आप भीड़ से अलग जो नज़र आते हैं।"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"ये कॉम्प्लीमेंट है या मुझ पे तंज़ कसा जा रहा है?"
"इस वक़्त मैं जहाँ खड़ी हूँ वहाँ मुझे देखकर आपको क्या लगता है?"
"आपको सिगरेट नहीं पीनी चाहिए।"
उसने हँसते हुए कहा।
"होना तो मुझे फ़िल्मों में भी नहीं चाहिए था। मगर मैं हूँ।"
"I am glad you are."
"आपका रिव्यू पढ़ा मेरी नयी फ़िल्म पर।"
"कैसा लगा?"
"काफ़ी सच्चा लिखते हैं आप।"
संदीप ने दो दिन पहले मेरी एक फ़िल्म पर अपने कॉलम में लिखा था-
मीरा की इस नयी फ़िल्म में सब कुछ है। मीरा अपने किरदार में भी नज़र आती हैं। परंतु उस किरदार में मीरा ख़ुद कहीं दिखाई नहीं देती। मीरा की ख़ासियत ही यही है कि मीरा किरदार में होते हुए भी ख़ुद को कहीं खोने नहीं देतीं। उनकी यही अदा उन्हें उनकी समकालीन अभिनेत्रियों से अलग करती है। लेकिन इस फ़िल्म में ऐसा कुछ नहीं दिखता। फ़िल्म में एक रेप सीन फ़िल्माया गया है जिसे देखते हुए ऐसा लगता है जैसे वह असल में हुई कोई दुर्घटना हो, जो आप आँखों देखी देख रहे हों। ये फ़िल्म निराश तो नहीं करती मगर मीरा के अपने बनाए गए मापदंडों पर खरी भी नहीं उतरती।
फ़िल्म में एक रेप सीन था जिसमें विलेन का किरदार निभाने वाला एक्टर सीन करते हुए थोड़ा उत्तेजित हो गया था। जब वह हद पार करने लगा तो मैंने उसके पेट पर एक ज़ोर से लात मारी थी। जिसे देखकर डायरेक्टर को लगा ये हम दोनों ने सोच-समझकर सीन को और बेहतर बनाने के लिए किया था। वह सीन विलेन दोबारा शूट करने के लिए कहता रहा पर डायरेक्टर ने उसकी एक नहीं सुनी थी। क्या वह मुझे मार सकता है? नहीं ये तो बहुत पुरानी और छोटी-सी बात है।
"मगर आपकी फ़िल्म तो बॉक्स ऑफ़िस पर धूम मचा रही है।" संदीप ने कहा।
"लोगों को बस एंटरटेनमेंट चाहिए... मिल जाए तो फ़िल्म हिट नहीं तो फ़्लॉप।"
"आपकी उस किक के बाद मैं आपका एक बार फिर से फ़ैन हो गया हूँ।"
"सँभल के रहिएगा... आग से खेल रहे हैं आप।"
मैंने सिगरेट का धुआँ छोड़ते हुए उसकी तरफ़ देखा।
"इससे कम पर मैं सेटल हो भी नहीं पाता। और फिर जलने से डरता कौन है!"
उस दिन वह अलग ही मूड में था। मगर मुझे अच्छा लग रहा था उसका इस तरह से मेरे साथ फ़्लर्ट करना। धीरे-धीरे सब हमें नोटिस करने लगे थे।
"आग से तो फिर भी बच जाएँगे आप... कल अख़बार में ख़बर बनने से कैसे बचेंगे?"
मैंने उसका ध्यान लोगों की तरफ़ आकर्षित करते हुए कहा।
"ख़बर तो पहले भी बहुत बार बन चुका हूँ... इस बार आपके साथ सही।"
उसके कहने के अंदाज़ से ऐसा लग रहा था जैसे उसे भी लोग क्या सोचते हैं, इस बात की परवाह नहीं है।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

“कुछ ज़्यादा ही इन्फ़ॉर्मल नहीं हो रहें आज आप?”

“I am sorry if I crossed my line.”

उसके यूँ माफ़ी माँगने से मुझे महसूस हुआ जैसे कुछ मेरे दिल को छूकर गुज़रा हो।

“Don't worry, You are still far away.”

“Is there a line?” इस बात का मैंने कोई जवाब नहीं दिया बस मुस्कुरा दी। फिर मैंने उससे पूछा, “क्या हम पार्टी छोड़कर जा सकते हैं?”

“कहाँ जाना चाहती हैं आप?”

“कहीं भी, बस यहाँ से दूर।”

पार्टी करते लोगों को देखते हुए मैंने कहा।

हम पार्टी छोड़कर बाहर आ गए। मैंने अपना मुँह स्कार्फ़ से कवर कर लिया था। हम गेट वे ऑफ़ इंडिया की तरफ़ चल पड़े। मेरा बॉडीगार्ड हमारे पीछे-पीछे आ रहा था।

“एक बात पूछूँ?” संदीप ने प्रश्न किया।

“On record or off record?”

“Whatever the way you want. पर मैं जानता हूँ तुम जवाब दोगी नहीं।”

आप से तुम पर आने में बस इतना वक़्त लगा जितना आँख बंद करके खोलने में लगता है।

“मत पूछो फिर।”

“क्यों?”

“मैं तुम्हें सही साबित नहीं करना चाहती।”

“That’s not fair.”

“Nothing is fair in this world. वैसे मुझे पता है तुम क्या पूछोगे?”

“क्या?”

“Something about Avinash Luthra?”

“तुम्हें कैसे पता?

तभी मेरा बॉडीगार्ड भागते हुए हमारे पास आया और हमें बताया कि मुंबई पर आतंकवादी हमला हुआ है। ताज में भी वह घुस चुके हैं। हम अभी-अभी पार्टी से निकले थे। ज़रा-सी देर हो जाती तो हम भी वहाँ फँस जाते। जो लोग अंदर थे उन लोगों का सोचकर मेरा दिल घबराने लगा। मेरा ब्लड प्रेशर लो हो गया था, जिस वजह से मैं बेहोश हो गई थी। जब मेरी आँख खुली तो मैंने देखा संदीप मेरे साथ मेरे बांद्रा वाले फ़्लैट में ही है, जिसे मैंने अभी एक साल पहले ही ख़रीदा था। उठने पर मुझे पता चला कि ताज में बहुत से लोगों को बंदी बना लिया गया है। पूरे मुंबई में दहशत का माहौल है। संदीप मुझे ठीक-ठाक देखकर जाने लगा लेकिन मैंने उसे जाने नहीं दिया। मेरे कहने पर वह रुक भी गया था। वह पहली रात थी जब हम एक साथ एक छत के नीचे थे।

एक हफ़्ते बाद वह मुझसे मिलने सेट पर आया। सीन वह चल रहा था जहाँ हीरो-हीरोइन को एक-दूसरे से प्यार का इक़रार करना होता है। मैं सीन ख़त्म करके जब संदीप के पास

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

आई तो उसने मुझसे कहा, "I love you too बोलने तक तुम्हारे फ़ेस का हर एक्सप्रेशन to the point था। जैसे ही तुमने वह बोला you were blank."

"तुम पहले हो जिसने यह नोटिस किया। I hate saying that... जिसने भी ये ट्रेडिशन शुरू किया था वो अगर आज मुझे मिल जाए तो मैं पूछूँगी कि क्यों ये बला शुरू की थी?"

मैंने टिशू से अपने चेहरे पर से मेकअप हटाते हुए कहा।

"क्यों? इसमें क्या प्रॉब्लम है?" उसके पूछने में उत्सुकता झलक रही थी।

"यहीं से तो प्रॉब्लम स्टार्ट होती है।"

"कैसे?"

"See, जैसे ही ये इक़रार-विक़रार होता है तुम एक-दूसरे के लिए रिस्पॉन्सिबल फ़ील करना शुरू कर देते हो। जैसे तुम एक नया मोबाइल ख़रीदते हो और फिर तुम्हारा सारा ध्यान उसे सँभालने में लग जाता है कि कहीं ये टूट न जाए। या फिर इसे ऐसे भी देख सकते हो कि इमोशंस को अप्रूवल मिलते ही वे किसी विकासशील देश की जीडीपी की तरह बिहेव करने लगते हैं। फिर उस रिश्ते को क़िस्मत से ही अच्छे दिन नसीब होते हैं।"

मैंने उसे अपना नज़रिया समझाने की कोशिश की। मेरी बात सुनकर पहले तो वह बहुत ज़ोर से हँसा, फिर बोला, "ऐसा एग्ज़ाम्पल सिर्फ़ तुम ही दे सकती हो... मगर फिर भी उन्हें ऐसा करके ख़ुशी भी तो मिलती है।"

उसने मेरी ओर जूस का गिलास बढ़ाया।

"उसके बाद?"

"उसके बाद क्या? वो साथ में ख़ुश रहते हैं।"

"नहीं, वह एक-दूसरे को ख़ुश करने में लग जाते हैं। फ़र्क़ को समझो।"

"इसका मतलब ये तो नहीं कि इस डर की वजह से कोई रिश्ता ही न बनाया जाए।"

"मैं नहीं कर पाऊँगी ऐसा। मैं ख़ुद को इतना क़ाबिल नहीं समझती। बिना कोई नाम दिए शायद पूरी ज़िंदगी साथ रह लूँ... नाम देने के बाद एक मिनट भी नहीं।"

मेरी इस बात पर संदीप मुझे ख़ामोशी से कुछ देर तक देखता रहा।

"जब भी मुझे लगता है, तुम्हें जानने लगा हूँ तुम एक नयी पहेली बन के सामने आ जाती हो।"

क्या आप कभी किसी को पूरी तरह जान पाए? अगर नहीं तो क्या आपने कभी ख़ुद से पूछा कि ऐसा क्यों हुआ? क्या आपने उन्हें पूरी तरह जानने की कोशिश की थी? या फिर दूसरों से सुनकर ही उनके बारे में अपनी राय बना ली थी? वैसे तो किसी को भी पूरी तरह जानना नामुमकिन है, मगर फिर भी इधर-उधर से सुनकर उनके बारे में कोई राय बना लेना भी तो सही नहीं है।

मुझे याद है एक बार मुझे एक और हीरोइन के साथ एक गाने की शूटिंग करनी थी। हम दोनों के ही कपड़े एक जैसे थे, बस उनके रंग अलग थे। मैं शूटिंग के लिए तैयार हो चुकी थी कि तभी मुझे पता चला कि उस दूसरी हीरोइन ने सेट पर हंगामा मचा रखा है। उसे अपनी ड्रेस का रंग पसंद नहीं था। उसे मेरा वाला रंग ही चाहिए था। मैंने डायरेक्टर से कहा कि मुझे अपनी ड्रेस उसे देने में कोई आपत्ति नहीं है। बस आज ये शूटिंग हो जानी चाहिए

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

क्योंकि अगले दिन मेरा संदीप के साथ कहीं घूमने जाने का प्रोग्राम था। लेकिन उसने फिर इस बात पर हंगामा मचा दिया कि वह किसी की उतरी हुई ड्रेस नहीं पहनेगी। पहले उसे ड्राईक्लीन करवाया जाए। उस दिन उस गाने की शूटिंग नहीं हुई। मुझे संदीप के साथ अपनी ट्रिप रद्द करनी पड़ी। अगले दिन जब मैं और वह शॉट का इंतज़ार कर रहे थे तब उसने मुझसे कहा, "मैंने तो तुम्हारे एटिट्यूड के बारे में बहुत सुना था। पर ऐसा कुछ नज़र आया नहीं। मैं तुम्हारी जगह होती तो कभी अपनी ड्रेस किसी और को नहीं देती।"

"मुझे अननेसेसरी का ड्रामा करना पसंद नहीं।"

"इसे ड्रामा नहीं, अपनी पावर दिखाना कहते हैं। वरना इस इंडस्ट्री में लड़कियों के लिए अपनी जगह बनाना कितना मुश्किल है!"

"मैं इस ड्रामे की जगह अपने काम से अपनी जगह बनाना ज़्यादा पसंद करूँगी। मुझे नहीं फ़र्क़ पड़ता मेरे किरदार ने क्या पहना है। मैं उस किरदार को कैसे एक लाइफ़ देती हूँ ये मेरे लिए ज़्यादा इंपॉर्टेंट है।"

जिस लहजे में मैंने उसको ये कहा था उस लहजे को मेरा एटिट्यूड कहा जा सकता था।

"तुम कहना चाह रही हो जो मैंने किया वह सब बेकार का ड्रामा था?"

उसको अब तक थोड़ा ग़ुस्सा आ गया था।

"तुम क्या करती हो इससे मुझे कोई मतलब नहीं। ये मेरी जगह नहीं है बोलने की।"

अगले दिन अख़बार के एक फ़िल्मी पेज पर ख़बर थी कि मीरा ने कहा उनसे अच्छी इस वक़्त बॉलीवुड में कोई हीरोइन नहीं है।

अब जो लोग अख़बार पढ़ेंगे, वे यही समझेंगे कि मैंने सचमुच ऐसा कुछ कहा होगा।

ऐसे ही एक बार एक फ़िल्म के प्रीमियर पर मैं एक प्रोड्यूसर रामजी लालजी से टकराई। वह उन लोगों में से एक थे जिनके साथ बात करके मुझे हमेशा अच्छा ही लगता था। उनके लिए मैं तब तक पाँच-छह फ़िल्में कर चुकी थी। उन्होंने मुझे देखते ही कहा, "You are looking stunning, today my dear."

"Thank you, Ramji. आप मुझे देखकर हमेशा यही कहते हैं।"

"तुम स्टनिंग दिखना बंद कर दो मैं कुछ और कहना शुरू कर दूँगा।"

"आपने जान माँग ली होती तो फिर भी आसान था। But, this I can't help it."

मेरी इस बात पर उन्होंने ज़ोर से ठहाका लगाया।

"You are a slayer, my girl. When a woman knows she is beautiful, she becomes more dangerous."

"Don't worry, a beauty needs admirers to sustain. So you are saved."

मैंने भी उनकी बात को आगे बढ़ाते हुए जवाब दिया।

"You are a deadly combination I must say, Meera. A beauty with brain. चलो आओ ज़रा मुझे तुम्हें किसी से मिलवाना है। एक नया डायरेक्टर है। उसके पास तुम्हारे लिए एक बहुत अच्छी स्क्रिप्ट है। तुम मिल लो एक बार। अगर तुम्हें ठीक लगता है तो आगे बात कर लेंगे।"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

उन्होंने मुझे उस डायरेक्टर से मिलवाया। वह एक नौजवान लड़का था। मुझे देखकर वह अपनी कहानी में लिखा मेरा किरदार सुनाने लगा, जिसे उसने मेरे ख़ुद के चरित्र को ध्यान में रखकर लिखा था।

"मैम, मैं आपका बहुत बड़ा फ़ैन हूँ। इसीलिए मैंने ये कहानी सिर्फ़ आपके लिए लिखी है। ये किरदार बिलकुल आप जैसा है। बहुत सारा नखरा, अपने आगे किसी को कुछ नहीं समझना, अपनी सुंदरता पर ग़ुरूर करना, पैसे का टशन दिखाना।"

ये सुनकर रामजी मुझसे नज़रें चुराने लगे।

"मेरी इन ख़ूबियों की वजह से आप मुझे पसंद करते हैं?"

मेरे इस सवाल से वह झेंप गया और कुछ बोल नहीं पाया। मैंने रामजी से रिक्कू जी से बात करने को कहा। साथ ही यह भी कहा कि अगर मैं इनके साथ काम करने के बारे में सोचूँगी भी नहीं तो यह साब कल कहेंगे कि मीरा नये लोगों के साथ काम करना पसंद नहीं करती। मेरी तारीफ़ की लंबी सूची में यह बात और जुड़ जाएगी। बाद में वह फ़िल्म हमने साथ में की भी। फ़िल्म पूरी होने के बाद उस डायरेक्टर ने मुझसे कहा कि आपके बारे में जैसा सुना था आप उससे बहुत अलग हैं।

एक कलाकार की ज़िंदगी भी किसी रोचक कहानी की किताब से कम नहीं होती। जितने पन्ने, उतने क़िस्से।

ज़रा अब यादों से बाहर आकर देखूँ, अब टीवी पर क्या चल रहा है?

यह टीवी पर शिल्पी क्या कर रही है?

एंकर: अब हमारे साथ मीरा के बचपन की दोस्त शिल्पी झा हैं। जो उनके साथ स्कूल में भी पढ़ा करती थीं। शिमला से दिल्ली आने के बाद मीरा शिल्पी के घर ही कुछ समय के लिए रही थीं। आइए इनसे जानते हैं कि मीरा मित्र कैसी थीं।

शिल्पी: मीरा एक बहुत अच्छी मित्र थी। मेरी एक ग़लतफ़हमी की वजह से मैंने उससे अपने सारे नाते तोड़ लिए थे। मुझे बाद में इस बात का एहसास हुआ कि उसने जो किया था वह मुझे बचाने के लिए किया था। मैं इतने सालों से उससे माफ़ी माँगने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाई थी। और अब बहुत देर हो गई। जितना आप मीरा को जानते उतना आपको लगता कि मीरा इस दुनिया की है ही नहीं। और जितना भी आप उसे समझते आप यही पाते कि मीरा इस दुनिया के लिए बुरी भी नहीं थी। मगर उसे जानना और समझना हम लोगों के बस की बात नहीं थी।

शिल्पी की बात सुनकर मेरा गला भर आया है। मेरे मन पर एक बोझ-सा था जो आज उतर गया। मरने के बाद यह पहली ख़ुशी थी जो मुझे महसूस हुई है।

एंकर: अब हमारे साथ कुछ लोग और जुड़े हैं जो मीरा के साथ ही स्कूल में पढ़ते थे। बताइए क्या कहना चाहते हैं आप लोग मीरा के बारे में?

मीरा एक बहुत ही अजीब लड़की थी। हमेशा ख़ुद में ही खोई हुई रहती थी। कब क्या कर जाए कोई नहीं बता सकता था। एक बार हम सब में और उसमें किसी बात को लेकर लड़ाई हो गई थी। जैसे अक्सर स्कूल में साथ पढ़ने वालों के बीच हो जाया करती है। इतनी छोटी-सी बात पर उसने हमें सज़ा दिलवाने के लिए ख़ुद को विक्टिम बनने दिया और टीचर

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

के सामने हम सब दोषी हो गए। हम बारह साल उसके साथ पढ़े थे, मगर कभी हमने उसे एक नॉर्मल इंसान की तरह नहीं देखा था।

एंकर: इन सब की बातें सुनकर आपको क्या लगता है? उनके व्यवहार में इतनी अनिश्चितता क्या किसी मानसिक रोग की पुष्टि करती है?

ये सब वही थीं जो मेरे नाम का मज़ाक़ उड़ाया करती थीं। मुझे यह जानकर हैरानी हो रही है कि यह सब अब तक एक-दूसरे के साथ हैं। क्या पता मुझसे इनकी नफ़रत ही इन्हें अब तक एक-दूसरे के साथ बाँधे रखी हो! भले ही प्रेम और नफ़रत की दिशा अलग हो, मगर उनकी ऊष्मा का स्रोत एक ही होता है। इसीलिए दोनों के सम्मोहन की प्रकृति भी एक जैसी ही होती है, जो उद्देश्य एक होने पर, लोगों को एकजुट कर ही देती है।

एंकर: अभी-अभी अभिनेत्री सोनाली सिन्हा ने अपने इंस्टाग्राम पर एक फ़ोटो शेयर की है जिसमें मीरा ड्रग्स लेती नज़र आ रही हैं। तस्वीर देखकर ऐसा लग रहा है जैसे वह किसी पार्टी में हैं। वहाँ उनके साथ कुछ और लोग भी हैं जो नशा करते नज़र आ रहे हैं। यह ख़बर किसी सनसनीख़ेज़ ख़ुलासे से कम नहीं है। आइए सोनाली जी से यह पूछते हैं कि इस ख़बर में कितनी सच्चाई है?

सोनाली: इस ख़बर में उतनी ही सच्चाई है जितना मेरे और आपके होने में। यह तस्वीर मेरे पास कई सालों से है। आज तक इसलिए चुप रही क्योंकि मुझे दूसरों की ज़िंदगी में दख़ल देने की आदत नहीं है। वो अपनी ज़िंदगी में क्या करते हैं इससे मुझे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। लेकिन जब रिक्कू जी ने मीरा का इतना बड़ा सच दुनिया के सामने लाना अपनी ज़िम्मेदारी समझी तो मुझे भी लगा कि मुझे यह सच भी सामने ले आना चाहिए। आपने शायद कभी नोटिस नहीं किया। लेकिन उसकी आँखों में एक अलग-सी चमक रहती थी। मैं यह नहीं कहती मीरा को ड्रग्स लेने की आदत थी। मगर वो लिया करती थी। अब यह बात बताने के पीछे मेरा मक़सद सिर्फ़ इतना है कि इससे शायद पुलिस को मीरा की मानसिक स्थिति समझने में मदद मिल सके।

बस यही कसर बाक़ी रह गई थी। प्रेम फिर भी एक बार अपनी आख़िरी साँसें ले सकता है मगर नफ़रत नहीं। इसकी उम्र इतनी लंबी होती है कि वह आपके मरने के बाद भी लोगों के मन में ज़िंदा रहती है। इस तस्वीर में मैं ड्रग्स नहीं ले रही बल्कि सिगरेट पी रही हूँ। और इसी पार्टी में सोनाली ख़ुद भी मौजूद थी। वह सच जानती थी।

सोनाली के मन में मेरे लिए है उस दिन से बैर बैठ गया था, जब एक अवॉर्ड सेरिमनी में मेरे नाम की जगह उसका नाम ग़लती से ले लिया गया था। वैसे तो सबको पता होता है कि अवॉर्ड किसे मिलेगा। मगर उस दिन जब पाँच दस मिनट बाद तक उन लोगों ने अपनी ग़लती नहीं सुधारी तो सोनाली अवॉर्ड लेने चली गई और एक छोटी-सी स्पीच भी दे दी। आयोजकों की टीम से एक बंदे ने आकर मुझसे इस ग़लती की माफ़ी माँगी। मैंने उनसे कहा भी कि जो हो गया, सो हो गया। अब उससे सबके सामने अवॉर्ड वापस लेकर उसकी बेइज़्ज़ती मत करना। ग़लती आप लोगों से हुई है। इसकी सज़ा उसे क्यों मिले! अभी मैं उसे यह बात कर ही रही थी कि किसी ने स्टेज पर उसी अवॉर्ड के लिए मेरा नाम पुकारा। सोनाली तब तक स्टेज पर ही थी। मुझे सोनाली के लिए बुरा लग रहा था। उसकी जगह मैं

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

भी होती तो मुझे भी वहाँ खड़े रहने में बहुत शर्मिंदगी महसूस होती। मैंने बाद में उससे बात करने की कोशिश भी की, लेकिन उसने मुझे पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया था। उसने यह ग़लतफ़हमी पाल ली थी कि यह सब जो नाम को लेकर गड़बड़ी हुई वह मेरा रचा कोई खेल था उसे नीचा दिखाने के लिए।

कभी-कभी यह सोचकर मुझे बहुत बुरा लगता था कि क्यों मेरी ज़िंदगी में लोगों से अच्छे संबंध न बना पाने का संघर्ष रहा। मैं उनके पास जाती तो वह मुझसे दूरी बना लेते। मैं दूर ही रहती तो वह पास आने से घबराते। और कोई पास आ भी जाता तो मैं उन्हें ख़ुद से दूर कर देती। ख़ैर!

संदीप और मेरे बीच की दूरी घटकर अब साल से दिन हो गई थी। तब तक मोबाइल और इंटरनेट भी हमारी लाइफ़स्टाइल का एक हिस्सा बन चुके थे। हम रोज़ रात को बहुत देर तक फ़ोन पर बातें करते रहते। मेरा तीसवाँ जन्मदिन था। मैं कभी अपने जन्मदिन की पार्टी नहीं रखती थी। उस दिन संदीप मुझे अपने घर ले गया। दो कमरों का छोटा-सा अपार्टमेंट मुझे अपने घर से ज़्यादा अपना महसूस करवा रहा था। उसने पहले से ही वहाँ केक और डिनर बनाने की तैयारी कर रखी थी। मेरी दादी की वजह से मुझे अच्छा खाना बनाने आता था। वह अलग बात है, मैंने इतने सालों में बनाया नहीं था। जब डिनर हो गया और केक काटने की रस्म भी हमने पूरी कर ली तब उसने कहा कि बेडरूम में उसने मेरे लिए एक सरप्राइज़ तैयार किया है।

उसका बेडरूम बहुत ज़्यादा बड़ा नहीं था, मगर जिस तरह से वह सजाया गया था उससे बहुत आकर्षक नज़र आ रहा था। हल्के नीले रंग की दीवारें नेचुरल वुड के रंग से बने फ़र्नीचर के साथ काफ़ी मेल खा रही थी। कमरे में सिर्फ़ एक लैंप और तीन मोमबत्तियाँ स्टैंड में लगी जल रही थीं। एक पूरी दीवार पर उसने मेरी और उसकी साथ ली गई तस्वीरों का कोलाज तैयार किया था। यही उसका सरप्राइज़ था। उन सब तस्वीरों को देखकर मुझे बस ख़ुश हो जाना चाहिए था। मगर मुझे ऐसा कुछ महसूस नहीं हुआ था। उन्हें देखकर मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मुझे इन बीते हुए पलों के साथ क़ैद करके दीवार पर लटका दिया गया हो। मुझे हैरान देखकर संदीप को लगा कि मुझे उसका सरप्राइज़ अच्छा लगा। फिर उसने मुझे बताया कि वो मुझे मेरी पहली फ़िल्म के बाद ही पसंद करने लग गया था, मगर मेरा इंटरव्यू लेने के बाद वह मेरे बारे में अक्सर सोचने लगा था।

“फिर कभी कुछ कहा क्यों नहीं?” मैंने पूछा।

“बस ऐसे ही। कोई ख़ास वजह नहीं। और सच कहूँ तो मुझे तुम्हारा इंटरव्यू लेने के बाद तुमसे थोड़ा डर भी लगने लगा था” कहकर उसने बच्चों की तरह उदास-सा चेहरा बनाया।

“चलो एक बात मैं भी तुम्हें बता देती हूँ। मुझे भी तुम में इंट्रेस्ट तभी से आने लगा था जब तुमने मेरी पहली फ़िल्म के बारे में लिखा था।”

यह सुनकर उसका चेहरा ख़ुशी से खिल उठा। उसने कहा, “मतलब आग दोनों तरफ़ लगी हुई थी।”

“अब इस बात से क्या फ़र्क़ पड़ता है!”

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

“तुम भी मेरे बारे में सोचती थी, ये ख़याल ही मुझे इस वक़्त तुम्हारे साथ रात भर खेलने को उकसा रहा है।”

ऐसा कहते हुए उसकी आवाज़ में सिर्फ़ शैतानी थी। फिर उसने मुझे अपनी बाहों में उठाकर बेड पर धीरे से रखा और मेरे खुले बालों में अपना चेहरा इस तरह छिपा लिया जैसे वह मेरे बालों से आने वाली सुगंध को अपने अलावा उस कमरे की हवा तक को नहीं छूने देना चाहता। साथ-साथ हमारे हाथ एक-दूसरे को हमारे कपड़ों से आज़ाद करते रहे। उसके बाद वह रात और हम इस तरह एक हो गए थे जैसे किसी ने हमें अपने होने के रंग में रंग दिया हो, जिसकी वजह से हम तीनों का रंग उस एक रंग जैसा नज़र आ रहा था। उस कमरे की ख़ामोशी के साथ हमारी साँसों की आवाज़ें मिलकर उस रात को और ख़ास बना रही थीं। कमरे में जो मोमबत्तियाँ जल रही थीं वो भी अब तक पिघलकर आधी हो गई थीं। उस रात हम दोनों नहीं हमारे बदन एक-दूसरे से पूरी रात बात करते रहे। हमारे बीच की सारी दूरियाँ सिमटकर ख़ुद में ही गुम हो गई थी। उस दिन हमारी बनाई गई यादों के जंगल में कुछ और पेड़ उग आए थे। हमारे रिश्ते की गहराई की छाँव उस जंगल पर बिखरकर हमारे दिलों को जाड़े की धूप-सा सुख पहुँचा रही थी। सुबह मेरी जब आँख खुली तो वह मुझे ही देख रहा था।

“You are so beautiful, Meera. I feel whole with you. You do complete me.”

उसके ये शब्द सुनने में जितना अच्छे लग रहे थे उतने ही भारी-भरकम थे। जैसे उसके इन शब्दों ने मुझ पर एक ज़िम्मेदारी का बोझ लाद दिया हो, उसको पूरा करने का। कोई कैसे ख़ुद को पूरा करने के लिए किसी और पर निर्भर हो सकता है! पर उस वक़्त मैंने उसकी इस बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया था और उसके साथ के अपने उस वक़्त में खो गई थी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मेरा सपना हीरोइन बनना

पुलिस को अब तक मीरा की हत्या के मामले में कोई कामयाबी नहीं मिल पाई है। सबूतों के अभाव में यही कहा जा रहा है, ये आत्महत्या का मामला भी हो सकता है।

अब तक कौन-कौन-सी अभिनेत्रियाँ हुई डिप्रेशन की शिकार? किस-किस ने आत्महत्या की? कौन अपने अपार्टमेंट में अकेले मृत पाई गईं?

टीवी पर अब ये प्रोग्राम चल रहा है। अतीत में घटी घटनाओं का उपयोग कब, कैसे, कहाँ करना है, कोई इन मीडिया वालों से पूछे। मौत का तमाशा बनाकर रख देते हैं। कोई आज जब गुज़र रहा होता है तो उसे ये भी नहीं पता होता कि कल वह किस-किस तरह किस-किस के काम आएगा।

दो दिन हो गए मुझे मरे हुए। फिर से चौपाटी जाते हुए ऐसा लग रहा है जैसे मेरी ज़िंदगी का हाल मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक वाला हो गया है। क्या मेरी मौत भी मलेशियन एयरलाइंस की तरह एक रहस्य बनकर रह जाएगी? क्या ये रहस्य बरमूडा ट्राएंगल की तरह ही पेचीदा है? ऐसे चूहे वाली मौत नहीं सोची थी मैंने। इंसान कुछ करते हुए मरे तो समझ आता है। परंतु इस तरह नींद में मर जाने का कोई तुक नहीं। मुझे याद है कितना दुख हुआ था मुझे जब पुलवामा अटैक में वह जवान मारे गए थे। लोग उन्हें शहीद कह रहे थे। मैंने बस इतना लिखा था कि वह शहीद नहीं हुए थे, उनकी हत्या हुई है। मैं कितना ट्रोल हुई थी इस बात पर। मैंने समझाने की कोशिश की थी मगर कोई फ़ायदा नहीं हुआ था। उस दिन मैंने सोच लिया था कुछ बदल सकते हो तो बहस करो। वरना ऐसी बहस का कोई अंत नहीं।

बारिश की मोटी-मोटी बूँदों ने ज़मीन पर अपनी ताल देनी शुरू कर दी है। ऐसे ही एक दिन मैं ख़ुद ड्राइव करके कहीं जा रही थी। गाड़ी में 'प्यार हुआ इक़रार हुआ' गाना चल रहा था। आप तो जानते ही हैं बारिश होते ही रेडियो एफ़एम वाले बारिश के गाने चलाने शुरू कर देते हैं। उस वक़्त शिल्पा शेट्टी पर बिग ब्रदर में की गई रेशियल टिप्पणी पर बड़ा बवाल मचा हुआ था। तभी एक गाड़ी ने तेज़ी से आते हुए मेरी गाड़ी के पिछले हिस्से पर ठोंक दिया। मैंने जब उतरकर देखा तो वह निशी ठाकुर थी जो मेरे एक को स्टार की सेक्रेटरी हुआ करती थी। वह बिलकुल टीवी स्टार श्वेता तिवारी की तरह लगती थी। पूछताछ करने पर उसने बताया कि वह जलन में अंधी हो गई थी। वह मुझे चोट पहुँचाना चाहती थी। क्योंकि जिस हीरो के लिए वह काम करती थी वह मुझ में रुचि ले रहा था और वह उसके प्रेम में पागल थी। क्या इस पागलपन को प्रेम कहा जा सकता है? किसी के प्रेम में ख़ुद को पूरी तरह क़ैद कर देना प्रेम की सही परिभाषा कैसे हो सकती है? वह भी जब प्रेम एक तरफ़ा हो तो ख़ुद का अस्तित्व बचाए रखने की हमारी ज़िम्मेदारी और ज़्यादा बढ़ जाती है। प्रेम में रहकर ख़ुद को उससे मुक्त रख पाना ही सर्वश्रेष्ठ प्रेम है और प्रेम के प्रति हमारी सच्ची वफ़ादारी भी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

कहीं उसने तो नहीं मारा होगा मुझे? ऐसे अगर गिनने लगी तो हर किसी के पास कोई-न-कोई वजह होगी मुझे मारने की।

क्या जलन किसी की जान लेने पर मजबूर कर सकती है? मैंने जब फ़िल्मों से संन्यास लिया था तब संदीप बहुत नाराज़ हुआ था। उस वक़्त मैं छत्तीस वर्ष की थी। तब भी भी मेरे पास काम की कोई कमी नहीं थी। नियमित योग और सही खान पान की वजह से उम्र का क़हर अब तक मुझ पर नहीं बरसा था। मैंने तब तक फ़िल्मों से संन्यास लेने के बारे में सोचा भी नहीं था। उस दिन मैं संदीप के साथ अपने अपार्टमेंट में थी। हम दोनों ड्राइंग रूम में बैठे हुए कोई फ़िल्म देख रहे थे। उसके कंधे पर मेरा सिर था। तभी उसने प्यार से मेरा नाम पुकारा, "मीरा!"

"मीरा नहीं मीठी।"

"क्या?"

"मेरा असली नाम मीठी है।"

"और तुम अब बता रही हो?"

"मुझे ख़ुद अभी याद आया।"

इस बात पर मुझे भी हैरानी हुई।

"बदला क्यों था?"

"वजह तुम्हें अजीब लग सकती है।"

"वो तो तुम भी लगती हो।"

मैंने उसके कंधे से उठकर उसको झूठे ग़ुस्से से घूरा और कहा, "मैं कभी फ़िल्मों में नहीं आना चाहती थी... मुझे लगता था मैं अपने बाबा का सपना क्यों कॉपी करूँ। जब मैंने अपनी पहली फ़िल्म साइन की तो मुझे लगा मुझे अपना नाम अपने ख़ुद के सपने के लिए बचाकर रखना चाहिए। और देखो आज तक मैं अपना सपना नहीं ढूँढ़ पाई।"

"वही तो जी रही हो।"

"क्या?"

"तुम्हारा सपना... फ़िल्मों में काम करना।"

"नहीं ये मेरा सपना नहीं है।"

"अच्छा एक काम करते हैं... मैं तुमसे कुछ सवाल पूछूँगा, तुम जवाब देना।"

वह ऐसे जोश में आ गया था जैसे उसने ठान ही लिया हो कि आज वह मेरा सपना ढूँढ़कर ही रहेगा।

"उससे क्या होगा?"

"देखो तो सही।"

"ok"

उसने मुझसे सवाल पूछने शुरू किए।

"क्या तुम्हें फ़िल्मों में काम करना अच्छा लगता है?"

"हाँ।"

"क्या तुम्हारा काम तुम्हें रातों को जगाता है?"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"हाँ।"

"क्या तुम हर पल ये नहीं सोचती रहती कि तुम अपने काम को बेहतर कैसे कर सकती हो?"

"हाँ"

"क्या तुम अपने काम के शिखर तक नहीं पहुँचना चाहती थी?"

"हाँ।"

"क्या जब भी तुम अपने अवॉर्ड्स को देखती हो तो तुम्हारा मन ख़ुशी से नहीं भर जाता?"

"हाँ।"

"क्या तुम मीरा बन के मीठी को नहीं भूल गई?"

"हाँ"

"बस यही तो वह जवाब है जिसे तुम अब तक ढूँढ़ रही थी।"

"मैं नहीं मानती।"

ऐसा नहीं था कि इस बात को न मानना मेरी ज़िद थी। फ़िल्में करना ही मेरा सपना है इस बात के साबित होने के ख़याल से ही मुझे डर लग रहा था।

"तुम्हारी मर्ज़ी... पर मैं आज से तुम्हें मीठी ही बुलाऊँगा।"

यह कहकर उसने मुझे अपनी ओर खींच लिया और अपनी बाहों में भरकर मेरे कान में मेरा नाम मीठी फुसफुसाया। मीठी उस दिन फिर से ज़िंदा हो गई थी।

संदीप तो चला गया था। मगर मेरे अंदर तूफ़ान छोड़ गया था। उसके सवालों ने मेरे मन में उथल-पुथल मचा दी थी। मैंने कभी इस बारे में क्यों नहीं सोचा था? मैं कितने ही सवाल करती रहती हूँ ख़ुद से, इस दुनिया से। फिर इन सवालों पर क्यों मैंने अब तक अपनी आँखें मूँद रखी थी? या मैं कहीं अपने उस डर की वजह से तो नहीं भाग रही थी कि अगर मैंने फ़िल्मों में काम करने को कोई नाम दे दिया तो मैं फ़िल्मों में काम करना बंद कर दूँगी? हाँ शायद यही वजह थी। अब मैं कैसे इन सवालों को नज़रअंदाज़ करूँ? अगर ये मेरे बाबा का सपना था भी तो क्या, ये मेरा सपना भी हो सकता है? मुझ पर ये थोपा नहीं गया है। मुझे फ़िल्मों में काम करना बहुत पसंद है। फिर मुझे वह सारे दिन याद आए जब मैं रात रात भर जागकर एक-एक सीन को और बेहतर करने के लिए मेहनत करती थी। मुझे याद है कैसे मैंने एक फ़िल्म के लिए मार्शल आर्ट की ट्रेनिंग ली थी, ताकि फ़िल्म के किरदार को जीवंत कर सकूँ। और वह जो मैंने एक ऐतिहासिक फ़िल्म की थी जिसके लिए मैंने तलवार चलाना सीखा था और जिसे सीखते हुए मैं ज़ख़्मी भी हो गई थी। और वह फ़िल्म जो रेगिस्तान में शूट हुई थी। मैं कितनी दूर तक नंगे पैर रेत पर चली थी। एक साउथ की डांसर पर आधारित फ़िल्म के लिए मैंने क्लासिकल सीखा था। ऐसे जाने कितने सीन थे जिन्हें करने के लिए मैंने अपना ख़ून-पसीना एक किया था। मगर फ़िल्मों में काम मैंने अपनी शर्तों पर किया। मैं हमेशा यही सोचती थी कि अगर मुझे काम अपने मन का नहीं मिला तो मैं फ़िल्मों में काम करना छोड़ दूँगी। क्या कोई अपने सपने को इस तरह से छोड़ने की इच्छा रख सकता है? मैंने जितना काम न मिलने के डर को ख़ुद से दूर रखा उतना ज़्यादा मुझे काम मिलता गया। या फिर मैंने इस डर को ख़ुद से दूर रखा इसीलिए मुझे काम मिलता

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

गया? क्योंकि जब हम डरते हैं तो हम नकारात्मकता को अपनी और आकर्षित करते हैं। और फिर जो काम हम जैसा चाहते हैं वैसा होता नहीं। पाउलो कोइलो ने भी कहा है और शाहरुख़ की फ़िल्म का भी डायलॉग है कि अगर आप किसी चीज़ को शिद्दत से चाहो तो सारी कायनात तुम्हें इससे मिलाने में लग जाती है। बस शर्त यही होती है कि उसे न पा पाने का डर मन में नहीं होना चाहिए। क्या मैं फ़िल्मों में आना इतनी शिद्दत से चाहती थी कि मुझे फ़िल्मों में आने के लिए ज़्यादा संघर्ष ही नहीं करना पड़ा? मेरा संघर्ष फ़िल्में मिलने के बाद उन फ़िल्मों में मेहनत करने का रहा। जैसे-जैसे मैं क़दम बढ़ाती गई, वहीं रास्ता बनता गया। मेरी दादी भी यही कहती थी कि फ़िल्में देखते हुए मेरे चेहरे पर वही चमक होती है जो मेरे बाबा के चेहरे पर हुआ करती थी।

बस इस बात का एहसास होते ही मुझे विश्वास हो गया कि फ़िल्मों में काम करना ही मेरा सपना है। अपने इस काम को सपने का नाम देते ही मुझे एक घुटन-सी होनी शुरू हो गई। मुझे लगने लगा जैसे अब मैं काम करूँगी तो सिर्फ़ इसलिए क्योंकि फ़िल्मों में काम करना मेरा सपना है, न कि इसलिए क्योंकि मुझे फ़िल्मों में काम करना पसंद है। मैंने बहुत कोशिश की इन दोनों बातों को एक समझने की, पर मैं नाकाम रही। मुझे मंज़ूर नहीं था अपने सपने के हाथों अपनी आज़ादी को गिरवी रखना। बस उसी पल मैंने निर्णय ले लिया कि अब मैं फ़िल्मों में काम नहीं करूँगी।

अगले ही दिन मैंने मीडिया के सामने ये बात रख दी थी। ये सुनकर संदीप बहुत चिल्लाया था। वह ख़ुद को इस बात का ज़िम्मेदार मान रहा था। उसे मेरा इस तरह अपनी हर इस चीज़ से दूरी बना लेना अच्छा नहीं लगता था जो मेरे बहुत क़रीब हो जाती थी। मगर उसने मुझे इस बारे में कभी कुछ कहा नहीं था। उस दिन उसने मुझसे बोला कि अगर तुमने मुझे ख़ुद से दूर किया तो मैं तुम्हें जान से मार दूँगा। फ़िल्मों में काम करना, न करना तुम्हारा निजी मामला है। मगर हमारे बारे में तुम्हारे अकेले के पास ये हक़ नहीं होगा। इसके एक साल बाद ही मैंने उससे अपना संबंध तोड़ लिया था। क्या पता उसे उस राजनेता विनय कुमार के बेटे से मेरी शादी की भी ख़बर लग गई हो? तो क्या जलन में वह भी मुझे मार सकता है? मरने के बाद मेरा दिमाग़ सचमुच ख़राब हो गया है। मैं संदीप के बारे में ऐसा कैसे सोच सकती हूँ!

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

राज़ी, रानी, राजीव

हल्की-हल्की बारिश में चौपाटी का नज़ारा ज़िंदगी से भरा एक बाउल नज़र आ रहा है, जिससे ज़िंदगी बस छलकने ही वाली है। हर कोई ख़ुश है। खेल रहा है। चहक रहा है। एक-दूसरे को छेड़ रहा रहा। कुछ पल के लिए ही सही इस बारिश ने इन सब की परेशानियों को भुला दिया है। बारिश के भी कितने रूप हैं! कभी जीवन तो कभी तबाही।

राज़ी, रानी और राजीव क्या कर रहे होंगे? बारिश के वक़्त राजीव का कितना मन करता था वह मुझे अलग-अलग तरह के पकोड़े बनाकर खिलाए, पर मैं खाती नहीं थी। कितना मायूस हो जाता था बेचारा! वह सत्रह साल का था, जब वह मेरे घर आया था। उससे पहले उसके पापा काम करते थे। बीमारी की वजह से बाद में उन्होंने उसे मेरे यहाँ लगा दिया था। उस पढ़ने का शौक़ था, तो मैंने उससे स्कूल ख़त्म करने के बाद आने को कह दिया था। अगर मैं उसे नहीं रखती तो उनका घर नहीं चलता। बिना काम के वह पैसे लेने को तैयार नहीं थे। हर वक़्त उसकी कोशिश यही रहती थी कि वह मुझे बढ़िया-से-बढ़िया खाना बनाकर खिलाए।

रानी मेरे ड्राइवर की बहन थी। उसके पति ने उसे छोड़ दिया था क्योंकि वह माँ नहीं बन सकती थी। तब वह उन्नीस साल की थी। तभी से वह मेरे घर में है। उसके होते हुए मजाल है घर में धूल का एक कण भी मिल जाए।

राज़ी को तो आप जानते ही हैं। हालाँकि हम दिल्ली से ही दोस्त थे। मगर यहाँ हम दोनों ही एक-दूसरे से पर्याप्त दूरी बनाकर रखते ताकि वह मेरे लिए काम कर सके। ये उसी की मर्ज़ी थी। जब मैं परेशान होती तो वह मुझसे बात करती थी। बड़ी बहन की तरह मेरा ख़याल रखती थी। एक साये की तरह मेरे आस-पास रहती ताकि मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो वह मेरे पास आ सके। पर कभी मेरे साथ बैठकर खाती नहीं थी। अपने मन की बात नहीं करती थी। मैं भी ये उसकी मर्ज़ी मानकर उससे कुछ कहती नहीं थी। वैसे तो वह कभी अपना जन्मदिन भी नहीं मनाती थी, मगर जब कसाब को फाँसी हुई थी उसने जश्न मनाया था। जब निर्भया के हत्यारों को पकड़ा गया तब उसने मंदिर में प्रसाद चढ़ाया था। जब लक्ष्मी एसिड अटैक में न्याय मिला तो उसने ख़ुद हम सबके लिए खाना बनाया था। जब समलैंगिकता क़ानून पारित किया गया तो वह पैदल चलकर सिद्धि विनायक तक गई थी मत्था टेकने।

मेरे मन में उसके लिए बहुत सम्मान था। एक तरह से उसी की वजह से फ़िल्मों की तरफ़ मेरे क़दम बढ़े थे। हमेशा वह मुझे मेरे काम पर ध्यान लगाने को प्रोत्साहित करती रहती थी। मैं जानती हूँ उसे कभी भी मेरा किसी को भी डेट करना पसंद नहीं था। उसे लगता था मर्द सिर्फ़ आख़िर में औरतों को दुख ही देता है। उसके ऐसा सोचने के पीछे क्या वजह थी उसने मुझे कभी नहीं बताया। वह मुझे हमेशा नंदिता दास की याद दिलाती थी।

कहाँ होंगे ये सब? मेरा घर तो सील कर दिया होगा। काश ये तीनों पुलिस के शक के घेरे से बाहर आ गए हों। काश इन्हें मेरी प्रॉपर्टी में से कुछ हिस्सा मिल जाता। मुझे अफ़सोस है

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

कि जाने से पहले मैं इनके लिए कुछ नहीं कर पाई। कितना अजीब है ना! ये तीनों भी उस वक़्त घर पर ही थे, तब भी कोई नहीं जान पाया कि मेरे साथ क्या हुआ। जैसे आरुषि और उनके यहाँ के नौकर का मर्डर हो गया था, मगर आरुषि के माँ बाप को कुछ पता ही नहीं चला था।

मुझे आसमान में दादा-दादी और बाबा नज़र आ रहे हैं। क्या ये मुझे लेने आए हैं? मरने के बाद ऐसा होता है क्या? क्या ये सिर्फ़ मेरा वहम है या मेरा दिल इन्हें देखने को कर रहा है इसीलिए ये मुझे दिखाई दे रहे हैं? इन्होंने अब तक दूसरा जन्म क्यों नहीं लिया? मेरा भी दूसरा जन्म नहीं होगा क्या? मैं अभी मरना नहीं चाहती थी। मेरा अभी तक ज़िंदगी से मन नहीं भरा था। ये ज़िंदगी तो मुझसे थोड़ी जल्दी नाराज़ हो गई। मुझे दोबारा जन्म लेना है। इस बार मीरा नहीं मीठी बनकर बॉलीवुड में अपना सिक्का जमाना है। ज़िंदगी को मुश्किल बनाकर नहीं ज़िंदगी को ज़िंदगी की तरह ही जीना है। ज़िंदगी को उसी की तरह देखना ही सबसे बड़ा पागलपन है। ये पागलपन इतना ख़तरनाक होता है कि हम इसे झेलने में असमर्थ होते हैं। इसीलिए ज़िंदगी कैसी होनी चाहिए उसके बारे में समाज हमें जो गाइडलाइन बनाकर देता है, हम उस पर सारी ज़िंदगी चलते रहते हैं। मुझे ज़िंदगी अपने असली रूप में मिली, लेकिन मैंने भी अपने फ़ितूर में इसको मुश्किल बनाने के चक्कर में इसे थोड़ा उलझा दिया। ज़िंदगी ही ज़िंदगी की रिहर्सल होती है। या तो इसे जीना सीख लो या इसे जी लो। जीना आसान है। जबसे हम पैदा होते हैं हमें बताया जाता है कब क्या करना है। सीखना मुश्किल है। सीखते हुए हमसे ग़लतियाँ भी हो सकती हैं और ग़लती सुधारने के लिए दूसरी ज़िंदगी नहीं मिलती। ये हम पर होता है कि हम क्या चुनते हैं। विकल्पों का होना ही इस बात का सबूत होता है कि हमें अपने चुनाव के लिए ख़ुद ज़िम्मेदार होना होगा। इसीलिए मैं अपनी ज़िंदगी के लिए कभी किसी को दोष नहीं देती। इसे जीना सीखने का चुनाव मेरा था। इसे मुश्किल बनाने का चुनाव भी मेरा था। कुछ ग़लतियाँ मुझसे भी हुई होंगी मगर इस बात का अफ़सोस भी नहीं है मुझे। मैंने मीरा बनकर अपना सपना जिया था। फ़िल्में छोड़ने का फ़ैसला मेरा ग़लत हो सकता है। मगर ग़लत ही सही मैंने अपने मन की की। हाँ अगर दूसरा जन्म होता है तो मैं कुछ बदलाव करके देखना चाहूँगी कि परिणाम कितना अलग होता है।

आप भी सोच रहे होंगे कि मैं भी क्या बेकार का सोचे जा रही हूँ। मगर सोचना ऐसे ही तो होता है। नब्बे प्रतिशत तो हम काम का सोचते ही नहीं हैं।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

ब्रेकअप

एक लड़का-लड़की एक ही नारियल से पानी पी रहे हैं। कपड़े और साज शृंगार से ऐसे लग रहा है जैसे अभी नयी-नयी शादी हुई हो। शादी हमेशा से मेरे लिए एक अजनबी-सा शब्द बना रहा। मुझे इस शब्द में कभी कोई आकर्षण महसूस नहीं हुआ। वैसे मैंने कभी इस बारे में सोचा भी नहीं था। एक बार एक रियलिटी शो में संदीप और मुझे साथ मेहमान बनाकर बुलाया गया था। वहाँ मुझसे पूछा गया था कि मैं और संदीप शादी कब कर रहे हैं।

"जी मेरा अभी संदीप से बोर होने का कोई इरादा नहीं है।" मैंने संदीप का हाथ पकड़ते हुए कहा। फिर उस होस्ट ने मेरी बात पर संदीप से कुछ कहने को कहा।

"बोर होते हुए भी जब हम एक-दूसरे के साथ पूरी ज़िंदगी गुज़ार लेते हैं तो समझो वही प्यार है।"

संदीप की इस बात पर सबने ख़ूब तालियाँ बजाई। फिर वह होस्ट मेरे जवाब के लिए मेरी तरफ़ देखने लगा। मैंने संदीप की तरफ़ देखा और कहा, "प्यार एक बहुत ही ओवररेटेड शब्द है। एक अफ़वाह है जो सिर्फ़ फ़िल्मों और किताबों में सच होती नज़र आती है। तुम और मैं इससे दूर ही अच्छे।"

फिर हमसे पूछा गया कि आप दोनों इतने अलग विचार रखते हुए भी साथ कैसे हैं।

"साथ होने के लिए किसी रिश्ते में होने या एक-दूसरे के विचारों का मिलना ज़रूरी नहीं है। बल्कि एक-दूसरे के विचारों को समझना और उनका सम्मान करना ज़रूरी है।"

संदीप ने मेरे इस जवाब पर मेरी तरफ़ देखा और मुस्कुराकर मुझे यह जता दिया था कि वह भी मेरी बात से सहमत है।

आठ सालों तक संदीप ने मुझसे न तो कभी अपने प्यार का इक़रार किया था और न ही कभी मुझसे शादी के लिए पूछा था। पर मैं जानती थी वह मुझसे अपने प्यार का इक़रार करना चाहता था। हमारे रिश्ते को एक नाम देना चाहता था। मेरे साथ एक परिवार बनाना चाहता था। मगर मेरी वजह से कुछ कहता नहीं था। मैं कई बार सोचती थी कि क्या मैं उसके लिए इतना भी नहीं कर सकती? फिर मैं सोचती कि अगर मैं उसके लिए करूँगी तो ये उस पर एक तरह का एहसान होगा, जो मैं करना नहीं चाहती थी। मगर मैं उसके साथ एक बच्चा चाहती थी। पर मैं बच्चे की बात करती तो शादी की बात उठती। और मैं भूलकर भी शादी की बात हमारे बीच नहीं लाना चाहती थी। वह शादी को मानता था, मैं नहीं। और फिर इस बात पर हमारे बीच कड़वाहट पैदा होनी शुरू हो जाती। फिर हमें एक-दूसरे से दूर होना पड़ता। मुझे शादी किए बिना बच्चा पैदा करने में कोई परेशानी नहीं थी। मगर इस निर्णय को लेते-लेते शायद हमारे बीच सब कुछ ख़राब हो जाता। कभी-कभी मुझे लगता था कि मैं कल का सोचकर अपने आज को ख़राब कर रही हूँ। पर अगर मेरे आज में मैं वह काम करती हूँ जो मुझे लगता है सही नहीं है, तो मेरा आज भी कैसे सही हो सकता है! हमारी सोच का हमारी ज़िंदगी पर गहरा असर होता है। इसके विपरीत जाने पर परिणाम अक्सर हमारे मनमाफ़िक़ नहीं होते। और मेरी सोच हमारे रिश्ते को कोई भी नाम देने के

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

विरोध में थी। लेकिन हादसे हमारी ज़िंदगी का हिस्सा होते हैं। हो वह जाता है जो अक्सर हम नहीं चाहते। ये फ़िल्मों से मेरे संन्यास लेने के एक साल बाद की बात है। मुझे मेरे प्रेगनेंट होने का पता चला। कुछ दिनों तक मुझे समझ ही नहीं आया, मैं संदीप को किस तरह बताऊँ। मुझे इसके बाद होने वाले परिणामों की चिंता थी।

उस दिन उसका जन्मदिन था। हम उसी के अपार्टमेंट में थे। उसे अँग्रेज़ी क्लासिक संगीत पसंद है। उस दिन भी उसने बीथोवन का संगीत चला रखा था। मैं सोफ़े पर बैठी हुई थी और वह मेरी गोद में सिर रखकर लेटा हुआ था। मेरे खुले बाल उसके गालों को छू रहे थे। वह मेरे गालों में उँगलियाँ फँसाकर उनसे खेल रहा था। अचानक से उसने मेरे चेहरे को अपने क़रीब लाकर मेरे कानों में धीरे से कहा, "Can you move in with me?"

"हम रोज़ ही तो मिलते हैं।"

"हाँ, मगर मैं रोज़ सुबह उठकर तुम्हें देखना चाहता हूँ। तुम्हें अपनी आदत बनाना चाहता हूँ।"

कहकर उसने मेरे चेहरे को फिर से अपनी हथेलियों में भरकर मेरे होंठों को हल्के से चूमा।

"आदत बनाने से ज़्यादा कुछ बोरिंग नहीं होता।"

"तुम इस तरह से क्यों नहीं देखती कि आदत चाहे जैसी भी हो वह ज़िंदगी भर साथ तो रहती है।"

उसकी बात सुनकर मेरे मन में अजीब-सी घबराहट हो रही थी। ये वह टॉपिक था जिस पर बात करना मैं हमेशा नज़रअंदाज़ करती थी।

मुझसे कोई जवाब न पाकर उसने कहा, "I love you"

मैं ये सुनकर चौंक गई।

"क्या हुआ? जवाब नहीं दोगी?"

"मेरा कुछ कहना ज़रूरी है?"

"मैं सुनना चाहता हूँ।"

"तुम्हें ये नहीं करना चाहिए था संदीप... सब ख़राब कर दिया तुमने।"

मेरा दिमाग़ पहले से ही बच्चे की बात को लेकर उलझा हुआ था। उसकी इस बात ने मुझे थोड़ा-सा ग़ुस्सा और दिला दिया था।

"क्या ख़राब कर दिया मैंने?"

वह उठकर बैठ गया।

"तुम जानते हो मुझे ये बात पसंद नहीं है। फिर भी?"

"हाँ जानता हूँ। मगर हमें साथ में आठ साल हो गए हैं। अब तक तो तुम समझ गई होगी, ये सब कहने-सुनने से भी हमारे बीच कोई फ़र्क़ नहीं आएगा।"

"जब कोई फ़र्क़ पड़ना ही नहीं था तो तुमने कहा ही क्यों?"

"क्या तुम मुझ पर भरोसा नहीं करती?"

"बात भरोसे की है ही नहीं। तुमने एक बार मुझसे कहा और अब तुम मुझसे सुनना चाहते हो। कल तुम मेरे लिए कुछ और करोगे और चाहोगे मैं भी तुम्हारे लिए करूँ।"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मैं उठकर खड़ी हो गई। मुझे इस तरह उखड़ा हुआ देखकर उसने मेरा हाथ अपने हाथ में लेकर कहा, "ऐसा कुछ नहीं था मेरे मन में। मैं बस उस ख़ुशी को महसूस करना चाहता था, जो मुझे तुम्हारे कहने से मिलती। अगर तुम्हें इतना बुरा लगा तो भूल जाओ जो भी मैंने कहा।"

"भूल जाने से क्या सब कुछ ठीक हो जाएगा! हम बहस कर रहे हैं, संदीप।"

मैंने अपना हाथ छुड़वाते हुए कहा। वह भी उठकर खड़ा हो गया।

"जब दो लोग साथ होते हैं तो उनके बीच ऐसी छोटी-मोटी बहस हो जाती है। ये नॉर्मल है, मीठी।"

"तुम जानते हो, संदीप, मुझे किसी भी फ़ीलिंग्स या रिश्ते को नाम देना पसंद नहीं है। उन्हें नाम देने का मतलब है उन्हें एक एक्सपायरी डेट दे देना। मैं हम दोनों को रोज़ मरते हुए नहीं देखना चाहती। अब जहाँ तुमने एक और क़दम बढ़ाया वहाँ मुझे तुमसे दूर होना होगा। और मुझे बस उसी बात की फ़िक्र है।"

"मैं जानता हूँ मीठी... यही डर दूर करने के लिए तो मैं हूँ।"

उसने मेरा चेहरा अपने दोनों हाथों में भरते हुए कहा।

"तुम क्यों कुछ करने के लिए मेरी ज़िंदगी में रहना चाहते हो? तुम बस तुम्हारे लिए रहो।"

"ठीक है मीठी... And I am sorry for hurting you."

उसके माफ़ी माँगने से मेरा मन पिघल गया और मैंने उसे बता दिया कि, "I am pregnant."

"What?"

ये बात सुनकर जैसे उसे कोई झटका लगा हो। बात झटका लगने वाली थी भी।

"मुझे दो हफ़्ते पहले ही पता चला।"

"और तुम मुझे अब बता रही हो?"

"मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था।"

"क्या?"

"यही कि अब क्या?"

"क्या अब? I am so happy. Congratulations!"

"Same to you."

मैं भी उसे ख़ुश देखकर एक मिनट को भूल गई कि हम कुछ देर पहले बहस कर रहे थे।

"Let's get married."

"Why?"

"हम पैरेंट्स बनने वाले हैं, मीठी।"

"तो हमें शादी कर लेनी चाहिए?"

"हमारे अपने लिए ना सही... मगर बच्चे के लिए हमें ये करना होगा, मीठी। तुम जानती हो सोसायटी ऐसे बच्चों को एक्सेप्ट नहीं करती।"

मुझे उसके शादी के लिए पूछने से ज़्यादा जो उसने शादी करने के लिए वजह दी थी उस पर ग़ुस्सा आ रहा था।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"एक्सेप्ट तो वो हमारा ऐसे साथ होना भी नहीं करती।"

"हमारी बात अलग थी, मीठी।"

"कैसे अलग थी! और तुम्हें कब से सोसायटी की फ़िक्र होने लगी! जैसे हम साथ हैं, वैसे हमारा बच्चा हमारे साथ क्यों नहीं हो सकता! चेंज तभी आएगा न, जब कोई पहल करेगा?"

हमारी बहस फिर से शुरू हो गई थी।

"मीठी, आज तक जैसा तुम चाहती थी मैं वैसा करता आया। क्या अब तुम मेरी बात नहीं मान सकती?"

"जैसा मैं कहती आई हूँ? क्या मतलब? तुम पहले से जानते थे मैं इन सबके बारे में क्या सोच रखती हूँ। और मैंने कभी तुम्हें मेरे साथ होने के लिए मजबूर नहीं किया।"

"हाँ, मगर मुझे लगता था मैं तुम्हें बदल दूँगा।"

उसकी आवाज़ में मायूसी सुनकर मेरे अंदर कुछ टूट-सा गया था।

"अगर तुम मुझे बदलने के ख़याल से मेरी ज़िंदगी में आए थे तो तुम कभी भी हम दोनों के साथ ईमानदार रहे ही नहीं, संदीप।"

ये कहते-कहते मेरा गला भर आया था।

"मीठी, मैं ये सब कुछ नहीं जानता। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ और तुम्हारे और हमारे इस बच्चे के साथ अपनी पूरी ज़िंदगी बिताना चाहता हूँ।"

"और मैं जो चाहती हूँ उसका क्या?"

"तुम्हारा शादी को लेकर डर बेवजह और बेकार है। देखना कुछ दिनों में तुम भी यही कहोगी।"

ये सुनते ही मैंने उससे अलग होने का मन बना लिया था।

"हमारा सफ़र बहुत लंबा हो गया संदीप। हमे यहीं रुक जाना चाहिए... वरना धीरे-धीरे हम एक-दूसरे की शक्ल भी देखना पसंद नहीं करेंगे।"

ये कहने के बाद मैंने उसकी आँखों में देखा। वह भी मुझे ही देख रहा था। कुछ देर तक ख़ामोशी हमारे बीच पसरकर हमें चुभती रही।

"तुम्हें ये कहते हुए ज़रा भी दुख नहीं हो रहा? तुम चाहती हो मैं तुमसे दूर हो जाऊँ?" उसने मेरी बाहों पर अपनी पकड़ कसते हुए कहा।

"तुम्हारा साथ मुझे अच्छा लगता है। मगर तुम मेरी आदत नहीं हो... मैं जा रही हूँ हम दोनों की इस ज़िंदगी से।"

"Just like that."

"Just like that."

"और बच्चा?"

"मेरा बच्चा है, मैं सँभाल लूँगी।"

"हमारा बच्चा है।"

"मैं तुम्हें कभी इससे मिलने से नहीं रोकूँगी। बस तब तक तुम मेरे सामने मत आना।"

ये कहकर मैं वहाँ से जाने लगी। उसने मुझे रोका।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"Please Sandip. Let me go."

तब तक मेरी आवाज़ रुआँसी हो गई थी और आँखें गीली। जब दो लोग अलग होते हैं तो वो सिर्फ़ दो लोग नहीं होते। उनके बीच गुज़री पूरी एक सदी होती है जो उनके अलग होते ही एक इतिहास बन जाती है। इस इतिहास को अगर एक भावना का नाम दिया जाए तो इसे उदासी कहा जा सकता है। इस उदासी का होना टाला नहीं जा सकता। जब भी यह इतिहास याद आएगा, उदासी साथ लाएगा।

मैंने संदीप को हमारे एक ख़ूबसूरत मोड़ पर छोड़ दिया था। अलग हम तब भी हुए मगर उस वक़्त जब हम एक-दूसरे के साथ ख़ुश थे। शादी करके अलग होते तो ज़िंदगी भर एक-दूसरे के लिए मन में कड़वाहट भरी रहती। मुझे वह मंज़ूर नहीं था।

उसके बाद मैं संदीप से फिर कभी नहीं मिली। संदीप और मेरे ब्रेकअप को भी ख़ूब मसाला लगाकर लोगों को बेचा गया।

बॉलीवुड के सबसे हॉट और प्यारे कपल के बीच दरार। कहा जा रहा है कुछ निजी कारणों की वजह से संदीप मित्तल और मीरा ने अलग होने का फ़ैसला ले लिया है। अचानक ऐसा क्या हुआ जो दोनों को ये क़दम उठाना पड़ा? पिछले आठ सालों से बिना किसी रिश्ते के ये दोनों दो दिल एक जान नज़र आया करते थे। फिर क्यों इन्हें ऐसा करना पड़ा? क्या इनके अलग होने के पीछे किसी तीसरे का इनकी ज़िंदगी में आना है? अगर ऐसा है तो ये तीसरा किसकी ज़िंदगी में आया? फ़िलहाल अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। हमने मीरा और संदीप दोनों से बात करने की कोशिश की मगर दोनों ने कुछ भी कहने से किया इनकार।

मगर मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। संदीप मुझसे मिलने की कोशिश करता रहा पर मैं उसे दरवाज़े से ही वापस लौटा देती थी। ऐसा भी नहीं था मुझे उससे कोई नाराज़गी थी, मगर अब मेरे पास उससे बात करने के लिए कुछ भी नहीं था। मैं उससे मिलकर उसके साथ बिताए वक़्त की याद को ख़राब नहीं करना चाहती थी। मैं उसे अपनी याद में सिर्फ़ मेरे साथ देखना चाहती थी, मुझसे अलग नहीं।

तीन महीने पूरे होते ही मैंने राज़ी के साथ मुंबई छोड़ दिया था। मेरे प्रेगनेंट होने की बात अब तक मीडिया को पता नहीं थी। डिलीवरी होने तक मैं ये बात उनको बताना भी नहीं चाहती थी। मेरे बच्चे के आने से पहले मैं हर तरह की चिंता से दूर हो जाना चाहती थी। इसीलिए हम राज़ी के शहर गंगटोक चले गए थे। जहाँ राज़ी की माँ उनके एक छोटे से घर में रहा करती थी। पर वह घर हम तीनों के लिए काफ़ी था। और सबसे अच्छी बात ये थी कि वह शहर की भीड़ भाड़ से थोड़ा अलग था। मैंने वहाँ के एक छोटे से मैटरनिटी होम में अपना रजिस्ट्रेशन भी करवा लिया था। उसी मैटरनिटी होम में राज़ी की माँ एक कुक के तौर पर काम करती थी। सब कुछ अच्छा था। अब मुझे इंतज़ार था तो बस अपने बच्चे के आने का। जब भी मुझे ये मेरे अंदर महसूस होता तो मुझे गर्व होता अपने औरत होने पर। मैंने इन नौ महीनों में किसी भी प्रोजेक्ट पर काम नहीं किया किया था। मुझे एक ट्रैवल शो होस्ट करने का प्रस्ताव मिल रहा था, जिसे मैं करना भी चाहती थी, मगर मैंने इनकार कर दिया था। वैसे भी मेरा मन बस मेरे बच्चे में अटका हुआ था। मैंने अपनी दादी की दी हुई

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

गुड़िया को भी कहीं पैक करके रख दिया था। मुझे मन-ही-मन लगता था मेरे घर मेरी एक जीती जागती गुड़िया ही आएगी। मैं यहाँ तक सोचने लगती कि जब ये बच्ची बड़ी होगी मैं इसे वही करने दूँगी जो ये चाहती होगी। मैं इसे माँ होने के रिश्ते में नहीं बाँधूँगी। मैं इसे अपने लिए कभी नहीं रोकूँगी। न ही उसके साथ मेरा माँ-बेटी का रिश्ता मुझे अपने ऊपर कभी बोझ लगेगा। क्योंकि इसको इस दुनिया में लाने का फ़ैसला सिर्फ़ मेरा है। ये मुझ पर थोपा नहीं गया है। इसे दुनिया ने नहीं बनाया था। इस रिश्ते को नाम इस दुनिया ने नहीं दिया था। ये सोचते-सोचते मेरे हाथ मेरे पेट पर यही महसूस करते रहते कि इसका हाथ कहाँ है, इसका पैर कहाँ हैं। मैंने कभी अपना बच्चा होने के बारे में नहीं सोचा था। यह नया एहसास बिलकुल वैसा ही था जैसे शायद मैंने तब महसूस किया हो जब मैंने पहली बार इस दुनिया में आँखें खोली थीं। मैं शिमला में अक्सर देखा करती थी कि जब भी कोई औरत माँ बनने वाली होती थी, वह बच्चे के लिए मौज़े, स्वेटर, टोपी इत्यादि बुना करती थी। मुझे ये सब करना नहीं आता था। और फिर मुंबई में इतनी ठंड पड़ती भी नहीं थी। मगर मैं वह ख़ुशी महसूस करना चाहती थी जो उन फंदों को बुनते हुए उनके चेहरे पर होती थी। इसीलिए गूगल करके मैंने भी वह सब चीज़ें बुनी जो इससे पहले कभी नहीं बनाई थी। ये करते हुए मैं बहुत ख़ुश थी। फिर वह दिन आ गया जिस दिन मेरे बच्चे ने मुझसे अलग अपनी एक पहचान बनाने के लिए इस दुनिया में अपना पहला क़दम रखना था। मगर उसने इस दुनिया में आँखें ही नहीं खोलीं। वह मेरी गोद में आने से पहले ही मुझे छोड़कर चली गई थी। मुझे बताया गया डिलीवरी से पहले ही वह जा चुकी थी। मेरी बेटी से मेरा एक रिश्ता जुड़ने वाला था और उसने मुझे उससे पहले ही छोड़ दिया था। रिश्ते मुझे कभी रास ही नहीं आए। मैंने उसका चेहरा भी नहीं देखा था। मुझसे जाते हुए लोग देखे नहीं जाते थे।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

विनय कुमार

रात हो गई। ये तीसरी रात होगी जो मैं इस चौपाटी पर गुज़ारूँगी। मेरा मन अब इस दुनिया से उचटने लगा है। बस जल्द ही मेरे सवाल का जवाब मिल जाए तो मैं इस दुनिया से पलायन कर जाऊँ। ये कुत्ता मेरी तरफ़ देख रहा है। शायद ये मुझे देख पा रहा है। इसका भी तो कोई नाम होगा! जब मैं इस दुनिया से मरे हुए लोगों की दुनिया में जाऊँगी तब क्या वहाँ कोई मेरा नाम जानता होगा? या सिर्फ़ वह मुझे इंसान कहकर बुलाएँगे, जैसे मैं इसे कुत्ता कहकर बुला रही हूँ? मुझे अब उस दुनिया का सोचकर भी थ्रिल महसूस हो रहा है।

विनय कुमार ने ऐसा क्यों कहा कि मैंने उसके बेटे से शादी के लिए हाँ कर दी है? हाँ, मैंने कुछ महीने पहले हाँ किया था। मगर जिस दिन मेरी मौत हुई थी उस दिन पार्टी में जाने से पहले मैंने चुनाव लड़ने और उसके बेटे से शादी करने, इन दोनों ही बातों से इनकार कर दिया था। उस दिन उसका बेटा बहुत भड़का था मुझ पर। उसका बस चलता तो वह मुझे वहीं दबोच लेता। मगर विनय कुमार ने मुझे उस दिन बड़ी विनम्रता से जाने दिया था। क्या वे मुझे पार्टी में कोई ज़हर दे सकते हैं? मेरी ड्रिंक तो स्पाइक की गई थी।

मैं कभी इस राजनीति के चक्कर में पड़ना नहीं चाहती थी। ये मेरी बच्ची की मौत के बाद की बात है। 2017 चल रहा था। एक दिन विनय कुमार के बेटे उदय कुमार ने मुझे अपने जन्मदिन पर मेरा एक डांस आइटम रखने का प्रस्ताव भेजा। उदय से मेरी पहली बार मुलाक़ात कुछ साल पहले मेरी एक फ़िल्म के प्रीमियर पर हुई थी। मैं अपने फ़ैंस को ऑटोग्राफ़ दे रही थी। वह भी मेरे पास आया और मुझसे बोला, "हमें ऑटोग्राफ़ मिलेगा क्या?"

उसके क़रीब आते ही उससे आती सिगरेट और अल्कोहल की गंध उसके होंठों पर आई कुटिल मुस्कान के साथ मिलकर उसकी एक बहुत ही अनवांछित-सी छवि बना रही थी। फिर भी मैंने अपने मन में आए इन विचारों को एक तरफ़ रखते हुए कहा, "जी बताइए, कहाँ देना है?"

पहले तो वह हँसा। फिर उसने अपने शर्ट के ऊपर के तीन-चार बटन खोल दिए।

"अब हम कोई काग़ज़ या पन्ना तो साथ लेकर घूमते नहीं हैं। यहाँ पर दे दीजिए।" उसने अपनी खुली छाती की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"Excuse Me!"

प्रेस वालों के बीच में कोई तमाशा न बने इसलिए मैं वहाँ से चुपचाप जाने लगी। उसने मेरा हाथ पकड़कर मुझे रोका और बोला,

"आप जानती नहीं हैं मैं कौन हूँ, वरना आप इस तरह मुझे इग्नोर नहीं करतीं।" उसने मुझ पर अपनी पहचान का रौब जमाने की कोशिश की।

"मैं क्या करती हूँ इस बात का मेरे आपको जानने से कोई मतलब नहीं है।" मैंने अपना हाथ छुड़वाते हुए कहा।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मेरी इस बात पर वह भड़क गया और अपने बाप की धौंस दिखाते हुए बोला, "मेरे पापा एक बहुत बड़े पॉलिटिशियन हैं। तेरी औक़ात ही नहीं जो तू मुझसे इस तरह से बात करे।"

"हाँ, तो जाकर कोई अपनी औक़ात वाला ढूँढ़ो। यहाँ तमाशा क्यों कर रहे हो?" उसके इस तरह मुझसे बात करने से मुझे भी ग़ुस्सा आ गया था।

प्रेस वाले भी अब तक हमारे आस-पास इकट्ठा हो चुके थे। मामला थोड़ा गंभीर हो चुका था क्योंकि उदय मुझे अनाप-शनाप बके जा रहा था। मैं अपने बॉडीगार्ड के साथ वहाँ से निकल गई। सोशल मीडिया पर इस घटना की वीडियो भी वायरल हो गई थी। अगले दिन सब अख़बारों में इस घटना का ज़िक्र था। कोई बड़ा स्कैंडल न बन जाए इसलिए विनय कुमार ने उस वक़्त टीवी पर और प्रेस वालों के सामने अपने बेटे के व्यवहार की सार्वजनिक रूप से मुझसे माफ़ी माँग ली थी। उसके बाद उदय कुमार ने मुझे फिर कभी तंग नहीं किया था। मगर जब मुझे उसके जन्मदिन पर डांस आइटम करने का प्रस्ताव मिला तो मैं चौंक गई थी।

इतने सालों बाद आख़िर अब यह चाहता क्या था? प्रस्ताव के साथ उसने यह संदेश भी भेजा था कि वह अतीत में अपने किए के लिए शर्मिंदा है और चाहता है मैं उसका यह प्रस्ताव स्वीकार कर लूँ। मैं जो क़ीमत रखूँगी वह मुझे देगा, बस मेरा जवाब हाँ होना चाहिए। मैंने फ़ौरन ना कर दी। इसके बाद वह थोड़े-थोड़े दिनों में मुझे किसी-न-किसी चीज़ के लिए बुलाता रहता। जैसे कभी लंच के लिए, तो कभी डिनर के लिए। कभी अपने दोस्त की पार्टी के लिए, तो कभी कहीं छुट्टियाँ मनाने के लिए। मैं हर बार ना करती रही। इस तरह एक साल बीत गया। फिर एक दिन मुझे विनय कुमार की तरफ़ से एक प्रस्ताव मिला जिसके अनुसार मुझे उसकी चुनाव रैली के लिए उसकी पार्टी का चेहरा बनना था। मैंने उसके लिए भी मना कर दिया। कुछ दिनों बाद ख़ुद विनय कुमार मुझसे मिलने आया।

"नमस्कार, मीरा जी।"

मैंने भी सिर झुकाकर उनके नमस्कार का जवाब दिया।

"देखिए अतीत में जो भी हुआ हमें उसे भूलकर एक नयी शुरुआत कर लेनी चाहिए।"

"मैं आपका मतलब नहीं समझी।"

"हम चाहते हैं, आप हमारी पार्टी की तरफ़ से किसी एक क्षेत्र का चुनाव लड़ें।"

"माफ़ कीजिएगा विनय जी, मेरा राजनीति में आने का कोई इरादा नहीं है।" मैंने साफ़ इनकार करते हुए कहा।

"इरादे का क्या है वह तो बन जाता है। बस वजह होनी चाहिए।"

"मेरे पास कोई वजह भी नहीं।"

"जनता की सेवा करने से बड़ी क्या कोई वजह होती है। अब तक आप उनका मनोरंजन करती आई हैं। अब थोड़ी सेवा भी कर लें। उम्र भी हो चली है आपकी। और क्या काम करेंगी? लोगों के दिलों में बसी रहें इसीलिए आपको राजनीति में आना चाहिए।"

विनय कुमार हार मानने को तैयार ही नहीं था।

"देखिए, आपको मेरी उम्र और मेरे काम की चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है। शुक्रिया आपका कि आपने मुझे अपनी पार्टी के क़ाबिल समझा। लेकिन मेरा जवाब फिर

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

भी ना है।”

यह कहकर मैं अपनी कुर्सी से उठकर खड़ी हो गई और उसके सामने हाथ जोड़कर उसे चले जाने का इशारा किया।

“क्या चाहती हो तुम? हम तुम्हारी प्रेग्नेंसी की ख़बर मीडिया को बता दें?”

उसे प्रेगनेंसी के बारे में पता है, यह जानकर मुझे बड़ी हैरानी हुई।

“आप चाहें तो ऐसा कर सकते हैं। मैंने यह बात सबसे छुपाई थी क्योंकि मैं शांति से अपना बच्चा इस दुनिया में लाना चाहती थी। न कि इसीलिए कि मुझे इस बात की शर्मिंदगी थी। आप इस बात से मुझे ब्लैकमेल नहीं कर सकते।”

“तुम्हारे और संदीप के बीच होने वाले सेक्स के वीडियोज हम वायरल करने और पॉर्न वेब साइट्स पर डालने की बात कहें, तब भी नहीं?”

यह सुनकर मुझे घबराहट होने लगी थी। ऐसे तो संदीप और मेरा रिश्ता जग जाहिर था, मगर हमारे बीच में हुए सेक्स के वीडियो घर-घर में लोग चटखारे लेते हुए देखें यह मुझे मंज़ूर नहीं था। अपनी बात मनवाने के लिए मेरी एक कमज़ोरी विनय कुमार के हाथ लग गई थी। उसने बताया कि वह तब से ही मुझ पर नज़र रख रहा था, जब से उसके बेटे के साथ मेरी वह घटना हुई थी। छुट्टियाँ मनाने के लिए जब भी मैं और संदीप किसी होटल में जाते तो वह वहाँ पर अपनी सेटिंग करके हमारे कमरे में कैमरा इंस्टॉल करवा देता था। अब तक वह एक उचित समय का इंतज़ार कर रहा था। उसने मुझे धमकाते हुए कहा कि मुझे उसकी पार्टी के लिए चुनाव भी लड़ना होगा और उनके बेटे से शादी भी करनी होगी। वह बेटा जिसकी दो शादी पहले ही हो चुकी थी। पहली बीवी मर गई थी, जिसकी मौत आज तक एक रहस्य बनी हुई है। दूसरी से तलाक़ हो गया था। जिसमें गिनने को एक भी ख़ूबी नहीं थी। सोचने के लिए उसने मुझे दो दिन का वक़्त दिया था।

ये बात साल 2018 के अंत की है। पुलिस और सोशल मीडिया का सहारा लेती भी तो ज़्यादा-से-ज़्यादा क्या होता! वह कुछ दिन चुप बैठ जाते और मैं किसी दिन कहीं मरी हुई पड़ी होती। मैं इस जाल में फँस चुकी थी। मगर मैं बिना लड़े हार नहीं मानना चाहती थी। एक बार मैंने सोचा कि मुझे संदीप को इस बारे में बता देना चाहिए। मगर मुझे संदीप को इन सब में घसीटना ठीक नहीं लगा। मेरे साथ-साथ वह भी मुश्किल में पड़ जाता।

उनकी धमकी से मेरा दिमाग़ भी सटक चुका था। मैंने सोचा कि अब मैं इन्हीं की लंका में घुसकर वहाँ आग लगाऊँगी। शायद ज़्यादा कुछ कर नहीं पाती। हाँ, इतना भरोसा था ख़ुद पर कि इतनी चोट तो ज़रूर दे सकती हूँ कि इनकी लंका लोगों के शक के घेरे में आ जाए। इन्हें अपनी छवि की बहुत परवाह होती है न! मुझे उस वक़्त अपनी इज़्ज़त की भी परवाह नहीं रही थी। वैसे भी ये मुझे शांति से जीने नहीं दे रहे थे। मैंने दो दिन बाद उसके पास जाकर अपनी सहमति दे दी। इस शर्त के साथ कि शादी चुनावों के बाद होगी और तब तक ये बात मीडिया में नहीं आनी चाहिए। उसने मेरी बात मान भी ली थी।

मेरी वजह से विनय कुमार की पार्टी को अच्छी-ख़ासी पब्लिसिटी मिली थी। वह इस बात से बहुत ख़ुश था। लोगों ने मेरी राजनीति में आने वाली बात का दिल से स्वागत किया था। आने वाले अगस्त में चुनाव होने थे। मेरा ज़्यादातर वक़्त कहीं-न-कहीं भाषण देने या किसी

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मीडिया वाले को इंटरव्यू देने में बीत रहा था। इच्छा न होते हुए भी मुझे यह सब करना पड़ रहा था, जिसकी वजह से मुझे अंदर-ही-अंदर कोफ़्त होनी शुरू हो गई थी।

एक दिन विनय कुमार ने अपनी इसी ख़ुशी का जश्न मनाने के लिए मुझे अपने घर बुलाया। वहाँ उदय कुमार के साथ-साथ उनकी पार्टी के कुछ और भी कार्यकर्ता मौजूद थे। वहाँ कुछ लड़कियों को भी बुलाया गया था, जो नाचकर सबका मन बहला रही थीं। विनय कुमार भी एक लड़की के साथ मदमस्त होकर नाच रहा था। मैंने चुपचाप सबकी नज़र बचाकर, इस नाच का वीडियो बना लिया था। फिर उदय कुमार ज़बरदस्ती मुझे अपने साथ डांस करने ले गया। बीच-बीच में मौक़ा लगते ही वह अपने हाथों से मुझे कहीं-न-कहीं छू देता। उस वक़्त मुझे उससे ज़्यादा ख़ुद से नफ़रत हो रही थी। जब मुझसे यह सब और झेला नहीं गया, तो मैंने विनय कुमार से घर जाने की इजाज़त माँगी। उसने दे भी दी, क्योंकि उसकी उस महफ़िल की ख़ुशी की वजह उस दिन मैं ही थी।

जब मैं घर लौट रही थी तब मैंने संदीप को एक लड़की के साथ किसी बुक स्टोर से बाहर निकलते हुए देखा। हमारा संबंध टूटने के बाद ये पहली बार था, जब मैंने उसे देखा था। मैंने तो उसके कॉलम भी पढ़ने बंद कर दिए थे। मगर उसे किसी और लड़की के साथ देखकर मुझे अच्छा नहीं लगा था। मैं नहीं जानती थी कि वह लड़की कौन थी, उनके बीच रिश्ता क्या था। बस मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मैं घर पहुँची तो मेरे उतरे हुए चेहरे को देखकर राज़ी ने पूछा, "कुछ हुआ है क्या?"

"नहीं।"

"तुम जानती हो मैं तुम्हारा झूठ पकड़ लेती हूँ, अब बोलो क्या हुआ?"

"अभी घर आते हुए मैंने संदीप को किसी लड़की के साथ देखा।"

राज़ी के ज़ोर देने पर मैंने उसे बताया।

"तुम अब भी याद करती हो उसे?"

"पता नहीं। पर उसे अपने अलावा किसी और के साथ देखकर अच्छा भी नहीं लगा।"

"मीरा, मान क्यों नहीं लेती कि तुम भी उससे प्यार करती हो?"

"हर चीज़ को कोई नाम देना ज़रूरी है क्या? और अब मान लेने से बदल भी क्या जाएगा!"

"तुम और संदीप फिर से एक साथ हो सकते हो। एक बार तो अपनी ज़िद छोड़कर देखो।"

राज़ी ने मुझे समझाते हुए कहा।

"कम-से-कम तुम तो मुझे समझने की कोशिश करो। ये मेरी ज़िद नहीं है। इस बात में मैं बिलीव करती हूँ। कमरे का दरवाज़ा खुला हो तो शायद कोई उस एक कमरे में अपनी पूरी उम्र गुज़ार भी दे मगर वही दरवाज़ा अगर बंद हो तो इंसान साँस लेने के लिए एक छोटे से झरोखे को तरसने लगता है। रिश्ते पहचान मिलते ही हमारे लिए वो दरवाज़ा हमेशा के लिए बंद कर देते हैं। और देखो जब तक प्यार और शादी जैसे शब्द हमारे बीच नहीं आए थे तब तक हमने एक साथ आठ साल गुज़ार दिए। जैसे ही इनकी बात उठी हम अलग हो गए। अब बोलो क्या मैं ग़लत सोच रही हूँ?"

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"ये तुमने ज़बरदस्ती का डर मन में बिठा रखा है। और जैसे तुम चाहती थी संदीप तुम्हारी बात मान ले वैसे ही संदीप चाहता था तुम उसकी बात मान लो। फिर संदीप कहाँ ग़लत था!"

ये कहते हुए राज़ी की आवाज़ थोड़ी तेज़ हो गई थी।

"मैंने कभी नहीं कहा वह ग़लत था। उसका अपना एक नज़रिया है, सोच है और मैं इस बात की रिस्पेक्ट करती हूँ। पर मैं ख़ुद को नहीं बदल सकती।"

"चाहे ख़ुद को कितनी ही तकलीफ़ क्यों न हो?"

"ख़ुद को बदलकर ज़्यादा तकलीफ़ होती। और वैसे भी अब इन सब बातों को करने का कोई मतलब नहीं। मैंने तुम्हें बताया नहीं लेकिन मैं सिर्फ़ चुनाव ही नहीं लड़ने वाली बल्कि विनय कुमार के बेटे से शादी भी करने वाली हूँ।"

यह सुनकर राज़ी भड़क गई।

"मीरा, चुनाव लड़ने तक सही था। मगर ये शादी, क्यों?"

"राज़ी, इसके अलावा मेरे पास कोई चारा नहीं था। पर तुम चिंता न करो। मैं कोई-न-कोई रास्ता निकाल लूँगी।"

मैंने राज़ी को शांत करते हुए कहा। मगर अंदर-ही-अंदर थोड़ी-सी डरी हुई तो मैं भी थी।

"मीरा, तुम ख़ुद को कुछ ज़्यादा ही ओवरइस्टिमेट नहीं कर रही? तुम्हें लगता है तुम उन नेताओं से भी लड़ लोगी?"

"शायद नहीं लड़ पाऊँ। मगर ऐसे हार भी नहीं मानूँगी। वैसे भी अब खोने को मेरे पास कुछ नहीं है।"

राज़ी मेरा जवाब सुनकर बिना कुछ कहे ही कमरे से चली गई थी। मगर मैं जानती थी उसे मेरी ख़ुद को ख़तरे में डालने वाली बात पसंद नहीं आई थी। और उसके जाते ही अचानक से मेरा इमोशनल ब्रेकडाउन हो गया। पता नहीं इसकी क्या वजह थी। संदीप मित्तल या विनय कुमार और उसका बेटा? इतना सब कुछ मेरी ज़िंदगी में घटा पर मैंने एक आँसू नहीं बहाया था। शायद वही दर्द अब आँखों से बह जाना चाहता था। कुछ दर्द कभी मरते नहीं हैं। वो ज़िंदा ही हमारे ज़ेहन में कहीं छिपे बैठे रहते हैं। फिर एक दिन जब उनकी बेचैनी हद से बढ़ जाती है तो एक सोए हुए ज्वालामुखी की तरह अचानक से लावा बनकर फूट पड़ते हैं, जिसके निशान हमारे पूरे शरीर पर देखे जा सकते हैं। मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा था। मुझे थकावट महसूस होने लगी थी। ये एक ऐसा ही पल था जब हमें महसूस होता है कि लाख कोशिश करने के बाद भी हमसे वह चीज़ सिर्फ़ दूर ही जाती जा रही है जिसे पाने के लिए हमने अपनी पूरी ज़िंदगी लगा दी। मैं अपनी ज़िंदगी को मुश्किल बनाते-बनाते कहीं-न-कहीं ख़ुद से हारती जा रही थी। जबकि ज़िंदगी का सफ़र तो ख़ुद के और क़रीब होने के लिए ही तो जिया जाता है! मुझे सब कुछ ख़त्म होता नज़र आ रहा था। मेरी सारी उम्मीदें, सारी ख़ुशी, सारी बेचैनी, जीने की इच्छा, मेरा ख़ुद का साथ मेरी बच्ची की तरह मुझे छोड़ता नज़र आ रहा था। उस दिन मैं बहुत देर तक तकिये में मुँह छुपाए रोती रही। राज़ी शायद बाहर खड़े होकर मेरा रोना सुन रही थी, क्योंकि मैं दरवाज़े पर किसी के क़दमों की चाप सुन सकती थी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

अगले दिन भी मैं अपने कमरे से बाहर तक नहीं निकली। राज़ी बार-बार आती रही मेरा हाल चाल पूछने, मुझे खाने के लिए बुलाने, मगर मैंने दरवाज़ा नहीं खोला।

उसकी अगली सुबह जैसे मेरे अंदर के अँधेरे को अपने उजाले से भरने आई थी। कुछ सुबह होती ही इसीलिए हैं ताकि वह हमें अपनी जादू की झप्पी दे सकें और हमारे मन में ज़िंदगी के प्रति फिर से ज़िंदगी फूँक सकें। मैं बहुत तरो-ताज़ा महसूस कर रही थी। मैंने सोच लिया था कि अब मैं अपनी ज़िंदगी सिर्फ़ ख़ुद को ख़ुश करने के लिए जिऊँगी। कोई नियम, कोई नीति अब नहीं होगी। ज़िंदगी के बहाव के साथ बहती जाऊँगी। जिस पल जो महसूस होगा, बस वही करूँगी। किसी एक सोच से दूर जाने के लिए दूसरी सोच में ख़ुद को अब क़ैद नहीं करूँगी। मुझे किसी को बर्बाद नहीं करना, न ही किसी से बदला लेना है। जो होगा देखा जाएगा। अब मैं सिर्फ़ वही करूँगी जो मुझे करना अच्छा लगता है। जैसे किताबें पढ़ना, ट्रैवल करना, इतिहास को और क़रीब से जानना, फ़िल्में देखना। आज तक किसी जंगल की सैर नहीं की। अब उसके लिए जा सकती हूँ। मैंने ये भी सोच लिया था कि मैं अपना ये बड़ा-सा घर बेच दूँगी। यहाँ से कहीं दूर चली जाऊँगी। शिमला नहीं तो किसी और पहाड़ी इलाक़े में जाकर रहने लगूँगी। अचानक से मुझे पहाड़ों की याद आने लगी थी। राज़ी, रानी और राजीव को भी छुट्टी दे दूँगी। अब ख़ुद के साथ अकेले रहूँगी। ये सब सोचते-सोचते दोपहर हो गई थी। जब हम ज़िंदगी की शुरुआत नये पन्नों से करने की ठान लेते हैं तब हम ख़ुद से वादा करते हैं कि अब जो इन पन्नों पर लिखा जाएगा वह अच्छा वक़्त ही होगा। और उस वादे को पूरा करने के लिए हम अपनी ज़िंदगी का हर पल ख़ुशनुमा बनाने में जुट जाते हैं। हर नया पन्ना अपने-आप में एक अवसर होता है एक नयी कहानी रचने का। अगर क़लम पकड़ने वाले हाथों की सोच इस अवसर को एक सकारात्मक प्रकाश में देखें तो कहानी के सफ़र को दिलकश बनाने से कोई नहीं रोक सकता।

मैं तैयार होकर किसी को कुछ बताए बिना घर से बाहर निकल गई थी और सीधा विनय कुमार के पास जाकर उसकी दोनों बातें मानने से इनकार कर दिया था। साथ ही उसे ये धमकी भी दी थी कि अगर मुझे कुछ भी हुआ तो इसका सीधा शक उन लोगों पर ही जाएगा, क्योंकि मैंने एक ऑटोमैटिक ईमेल सेट करके छोड़ा हुआ है जिसमें उसके मुझे धमकाने और उससे मेरी मुलाक़ातों की वीडियो रिकॉर्डिंग्स हैं। मैं हर दिन उसे रीसेट करती हूँ। अगर मुझे कुछ हो गया तो वह ईमेल मीडिया तक पहुँच जाएगा। हालाँकि मेरे पास ऐसा कोई सबूत नहीं था मगर फिर भी ये डर कुछ समय के लिए ही सही उसे मुझसे दूर रखता। अपनी इस बात का विश्वास दिलाने के लिए मैंने उसको उस दिन उसके नाच का बनाया वीडियो भी भेज दिया था, जिसे देखकर उसके होश उड़ गए थे। जिस दिन यह हुआ उसी रात को मेरी मौत हो गई थी। इससे ज़्यादा उस दिन और क्या ख़ास हो सकता था!

इतना सब होने के बाद भी उसने अगले दिन मीडिया को बयान दिया कि मैंने उसके बेटे से शादी के लिए हाँ कर दी। उसे मेरी धमकी से भी डर नहीं लगा? कहीं उसने अब भी किसी को मुझ पर नज़र रखने के लिए तो नहीं छोड़ा हुआ था? कहीं मेरे घर में कोई कैमरा तो नहीं लगाया हुआ था? कहीं वह कुछ कवर-अप करने की कोशिश तो नहीं कर रहा?

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मुझे मरवाने के लिए उसका मेरे सामने होना ज़रूरी तो नहीं है। वह मुझे कभी भी कहीं भी मरवा सकता है। वह मेरे ड्राइवर को ख़रीद सकता है। क्या वह राज़ी, रानी, और राजीव को भी ख़रीद सकता है? पुलिस को मेरे फ़ोन पर वह वीडियो भी मिल गया होगा। क्या पुलिस ने विनय कुमार को इस बात की सूचना दी होगी? क्या पुलिस भी विनय कुमार के इशारों पर नाच सकती है? क्या विनय कुमार ही मेरा क़ातिल है?

उफ़्फ़ ये यादें और अतीत!

मैं जब कभी लोगों को आते-जाते देखती हूँ तो मैं यही सोचती हूँ कि इन लोगों की ज़िंदगी कैसी होती होगी। क्या हादसे इनकी ज़िंदगी का भी एक अहम हिस्सा होते होंगे? मेरी तो ज़िंदगी में तो एक हादसा ख़त्म नहीं होता था कि दूसरा पहले होने को तैयार बैठा होता था। मगर मुझे अपनी ज़िंदगी से कुछ ज़्यादा शिकायतें नहीं हैं। बस इतनी कि मुझसे जल्दी दूर हो गई। वरना मेरा सफ़र बड़ा ही रोमांचकारी था। ठीक है इसके अपने कुछ दुख थे पर वह किसकी ज़िंदगी में नहीं होते! मेरे में बस थोड़े ज़्यादा थे। शायद ज़िंदगी देने वाले को मुझ में दुख झेलने की कुछ ज़्यादा ही क्षमता दिखाई दी हो। या फिर ज़िंदगी का मुझ पर इतना उधार बढ़ गया था कि उसने उसे वसूलने के लिए मुझे मौत को बेच दिया हो। पहले पता होता तो ये पूछ ही लेती। आधी उम्र तो गुज़र गई तेरा कर्ज़ चुकाने में ऐ ज़िंदगी! चल अब बता ही दे कितना बक़ाया बाक़ी है?

मुझे शिकायत है तो अपनी मौत से। इस तरह आई कि मुझसे आमना-सामना भी नहीं किया। और कायरों की तरह मुझे चुपचाप ले गई। मौत देने वाले से मुलाक़ात हुई तो पूछूँगी ज़रूर कि ऐसी भी क्या जल्दी थी! मुझे मेहमाननवाज़ी का मौक़ा तो दिया होता! किसी का ऐसे अपहरण करके ले जाना एक दंडनीय अपराध है। मगर मौत को सज़ा कौन दे!

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

क़ातिल कौन?

सुबह का संसार फिर से शुरू हो गया। ये मेरी मरने के बाद तीसरी सुबह है। जिस ज़िंदगी को जीने में मुझे चालीस साल लगे, उसे मैंने पिछली तीन रातों और दो दिनों में दोबारा जी लिया। जिसे गुज़रने में इतना वक़्त लगा, वह कुछ सिक्कों की तरह एक मुट्ठी में आ गई। उम्मीद है आज मेरा यहाँ आख़िरी दिन हो।

रोज़ाना मुंबई शहर की इस दुकान पर खड़े होकर ख़बर देखना मेरे लिए ऐसा हो गया जैसे सुबह उठकर ब्रश करना।

एंकर: सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हो रही है, जिसमें एक पति-पत्नी दावा कर रहे हैं कि जब 2012 में मीरा की किडनैपिंग हुई थी, वह किडनैपिंग मीरा ने ख़ुद करवाई थी। उनका कहना था कि उन्हें थोड़ी बोरियत महसूस हो रही है इसीलिए वह कोई स्कैंडल करना चाहती हैं। जिसके लिए उन्होंने उन पति-पत्नी को दस लाख रुपये भी देने का वादा किया था ताकि वो अपने बच्चे के कैंसर का इलाज करा सकें। मगर उन्होंने अपना वादा पूरा नहीं किया था। मीरा ने सिर्फ़ उन्हें अपने पहने हुए गहने दिए थे जिनकी क़ीमत दो या तीन लाख से ज़्यादा की नहीं थी। वह आदमी नारायण शास्त्री के यहाँ माली का काम करता था। जब यह बात उन्होंने शास्त्री जी को बताई तो उन्होंने यह कहकर उन दोनों को चुप करवा दिया था कि वह एक लड़की को दुनिया वालों के सामने बदनाम नहीं करना चाहते। इस बात से अब लोगों के मन में भी मीरा के दिमाग़ी संतुलन को लेकर शक पैदा होने लगा है।

शास्त्री जी के लिए मुझे हमेशा बुरा लगता रहा। मगर वह इस तरह मौक़े का फ़ायदा उठाकर उसमें झूठ का तड़का लगाकर यूँ छक्का मारेंगे, यह मैंने कभी नहीं सोचा था। मगर मेरी किडनैपिंग का सच इन्हें पता कैसे चला? मेरे और इन दोनों पति-पत्नी के अलावा तो कोई नहीं जानता था। इन दोनों पति-पत्नी ने भी बताया, तो क्यों बताया?

एंकर: मीरा की मौत के मामले में एक सनसनीखेज़ खुलासा। पुलिस का मानना है कि मीरा ने आत्महत्या की है। इस बात को साबित करने के लिए उनके पास कुछ सबूत भी हैं। पुलिस के मुताबिक़ मीरा के शरीर में जो ज़हर पाया गया है, वह कुछ दर्द निवारक दवाइयों और बेलेडोना नाम की एक जड़ी-बूटी को मिलाकर बनाया गया था। पुलिस ने ये भी बताया कि इस जड़ी-बूटी का प्रयोग भारत में करना निषेध है। उनके क्रेडिट कार्ड की जाँच से पता चला कि उन्होंने कुछ दिन पहले एक आदमी के अकाउंट में कुछ पैसे जमा कराए थे। उस आदमी के बारे में जब पूछताछ की गई तो सामने आया कि वह आदमी दिल्ली में आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियाँ बेचने का धंधा करता है। मीरा विज्ञान विषय की एक विद्यार्थी रह चुकी थीं और वह एक समय पर डॉक्टर भी बनना चाहती थीं। हो सकता है उन्हें इस जड़ी-बूटी के इस तरह से उपयोग करने की कोई जानकारी हो। उनके घर की लाइब्रेरी में एक किताब भी पाई गई है जो जड़ी-बूटियों से घरेलू उपचार कैसे किया जाए के ऊपर है। हालाँकि उसमें इस तरह के ज़हर का कोई ज़िक्र नहीं। मगर सारे सबूत इसी तरफ़ इशारा

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

करते हैं कि ये एक आत्महत्या का मामला है। फिर भी जाँच अभी जारी है। कुछ सवाल हैं जिनके जवाब अभी तक उन्हें नहीं मिले हैं। जैसे कि मीरा ने ज़हर घर आने से पहले लिया या घर आने के बाद? उनके कमरे से कोई भी ऐसी वस्तु नहीं मिली जिसमें डालकर मीरा ज़हर पी सकती थी। अगर ये आत्महत्या ही है तो उनके ऐसा करने के पीछे क्या कारण था? उनके फ़ोन से ऐसी कोई जानकारी नहीं मिली जिससे कहा जा सके कि उन्हें कोई परेशान कर रहा था। पिछले दो दिनों में जो भी बातें मीरा के बारे में पता चलीं उससे और मीरा के पूर्व मैनेजर का भी बयान इस बात की पुष्टि करता है कि मीरा का दिमाग़ी संतुलन ठीक नहीं था। हो सकता है फ़िल्मों से संन्यास लेने के बाद वह डिप्रेशन की शिकार हो गई हों और उसी के चलते उन्होंने ये क़दम उठा लिया हो। उनके पिताजी ने भी आत्महत्या की थी।

ये क्या बकवास कर रहे हैं! मैंने कोई आत्महत्या नहीं की। मैं ऐसा कर ही नहीं सकती। सारी ज़िंदगी मैं यही कहती आई हूँ कि आत्महत्या कायर लोगों का काम है। मैं आज तक अपने बाबा को इसके लिए माफ़ नहीं कर पाई। जिस काम से मुझे इतनी चिढ़ थी वह काम मैं ख़ुद क्यों करूँगी! ये बात ये लोग नहीं जानते न, इसीलिए ये बकवास कर रहे हैं। क्या पुलिस ने कभी कोई क्राइम थ्रिलर नहीं देखा! और ये तो ख़ुद ही पुलिस हैं। जो आसानी से साबित हो जाए वह सच नहीं होता। सबूतों की हेराफेरी भी तो हो सकती है। CID ही देख लिया होता तो आज छानबीन का परिणाम ही कुछ और होता। मैं कैसे आत्महत्या कर सकती हूँ! ये नामुमकिन है। और वह बेलेडोना मैंने नहीं, राज़ी ने ख़रीदा था मेरे क्रेडिट कार्ड से कुछ दिन पहले। उसे छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज घर में ही करना पसंद था। कई बार उसने मुझे भी सर्दी-ज़ुखाम होने पर काढ़ा बनाकर दिया है। क्या राज़ी ने मारा है मुझे? मगर वह ऐसा क्यों करेगी? नहीं ऐसा नहीं हो सकता। मैं ये नहीं कहती जो कभी नहीं हुआ वह कभी भी नहीं हो सकता। अब मैंने अपनी ज़िंदगी नये सिरे से बिना उसे मुश्किल बनाए शुरू करने का सोच ही लिया था न! और उस दिन मैं लैंप बुझाकर सोई थी। मैं लैंप बुझाकर सोई थी? ऐसे कैसे? मेरा सिर चकरा रहा है। मेरी कनपटियों में अचानक से बहुत दर्द होना शुरू हो गया है। एक मिनट... मुझे मेरी आँखों के आगे कुछ दृश्य तैरते हुए नज़र आ रहे हैं। मैंने वही ड्रेस पहनी है जो मैंने उस दिन मरने से पहले पहनी हुई थी। मुझे ठीक से कुछ याद क्यों नहीं आ रहा? या उस दिन कुछ ऐसा घटा था जो मैं याद नहीं करना चाहती। होता है न, कभी-कभी हम कुछ चीज़ों को भूल जाना चाहते हैं क्योंकि या तो वह बहुत दर्द पहुँचाने वाली होती है या हमारी सोच के बिलकुल प्रतिकूल। यह इंसानी फ़ितरत ही तो है, जिसका सामना करने से हम डरते हैं उसके आस-पास भी हम फटकना नहीं चाहते। मुझे याद करना होगा। मुझे मेरे ख़ुद के लिए याद करना होगा। दुनिया को सच पता चले-न-चले अब मुझे इसकी भी परवाह नहीं। मुझे मेरे अपने लिए अपने दिमाग़ पर ज़ोर डालना ही होगा। चाहे मेरा ख़ुद का दिमाग़ इसका प्रतिरोध करे। उस दिन मैं एक पार्टी से घर लौटी थी। पार्टी मेरी ड्रेस डिज़ाइनर के नया घर ख़रीदने की ख़ुशी में थी। वहाँ बहुत से लोग थे। विनय कुमार को मना करने के बाद, मुझे बहुत हल्का महसूस हो रहा था। उस दिन पार्टी में मेरा मन भी लग रहा था। फ़िल्में छोड़ने के बाद कुछ लोग मुझसे थोड़ा घुलने-

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

मिलने की कोशिश करने लगे थे। हमारा किसी ऊँची जगह पर होना हमारे और दुनिया के बीच एक दीवार खड़ी कर देता है, जिसे हम चाहकर भी गिरा नहीं पाते। ये मैंने फ़िल्में छोड़ने के बाद जाना।

मुझे याद है, एक वेटर ने सॉफ़्ट ड्रिंक दिया था। उस दिन मुझे उस ड्रिंक का स्वाद थोड़ा अजीब ज़रूर लगा था पर मैंने उस पर ज़्यादा ध्यान दिए बिना पी लिया था। उसके बाद से ही मेरा सिर भारी होने लगा था, जिसकी वजह से मैं पार्टी से घर की ओर निकल गई थी। ड्राइवर ने मुझे पार्किंग में छोड़ा। मैं लिफ़्ट से ऊपर गई। रानी ने दरवाज़ा खोला। मैं सीधे अपने कमरे में चली गई। मैंने कपड़े बदले। उन्हीं कपड़ों में मैं अब तक हूँ। उस वक़्त तक मेरे कमरे के लैंप जल रहे थे। मैंने घड़ी में देखा था, सुबह के चार बज रहे थे। मैं सोने ही जा रही थी कि राज़ी कोई काढ़ा लेकर आई। उसने कहा ये उसने आज ही बनाया है। ये मेरे मन को शांत करने में मेरी मदद करेगा। मैंने पीने से मना भी किया था, मगर उसने ज़बरदस्ती प्यार दिखाते हुए मुझे पिला दिया था। उसके बाद उसने एक और अजीब हरकत की थी। उसने मेरे माथे को बड़े ही प्यार से चूमा था। उस वक़्त तो मैंने इस बारे में ज़्यादा नहीं सोचा था पर हाँ, ये उसने इससे पहले कभी नहीं किया था। मुझे अपना सिर वैसे ही भारी लग रहा है, जैसे उस दिन लग रहा था। जैसे ही मैं सोने लगी उसने कहा आज कुछ बात की जाए।

मैंने पूछा, "अभी?"

"हाँ। इसके बाद मौक़ा नहीं मिलेगा।"

"क्यों? तुम कहीं जा रही हो?"

"मैं नहीं, तुम जा रही हो।"

"नहीं, मुझे कल कहीं नहीं जाना।"

"मैंने तुम्हें अभी-अभी ज़हर दिया है।" राज़ी ने यह बात इस तरह से कही जैसे कह रही हो कि आज मैं बहुत ख़ुश हूँ।

"ये कोई मज़ाक करने का वक़्त है राज़ी?"

मैंने उसकी बात पर चौंकते हुए कहा।

"तुम कुछ घंटों में मर जाओगी।"

"तुम मुझे क्यों मारोगी?"

अब तक मैं उसकी बात मज़ाक़ में ही ले रही थी।

"क्योंकि मैं तुमसे प्यार करती हूँ।"

"हाँ मुझे पता है। इसीलिए तो कह रही हूँ तुम मुझे क्यों मारोगी?"

"वैसा प्यार जैसा तुम संदीप से करती हो।"

"राज़ी!"

उसकी इस बात से सच में मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई थी।

"आज से नहीं दिल्ली से... इसी वजह से मैं तुम्हारे पास दिल्ली से मुंबई रहने आई थी।"

वह बोले जा रही थी और मैं हैरानी से उसे देखे जा रही थी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"मैं जानती थी, तुम मुझे कभी उस तरह से नहीं देखोगी। तब भी बस मैं तुम्हारे आस-पास रहना चाहती थी। प्यार में तुम्हें दूसरा भी चाहे, ऐसी कोई शर्त नहीं होती। मैं ख़ुश थी तुम्हारा घर सँभालकर, तुम्हारा ख़याल रखकर। मगर..."

उसे चुप देखकर मैंने पूछा, "मगर क्या?"

"मगर जब भी तुम किसी लड़के के साथ बाहर जाती तो मुझे बुरा लगता... जब तुम संदीप के साथ प्यार में पड़ गई तो मेरा मन किया मैं उसे मार दूँ। लेकिन वह सिर्फ़ मेरा कुछ देर का ग़ुस्सा था। मैंने तुम्हारी ख़ुशी के लिए तुम्हारा और संदीप का रिश्ता भी मान लिया था। पर जब तुमने उससे ब्रेकअप किया तो मैं बहुत ख़ुश हुई थी। हालाँकि मैंने ज़ाहिर नहीं होने दिया था। मैं उस दिन माता रानी के मंदिर भी गई थी।"

"जब तुम मुझसे इतना प्यार करती हो तो मुझे मारना क्यों चाहती हो?"

मुझे अब तक ज़हर देने वाली बात पर विश्वास नहीं हुआ था।

"तुम्हारा मर जाना ही सही है।"

"क्यों?"

"मरोगी नहीं तो ख़ुद को बर्बाद कर लोगी। और ये मैं नहीं देख सकती। दो दिन पहले कितना रोई थी तुम! अब तुम्हारा दर्द मुझसे देखा नहीं जाता।"

"मैं ख़ुद को बर्बाद क्यों करूँगी?"

"यही तो करती आई हो अब तक।"

"साफ़-साफ़ कहो राज़ी।"

"फ़िल्में छोड़ देना... संदीप को छोड़ देना... हर उस चीज़ से दूर हो जाना जो तुम्हारे क़रीब आकर तुम्हें ख़ुशी देने लगती है। और अब ये पॉलिटिक्स और शादी... ये ख़ुद को बर्बाद करना नहीं तो क्या है!"

"मेरी लाइफ़ है। मैं इसके साथ कुछ भी करूँ तुम्हें फ़र्क़ क्यों पड़ता है!"

"फ़र्क़ पड़ता है... प्यार करने वालों को पड़ता है। वो अपने प्यार को इस तरह ख़ुद को बर्बाद करता हुआ नहीं देख सकते। तुम्हारा यूँ घुट-घुट के जीना अब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता।"

ये सब कहते हुए राज़ी के चेहरे पर कोई शिकन नहीं थे, मगर उसकी आँखें भीगी हुई थीं। अचानक मेरा जी मिचलाने लगा। उल्टी हो जाएगी जैसे अभी। पूरे शरीर में जलन होने लगी। तब मुझे लगा उसने मुझे सचमुच में ज़हर दिया है। मैं तुरंत फ़ोन उठाकर एम्बुलेंस बुलाने लगी। उसने मुझसे फ़ोन छीन लिया और कहा, "पहले पूरी बात तो सुन लो। डोंट वरी... अभी मरने में टाइम है।"

मुझे अब उससे डर लग रहा था। मेरा शरीर भी कमज़ोर पड़ने लगा था।

"अब और क्या बाक़ी है?"

"कुछ ऐसा जो मरने से पहले तुम्हारी आख़िरी ख़ुशी होगी। पहले मैं तुम्हें कुछ नहीं बताना चाहती थी। फिर मुझे लगा तुम्हारे लिए ये जानना ज़रूरी है। तुम भी एक आख़िरी ख़ुशी तो डिज़र्व करती हो। और मैं तुमसे प्यार जो करती हूँ।"

मुझे उसके इस प्यार शब्द से चिढ़ होने लगी थी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

"कैसी ख़ुशी?"
"तुम्हारी बेटी।"
"मेरी बेटी?"
"वह ज़िंदा है। मैंने तुमसे झूठ बोला था। वह मरी नहीं।"
यह सुनकर एक पल के लिए मैं अपना सब दर्द भूल गई। फिर भी मुझे राज़ी की बात पर पूरी तरह विश्वास नहीं था।
"तुम झूठ बोल रही हो।"
"झूठ ही बोलना होता तो बताती ही क्यों!"
वह मेरे सामने पलंग पर ही बैठी थी। मेरे चेहरे पर सिर्फ़ दर्द था। मेरा मन हो रहा था कि मैं चिल्लाकर उसका कॉलर पकड़कर उससे पूछूँ कि उसने ऐसा क्यों किया? पर मैं उतनी ताक़त नहीं जुटा पाई। बस धीरे से इतना पूछा, "क्यों किया तुमने ऐसा? तुम जानती थी, मैं उसके आने का कितना इंतज़ार कर रही थी!"
"तुम किसी का इंतज़ार नहीं कर सकती। तुम किसी से प्यार नहीं करती। तुम स्वार्थी हो। एक दिन तुम उसे भी छोड़ देती। जैसे तुमने अपने काम को छोड़ दिया... संदीप को छोड़ दिया। तुम ज़िद्दी हो। तुम सिर्फ़ अपने बारे में सोचती हो। तुम्हें लगता है तुम जो सोचती हो वही सही है।"
"फिर क्यों करती हो तुम मुझसे अपना ये सो-कॉल्ड प्यार?"
बोलते-बोलते अचानक मेरी साँस उखड़ने लगी थी।
"इस पर किसी का कंट्रोल नहीं होता।"
"मैं जैसी हूँ, मैंने कभी किसी से नहीं छुपाया। जो किया अपने साथ किया। तुम्हें नहीं पसंद था तो मेरी ज़िंदगी से दूर चली जाती। मुझे मारने का हक़ तुम्हें किसने दिया?"
मैंने यह सब कहने में अपना पूरा दम लगा दिया था।
"प्यार में हक़ लिया नहीं जाता। समझा जाता है। और साथ ही अपनी ड्यूटी भी। तुम्हें और कुछ ग़लत करने से रोकना मैं अपनी ड्यूटी समझती हूँ। तुम उस राजनेता के हाथ मरो, इससे अच्छा है मैं ही तुम्हें मार दूँ। मदर इंडिया में भी नरगिस ने अपने बेटे को मार दिया था।"
मेरा शरीर और कमज़ोर पड़ने लगा था।
"मेरी बेटी अब कहाँ है?"
"संदीप के पास।"
संदीप का नाम सुनते ही मेरे होश उड़ गए थे। उसके इस कांड में किसी भी तरह शामिल होने की कल्पना तक मैं नहीं कर सकती थी।
"उसके पास, कैसे और क्यों?"
"ये उसी का आइडिया था।"
ये सुनकर मुझे लगा कि मैं मरने से पहले ही मर गई। तब राज़ी ने मुझे बताया कैसे संदीप ने हमारी बच्ची के होने से पहले उसे फ़ोन किया था और उसे मुझसे बच्ची दूर करने की

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

वजह समझाई थी। उसके बाद उन्होंने नर्स और डॉक्टर को कुछ पैसे खिलाकर अपने प्लान को अंजाम दिया था।

"नहीं, संदीप मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकता।"

"जब तुम उसे छोड़ सकती हो तो वह तुम्हारे साथ ऐसा क्यों नहीं कर सकता?"

"मैंने उसे कहा था, मैं उसे हमारे बच्चे से मिलने के लिए कभी नहीं रोकूँगी। फिर उसने ऐसा क्यों किया?"

ये कहते हुए मेरी आँखों से आँसू रुक ही नहीं रहे थे।

"तुम्हारे लिए।"

"मेरे लिए?"

"वह आज भी तुमसे बहुत प्यार करता है। उसे लगा इस बच्चे के सहारे वो तुम्हें वापस पा सकता है। बच्चे को उसके साथ क़रीब देखकर तुम बच्चे को उससे दूर नहीं करना चाहोगी और उसके पास वापस लौट जाओगी। बस वह सही वक़्त का इंतज़ार कर रहा था। पर तुम उस राजनेता के बेटे से शादी करने चली थी। ख़ुद को बर्बाद करने चली थी।"

मुझे एक पल को संदीप की इस बचकानी सोच पर हँसने का मन हो रहा था।

"क्या संदीप ये ज़हर वाली बात जानता है?"

"नहीं।"

मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं अब क्या कहूँ, क्या करूँ, क्या पूछूँ। मुझे भी कभी-कभी लगता था, मैंने संदीप के साथ ग़लत किया है। पर मैं हमेशा उसके साथ ईमानदार रही। जो संदीप ने किया, क्या वह सही था?

इन सब बातों से मेरे मन में एक ग़म-सा बैठ गया था। मुझे ऐसा लग रहा था कि संदीप और राज़ी को मैं आज तक थोड़ा भी नहीं जान पाई थी। तभी राज़ी मेरे चेहरे पर आया पसीना पोंछते हुए मेरा सिर सहलाने लगी।

"तुमने मुझे क्यों बताया कि तुमने मुझे ज़हर दिया है?" मैंने उसको अपना सिर सहलाने से रोकते हुए पूछा।

"ताकि तुम जान जाओ कि राज़ी तुमसे इतना प्यार करती है कि तुम्हें तुम्हीं से बचाने के लिए उसने तुम्हारी जान ले ली। और फ़िक्र मत करो मैं तुम्हें ख़ुद को बचाने का मौक़ा भी दूँगी।"

"तुम्हें ख़ुद ये बात कहते हुए ख़ुद पर हँसी नहीं आ रही? एक तरफ़ तुम मुझे ज़हर देती हो और दूसरी तरफ़ मुझे ख़ुद को बचाने का मौक़ा भी।"

मेरा सिर अब दर्द से फटा जा रहा था। मुझे दिखने भी धुँधला-सा लगा था।

"मैं तुम्हें तुमसे ज़्यादा जानती हूँ मीरा। बाहर से भले ही तुम बहुत स्ट्रॉन्ग नज़र आती हो मगर इमोशनली तुम बहुत कमज़ोर हो। इसीलिए तुम रिश्तों से, अपनी ख़ुशियों से दूर भागती हो। क्योंकि उन्हें खो देने का डर तुम्हे अंदर से कमज़ोर बनाता है। ये भी तुम्हारा एक कमज़ोर पल ही है। मेरा और संदीप का दिया हुआ इतना बड़ा झटका तुम इस वक़्त नहीं झेल सकती। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम ख़ुद को बचाने की कोशिश नहीं करोगी। और दूसरा, अगर तुम ख़ुद को बचा भी लेती हो, तब भी तुम मुझे इस हत्या के पाप से मुक्त

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

कर दोगी और शायद अपनी ज़िंदगी आम लोगों की तरह जीना भी शुरू कर दो जो मैं हमेशा से तुमसे उम्मीद रखती थी। और अगर नहीं बचाती हो तो भी तुम्हारी हत्या का पाप मेरे सिर नहीं आएगा क्योंकि तब ये एक आत्महत्या ही होगी।"

ये सुनकर मैं ख़ामोश हो गई। मेरा सिर भी चकरा रहा था। कमरे में चीज़ें घूमती हुई नज़र आ रही थीं। ऐसा लग रहा था जैसे एक गहरी खाई अँधेरे से भरी मुझे अपनी ओर खींच रही है। मेरी तरफ़ से जब उसे कोई जवाब नहीं मिला तो उसने कहा, "देखी है मैंने तुम्हारी बेटी। बिलकुल तुम्हारे जैसी है। आँखें तुम्हारी तरह ही आत्मविश्वास से भरी हुई हैं... फ़ोटो देखना चाहती हो उसकी?"

मेरा मन मचल उठा। मगर मैं चुप रही। राज़ी ने मेरे फ़ोन के साथ ही मेरी बेटी की फ़ोटो भी मेरे बग़ल में रख दी।

"तुम चाहो तो अब एम्बुलेंस बुला सकती हो। चाहो तो चिल्ला लो। अभी भी तुम बच सकती हो। बोलो तो मैं फ़ोन कर दूँ।"

"नहीं मुझे अब सोना है। लैंप बुझा दो।"

इंसान दुनिया भर से लड़ जाता है, मगर अपनों के आगे हमेशा हार जाता है। कितना ही ख़ुद को दूसरों से भावनात्मक रूप से जुड़ने से बचाते रहो मगर फिर भी कुछ लोगों के साथ हमारा ये रिश्ता बन ही जाता है। राज़ी और संदीप के साथ मेरा कुछ ऐसा ही रिश्ता था। मैं भले ही उनसे अपने रिश्ते को प्यार का नाम नहीं देती थी मगर जो भी उनके साथ था वह प्यार से कम भी नहीं था। यही दो लोग थे, जो इस पूरी दुनिया में कहने को मेरे अपने थे। और इन दोनों ने ही मेरे इस अपनेपन का ख़ून कर दिया।

"मीरा, हो सके तो मुझे माफ़ कर देना। ये करना मेरे लिए भी आसान नहीं था। अब इस घटना के साथ मुझे पूरी ज़िंदगी जीना पड़ेगा। But what needs to be done is to be done."

इसके बाद राज़ी ने ज़हर वाला गिलास उठाया और कमरे से बाहर चली गई। मैं ख़ुद को अपनी बेटी के लिए बचाना चाहती थी। मगर क्या सिर्फ़ अपनी बेटी के लिए जीकर मैं ख़ुश रह पाती? उस वक़्त मुझमें जीने की कोई इच्छा नहीं बची थी। मैं किसी दूसरे के लिए कभी अपनी ज़िंदगी नहीं जी सकती थी। फिर चाहे वह दूसरा मेरी बेटी ही क्यों न हो। इतनी क्षमता मुझ में थी ही नहीं। ख़ुद को ख़ुश रखे बिना मैं किसी और को ख़ुश नहीं रख सकती थी। क्या माँ का मुझ को अकेले छोड़ देना उनका एक तरह से अपनी ख़ुशियों को प्राथमिकता देना ही था?

कभी-कभी हार जाना ही हमें अपने लिए सबसे अच्छा विकल्प नज़र आता है। शायद बाबा को भी ऐसा ही लगा होगा। मुझे बस इस बात का सुकून था कि जीना है या मरना इसका चुनाव करने का हक़ कम-से-कम मुझे मिला। और फिर अपनी बेटी का चेहरा नज़रों में बसाए, मैंने अपनी आँखें बंद कर ली थीं।

मैं अपनी याद के इस हिस्से को कैसे भूल सकती हूँ! मैंने दुनिया भर की चीज़ें याद कर लीं मगर जिस सवाल का जवाब ढूँढ़ने के लिए मैं पिछले तीन दिनों से यहाँ अटकी हुई हूँ वही मुझे याद नहीं आई। ये सब याद आते ही मेरी सोच ने सोचना ही बंद कर दिया है। मैं

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

अपने इस अंत को अपनी ज़िंदगी से मिटा देना चाहती हूँ। ये हत्या थी या आत्महत्या? मेरे पास मौक़ा था। मैंने ख़ुद को क्यों नहीं बचाया? झटका चाहे बहुत बड़ा था मगर मैं इतनी कमज़ोर क्यों पड़ गई कि ख़ुद को मरने दिया? पूरी ज़िंदगी ज़िंदगी को मुश्किल बनाकर जिया और जब ख़ुद मुश्किल की घड़ी आई तो मैंने ख़ुद को हार जाने दिया। मैंने मरना ही क्यों चुना? राज़ी और संदीप को कैसे मैंने ख़ुद के ऊपर इतनी पावर दे दी कि वो मुझे इस तरह तोड़ सकें कि जिसके चलते मैं जीने कि इच्छा ही छोड़ दूँ? मेरा मन ज़ोर-ज़ोर से रोने को हो रहा है। पर मैं ऐसा करूँगी नहीं। क्योंकि मैं रोकर अच्छा महसूस नहीं करना चाहती। मैंने मरना चुनकर कायरों वाला काम किया है। क्या इस तरह से मरना मेरी सज़ा थी? पर सज़ा किस बात की? लोगों के साथ अपने रिश्तों को कोई नाम न देने की या उनको ख़ुद से दूर करने की? क्या वो जानते नहीं थे, वो किस चीज़ के लिए साइन अप कर रहे हैं? क्या मैंने कभी उनसे झूठे वादे किए? या उन्हें किसी तरह के भुलावे में रखा? क्या अपनी शर्तों पर जीना मेरा गुनाह था? क्या राज़ी का प्यार, प्यार था? क्या संदीप का प्यार सच्चा था? क्या प्यार उन्हें वो इजाज़त देता है जो उन्होंने मेरे साथ किया? क्या संदीप ने मुझसे मेरी बेटी छीनकर सही क्या? क्या राज़ी ने मुझे ज़हर देकर सही किया? क्या प्यार का मतलब ये नहीं होता कि जो जैसा है उसे उसकी ख़ूबियों और कमियों के साथ वैसा ही प्यार किया जाए? अपना नहीं सकते तो दूर चले जाओ। पर प्यार कब से तुम्हें मारने का हक़ देने लगा? प्यार किया जाता है। प्यार में लिया नहीं जाता। प्यार जिया जाता है। प्यार में जान नहीं ली जाती। क्या मेरा रिश्तों से दूर भागना संदीप का मेरी बेटी छीन लेने से ज़्यादा बड़ा गुनाह था? क्या मेरा ख़ुद को बर्बाद करना राज़ी के मुझे ज़हर देने से ज़्यादा संगीन जुर्म था? क्या मैं इस दुनिया के लिया इतना बड़ा ख़तरा बन गई थी कि मुझे इस दुनिया से निकाला दिया गया? इस दुनिया से सिर्फ़ सवाल मिलते हैं उनके जवाब नहीं। और इसीलिए मैंने ख़ुद को बचाने की कोशिश छोड़ दी थी। मुझे लगा था अब इस दुनिया में मेरे लिए कुछ नहीं बचा। मैं यह नहीं कहती कि मैंने जो किया सही किया। मुझे ख़ुद को बचाना चाहिए था। किसी और से ज़्यादा ख़ुद के लिए। पर मैं लोगों को जवाब देते-देते भी थक गई थी। उस वक़्त मेरा मन इस दुनिया से उचट गया था। मुझे लगा अगर अब मैंने ख़ुद को बचा लिया तो न मैं इस दुनिया को झेल पाऊँगी, न ये दुनिया मुझे।

हमारी मानसिक स्थिति का कोई स्थिर पैमाना नहीं होता। होने वाली घटना के पीछे के कारण ही उस पल की हमारी मानसिक स्थिति की तीव्रता को तय करते हैं। सारी ज़िंदगी मज़बूत बने रहने का मतलब यह नहीं कि हम कभी हालात के आगे हार नहीं सकते। हम अपने लिए पहले से चाहे कुछ भी तय कर लें मगर हमारा दिमाग़ वर्तमान में पैदा हुए हालात के हिसाब से ही अपना अगला क़दम उठाता है। यह सबक़ मुझे मरने के बाद जाते-जाते ज़िंदगी का आख़िरी तोहफ़ा था।

मुझे बस अब एक बात का अफ़सोस है कि मैं अपनी बेटी से मिल नहीं पाई। उसे छू नहीं पाई। वह मेरा एहसास कभी नहीं जान पाएगी। इस बात के लिए मैं संदीप और राज़ी को कभी माफ़ नहीं करूँगी। और शायद ख़ुद को भी। मैंने भी तो उसके लिए ख़ुद को बचाने की कोशिश नहीं की।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

आख़िरी ख़त

एंकर: मीरा के घर के स्टाफ़ से जब बात की गई तो उनकी घर की केयर टेकर राज़ी ने बताया कि मीरा उस रात बहुत शांत थी। सोने से पहले उन्होंने बस इतना कहा था, "मुझे सोना है, लैंप बुझा दो।" ये उनके आख़िरी शब्द थे। शायद तब तक मीरा ज़हर खा चुकी थीं और गहरी नींद में सोना चाहती थीं। राज़ी ने ये भी कहा कि मीरा हमेशा लैंप जलाकर सोती थीं। राज़ी मीरा को दिल्ली से जानती थी। तब तक मीरा ने अपना फ़िल्मी करियर शुरू भी नहीं किया था। राज़ी ने ये भी बताया कि वही थी जिन्होंने ने मीरा को उनकी पहली फ़िल्म में काम करने के लिए मनाया था। तब मीरा, मीरा नहीं मीठी सहगल हुआ करती थी। राज़ी अब तक विश्वास नहीं कर पा रही हैं कि मीरा ने अपनी जान ले ली है।

ज़िंदगी तो मेरी जैसी थी वैसी थी। मेरी मौत को भी इन लोगों ने झंड बना दिया है। पहले चोट पहुँचाओ फिर मौत पर शोक जताओ। पहले रिक्कू जी, फिर मेरी माँ और अब राज़ी। रानी और राजीव ने क्यों पुलिस को नहीं बताया कि वह आयुर्वेदिक नुस्ख़ों वाली किताब राज़ी की थी? राज़ी ने क्या कहकर उन्हें चुप करवा दिया? राज़ी ने जब वो काढ़ा बनाया होगा तो उन्होंने देखा तो होगा। और पुलिस ने भी विनय कुमार के वीडियो पर ये कहकर पर्दा डाल दिया कि उन्हें उसमें कुछ नहीं मिला।

एंकर: आज की एक और ब्रेकिंग न्यूज़।

मीरा जब तक ज़िंदा थीं तब तक वह किसी-न-किसी वजह से ख़बरों में बनी रहतीं। मीरा को आज तक कोई भी पूरी तरह नहीं जान पाया था। वह हमेशा अपनी किसी-न-किसी बात पर हम सबको हैरान कर देती थीं। आज भी जब वह इस दुनिया में नहीं हैं तब भी उनका एक ऐसा राज़ बाहर निकलकर आया है जिससे आज तक हम सब अनजान थे। मीरा और संदीप की एक बेटी भी थी जिसे मीरा ने उनके अलग हो जाने के बाद मुंबई से कहीं दूर जन्म दिया था। मीरा को बताया गया था कि उनकी बेटी मर चुकी है। मगर सच ये है कि मीरा की बेटी ज़िंदा है। अभी-अभी संदीप मित्तल जो मीरा के एक्स प्रेमी रह चुके हैं, उन्होंने मीडिया के साथ किए गए अपने लाइव में बताया कि उनकी और मीरा की बेटी ज़िंदा है जो उनके पास है। वह मीरा के लिए लिखा अपना आख़िरी ख़त दुनिया के सामने पढ़ना चाहते हैं जिसमें उन्होंने मीरा से कुछ कन्फ़ेशन किया है। आइए आपको इसका सीधा प्रसारण दिखाते हैं।

बस अब सिर्फ़ इसी की कसर बाक़ी रह गई थी। संदीप के साथ मेरी बेटी भी है। डेढ़ साल की होगी लगभग इस वक़्त। बिलकुल वैसी जैसी मैंने ख़यालों में इसकी तस्वीर बनाई थी।

डियर मीरा,

मीरा इसलिए बुलाया क्योंकि तुम्हें मीठी बुलाने का हक़ मैं खो चुका हूँ। पर क्या तुम जानती हो मैंने हमारी बेटी का नाम भी मीठी रखा है? तुम कहाँ चली गई मीरा, तुम क्यों चली गई मीरा, ऐसा क्या हो गया था जो तुमने अपनी जान ले ली? मैं कुछ ही दिनों में तुम्हारे पास आने वाला था। मैं तुम्हें बताने वाला था कि हमारी बेटी ज़िंदा है। तुमसे तुम्हारी

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

बेटी दूर करने के पीछे मेरा मक़सद बस इतना था कि हम तीनों हमेशा के लिए एक साथ हो सकें। मैं जानता हूँ कि अब ये कहने का कोई फ़ायदा नहीं है। मगर फिर भी मैं इस पूरी दुनिया के सामने तुमसे माफ़ी माँगना चाहता हूँ। क्योंकि हमने जिसके साथ ग़लत किया हो उससे कहीं ज़्यादा हम दुनिया से डरते हैं कि कहीं हमारी ग़लती का दुनिया को पता न चल जाए। हमें अपनी इज़्ज़त की ख़ुद से ज़्यादा परवाह होती है। इसीलिए मैं आज प्रायश्चित के तौर पर पूरी दुनिया के सामने कहना चाहता हूँ कि मैं तुम्हारा गुनाहगार हूँ। हमारे अलग होने के बाद मुझे हमेशा तुमसे शिकायत रही कि तुमने मुझे समझा नहीं। पर मैं भी तुम्हें कहाँ समझ पाया! जिस जुदा सोच की वजह से मैं तुमसे प्यार करता था उसी सोच के साथ मैं रह नहीं पाया। मैंने हमें अलग कर दिया। मैं ख़ुद को इस समाज से अलग नहीं देख पाया। मुझे माफ़ कर दो मीरा, हर उस दुख के लिए जो मैंने तुम्हें दिया। शायद तुमसे सामने से माफ़ी न माँग पाना ही मेरी सज़ा है। फिर भी दिल में कहीं उम्मीद है कि तुम कहीं खड़ी होकर मुझे सुन रही होगी। अगर तुम यहीं कहीं हो तो देखो हमारी बेटी को जिसे हम दोनों ने बनाया है। मैं वादा करता हूँ मीरा कि मैं मीठी की बहुत अच्छी परवरिश करूँगा। शायद तुमसे अच्छी नहीं, पर मैं पूरी कोशिश करूँगा, इसे तुम जैसा बनाने की। मैं इसे तुम्हारी हर फ़िल्म दिखाऊँगा, हर बात बताऊँगा। वह तुम्हें जानेगी मीरा ये मेरा तुमसे वादा है। तुम मुझे माफ़ करो-न-करो मगर हमारी बेटी पर हमेशा अपना हाथ रखे रखना। इसकी माँ सिर्फ़ तुम रहोगी। मैं कभी शादी नहीं करूँगा। मैंने सिर्फ़ तुमसे प्यार किया है और सारी ज़िंदगी करता रहूँगा। ये मेरी ख़ुशनसीबी थी कि मुझे तुम्हें जानने का मौक़ा मिला। थोड़ा ही सही तुम्हें क़रीब से पहचान पाया। तुम्हारी माफ़ी की उम्मीद में...

- संदीप

मुझे अब ये सब देखकर हँसी आ रही है। प्यार के नाम पर अपने प्यार को ही धोखा दे दिया और अब दिखा ऐसे रहे हैं कि जैसे ये सब कुछ इन दोनों ने मेरे भले के लिए किया था। जैसे कुछ लोग जो धर्म के व्यापारी बन बैठते हैं और भक्ति के नाम पर भक्तों को लूटा करते हैं। किसी का भला किस चीज़ में होता है? उसमें जो उसे लगता है उसके लिए ठीक है? या फिर उसमें जो दूसरे को लगता हो ये उसके लिए ठीक है? किसी दूसरे को क्या हक़ है कि किसी की भलाई के नाम पर उसकी जान ले ले? और भले ही संदीप और मेरी ज़िंदगी को लेकर दो अलग विचारधाराएँ थीं, मगर हम दोनों ने एक बहुत अच्छा वक़्त साथ में गुज़ारा था। उसी वक़्त की ख़ातिर मैंने उससे कहा था कि मैं उसे कभी हमारे बच्चे से मिलने से नहीं रोकूँगी। फिर भी उसने ऐसा क़दम उठाया? हमारे अलग होने में हम दोनों ही बराबर के ज़िम्मेदार थे। दोनों ही एक-दूसरे के लिए ख़ुद को बदल नहीं पा रहे थे। कमियों, ख़ूबियों और आदतों के साथ एक बार को फिर भी सामंजस्य बिठाया जा सकता है। मगर दो अलग विचारधारा रखने वाले लोग ज़्यादा दूर तक एक साथ चल नहीं पाते हैं। वे चाहें न चाहें टकराव हो ही जाता है। इसीलिए मैंने कभी उसके लिए अपने मन में कोई द्वेष नहीं रखा था। पर ये जो उसने किया उसके लिए मेरे मन में उसे देने के लिए कोई माफ़ी नहीं है। अब दुनिया के सामने चाहे कितना ही पश्चाताप कर ले लेकिन उसने ये जो गुनाह किया है, वह भुला देने वाला नहीं है।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

खैर, अब जिसको जो करना है करे। मुझे अब जाना चाहिए। बस एक बार और अपनी बेटी को जी भरकर निहार लूँ। काश! इसके स्पर्श को एक बार महसूस कर पाती। मगर यह भी सच है कि अगर हमारी सारी इच्छाएँ पूरी हो जातीं तो इच्छाओं का मोल ही क्या रह जाता! क़ीमत तो आख़िर उसी की होती है जिसे पाया नहीं जा सकता। पा लेने के बाद अक्सर हम वही करते हैं जो हमें उस चीज़ को खो देने के क़रीब ले जाता है।

शाम होने वाली है। आख़िरी बार डूबता हुआ सूरज देख लिया जाए। एक लड़कियों का ग्रुप बात करते हुए जा रहा है कि उन्हें भी संदीप के जैसा कोई प्यार करने वाला चाहिए। संदीप की बातों ने उनके दिल को छू लिया है। कुछ लोग मेरी आत्महत्या को लेकर हैरानी जता रहे हैं। एक कहता जा रहा है कि इन फ़िल्म वालों का कोई दीन-ईमान नहीं। कोई बात कर रहा है कि अपने नाजायज़ संबंधों और उससे होने वाली नाजायज़ औलाद का ऐसे प्रदर्शन कर रहे हैं जैसे कोई मेडल मिला हो। सोशल मीडिया पर जो हाल होगा, उसे सोचकर ही मुझे घबराहट हो रही है।

“यार, तूने देखा, मीरा का एक सेक्स वीडियो वायरल हो रहा है?”

“हाँ यार, जो भी कहो मीरा थी बहुत हॉट। वैसे कौन हो सकता है ये आदमी?”

“यार क्या पता? इन लोगों का तो ऐसे कितनों के साथ चलता रहता है। इस तरह के चार-पाँच वीडियो वायरल हो रहे हैं। क्या पता हर वीडियो में अलग आदमी हो?”

कुछ लड़के आपस में ये बातें कर रहे हैं। इसका मतलब विनय कुमार ने वह सारी फुटेज वायरल कर दी है। मेरे मरने के बाद भी मुझसे इतना ख़ौफ़? या फिर लोगों का ध्यान मेरी मौत के सच से भटकाने का यह एक तरीक़ा है?

पिछले तीन दिनों से ये चौपाटी मेरा घर बनी हुई थी। आज सही में विदा तो इसी से लेनी है। थोड़ी-सी निराश हूँ। यहाँ से जाने की वजह से नहीं, यहाँ से जिस तरह से जा रही हूँ उस वजह से। सूरज डूबने में कुछ वक़्त है। एक अख़बार का फटा हुआ टुकड़ा पड़ा है जिस पर मेरी तस्वीर है। किसी ने चने खाकर फेंक दिया होगा। इसी को ख़ाक में मिल जाना कहते हैं शायद। ये जवान लड़की कौन है जो मुझे देख रही है? ये मुझे कैसे देख सकती है? पर मुझे ऐसा क्यों लगा जैसे इसने मेरे अंदर तक झाँका है? ये इस अख़बार के टुकड़े को क्यों उठा रही है? इसके हाथों में वही घड़ी है जो मैंने उस छोटी मीरा को दी थी। मैं इस घड़ी को अच्छे से पहचानती हूँ। इसकी चेन पर अब तक गुलाबी रंग की नेलपेंट का निशान लगा हुआ है। क्या ये वही है? कोई इसे पीछे से मीरा कहकर बुला रहा है। इसने वह अख़बार का टुकड़ा तरीक़े से मोड़कर अपने कुर्ते के अंदर रख लिया। मुझे फिर ऐसा लगा जैसे ये मुझे देखकर दोबारा मुस्कुराई। अब ये आसमान की तरफ़ देख रही है। क्या ये मुझे ढूँढ़ रही है? मैं इसे आज इतने सालों बाद भी याद हूँ? ये सब सोचकर मेरे चेहरे पर भी मुस्कुराहट आ गई है। अब ऐसा लग रहा है जैसे मैंने इस मीरा को उसका नाम लौटा दिया है। एक आख़िरी क़र्ज़ भी उतार दिया।

इस मासूम मीरा के जैसे लोगों की वजह से ही शायद ये दुनिया अभी तक जीने लायक़ बची हुई है।

सूरज डूब गया है। अब मेरी तरफ़ से भी अलविदा!

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree

नोट्स

* बेलेडोना नाम की जड़ी-बूटी का प्रयोग प्राचीन समय से ही एक ज़हर के तौर पर अपने दुश्मनों को ख़त्म करने के लिए किया जाता रहा है। इसके ज़हरीले होने के कारण ही कई देशों की सरकारों ने इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगा रखा है। वैसे तो इसका इस्तेमाल दवा के रूप में भी होता था, मगर ज़रा-सी मात्रा इधर-उधर होते ही यह प्राणघातक हो जाता है। इस ज़हर के असर को कहानी में लिखते हुए कुछ हेर-फेर हो सकती है। चूँकि यह एक काल्पनिक कहानी है तो इस बात को नज़रअंदाज़ किया जा सकता है।

*'जुहू चौपाटी' लिखते हुए मैं कुछ किताबों से प्रेरित थी जिनके नाम हैं Elijabeth Gilbert द्वारा लिखित 'Eat Pray Love' और 'City Girls' और Taylor Jenkins Reid की 'The Seven Husband's Of Evelyn Hugo'. एक चीज़ है जो इन सब किताबों को एक-दूसरे से जोड़ती है; ये सब किताबें एक लड़की की पूरी जीवन यात्रा को लेकर लिखी गई हैं। हिंदी में सुरेंद्र वर्मा की 'मुझे चाँद चाहिए' को एक और उदाहरण माना जा सकता है। मैं भी एक ऐसी कहानी कहना चाहती थी जो उसके मुख्य किरदार की ज़िंदगी के सिर्फ़ एक हिस्से पर प्रकाश न डाले बल्कि उसके हर कोने को छूकर जाए। किताब पढ़ते हुए कहीं भी नीरस न हो जाए इसलिए इसे आत्मकथा के रूप में न लिखकर एक मर्डर मिस्ट्री की तरह लिखा गया। फिर समस्या आई कि इस कहानी को किसके नज़रिये से कहा जाए, क्योंकि मेरी नायिका तो कहानी के शुरू में ही मर जाती है। जो लोग साइंस फ़िक्शन देखते होंगे वो ज़रूर Astral Projection के बारे में जानते होंगे। जो नहीं जानते वो इसे कुछ इस तरह समझ सकते हैं कि आपकी आत्मा और चेतना का आपके शरीर से अलग भी एक अस्तित्व होता है और जो आपसे मुक्त रहकर भी पूरे ब्रह्मांड में कहीं भी यात्रा कर सकती है। बस इसी से मुझे आइडिया आया कि मेरी नायिका की आत्मा ही इस कहानी को अपने नज़रिये से सुनाएगी।

JOIN TELEGRAM GROUP @hindibookspdffree